प्रयागराज, रविवार 08 नवम्बर 2026 से 14 नवम्बर 2026 तक
वर्ष-13 , अंक-45
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार
हिन्दी साप्ताहिक

14th ANNIVERSARY

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

मस्क ने ट्रम्प की पार्टी की वाले पोस्ट हटाए,उनके प्रचार पर रु4400 करोड़ खर्च किए थे जिससे नेटवर्थ रु2 लाख करोड़ घटी

वॉशिंगटन डीसी। अरबपति इलॉन मस्क ने अमेरिकी मिडटर्म चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के समर्थन में किए गए सोशल मीडिया पोस्ट डिलीट कर दिए हैं। राष्ट्रपति ट्रम्प की रिपब्लिकन पार्टी को इन चुनावों में हार का सामना करना पड़ा है। मस्क ने चुनाव के दौरान रिपब्लिकन उम्मीदवारों के प्रचार पर कम से कम 458 मिलियन डॉलर यानी करीब 4400 करोड़ रुपए खर्च किए थे। चुनाव में पार्टी को मिली हार के बाद मस्क की संपत्ति में भी बड़ी गिरावट आई है। फाइनेंशियल टाइम्स के अनुमान के मुताबिक, उनकी नेटवर्थ करीब 2.8 लाख करोड़ रुपए घट गई है। हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स:- हाउस में कुल 435 सीटें हैं। सभी सीटों पर चुनाव हुए। विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी ने 253 और ट्रम्प की रिपब्लिकन पार्टी ने 157 सीटें जीती हैं। 25 सीटों पर अंतिम नतीजे आनी बाकी है। डेमोक्रेट्स को जरूरी बहुमत मिल चुका है। सीनेट:-सीनेट की 100 सीटों में से 35 पर चुनाव हुए हैं। अब तक 33 सीटों के नतीजे सामने आ चुके हैं। इनमें डेमोक्रेटिक पार्टी ने 20 और रिपब्लिकन पार्टी ने 13 सीटें जीती हैं। बची हुई 2 सीटों पर अंतिम नतीजे आना बाकी है। इन नतीजों को मिलाकर डेमोक्रेटिक पार्टी के पास 54 और रिपब्लिकन पार्टी के पास



44 सीटें हैं। गवर्नर चुनाव:-कुल 36 सीटों में से 34 राज्यों के नतीजे आ चुके हैं। 22 डेमोक्रेट्स और 12 रिपब्लिकन ने सीटें जीती हैं। 2 राज्यों में अंतिम नतीजे आना बाकी है। मिडटर्म चुनाव के नतीजों का कनाडा पर असर:- मिडटर्म चुनाव के नतीजों को कनाडा के लिए अच्छी खबर माना जा रहा है। डेमोक्रेट्स की जीत को अमेरिकी वोटरों की ट्रम्प के टैरिफ के खिलाफ नाराजगी के तौर पर देखा जा रहा है। कनाडा के ओंटारियो के प्रीमियर डग फोर्ड ने बुधवार को कहा, 'मैं खुशी से सड़कों पर उछल रहा था। यह कनाडा की जीत है।' हालांकि, चुनाव नतीजों से कनाडा को तुरंत टैरिफ से राहत मिलने की उम्मीद नहीं है। दोनों देशों के बीच व्यापार वार्ता फिर शुरू हो गई है। ऐसे में कनाडा को अमेरिका के साथ बेहतर समझौते की उम्मीद है। हालांकि, संसद के दोनों सदनों में डेमोक्रेट्स की मजबूत स्थिति का टैरिफ पर ज्यादा असर नहीं पड़ेगा। इसकी वजह है कि ट्रम्प ने ज्यादातर टैरिफ संसद की मंजूरी के बिना राष्ट्रपति के आदेश से लगाए हैं। संसद में बहुमत गंवाने के बाद भी ट्रम्प के पास कितनी ताकत? कानून रोक सकते हैं: ट्रम्प संसद से पास होने वाले किसी भी बिल पर वीटो लगा सकते हैं। डेमोक्रेट्स के पास फिलहाल इतने वोट नहीं हैं कि वे:- अपने फैसले लागू कर सकते हैं:- ट्रम्प सरकारी आदेश जारी कर सकते हैं, इमरजेंसी घोषित कर सकते हैं और सरकारी एजेंसियों को निर्देश दे सकते हैं। विदेश नीति पर भी उनके पास अधिकार रहेंगे। माफी देने का अधिकार रहेगा:- राष्ट्रपति के पास अपराधियों को माफी देने का अधिकार है। अगर ट्रम्प पद छोड़ने से पहले अपने सहयोगियों को माफी देते हैं, तो इस पर राजनीतिक विवाद हो सकता है। इससे पहले जो बाइडेन भी ऐसा कर चुके हैं। जज और अधिकारियों की नियुक्ति:- रिपब्लिकन बहुमत वाली संसद के पास अभी दो महीने हैं।

ईरान ने अमेरिका को 7 शर्तों वाला नया प्रस्ताव भेजा,कहा- ये पूरी हुई तभी बातचीत करेंगे

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका और ईरान के बीच जारी युद्ध खत्म कराने की कोशिशों के बीच ईरान ने अमेरिका को नया परमाणु प्रस्ताव भेजा है। यह प्रस्ताव कतर के जरिए अमेरिका तक पहुंचाया गया है। ईरान ने साफ कर दिया है कि वह अपनी 7 शर्तें पूरी होने के बाद ही परमाणु कार्यक्रम पर बातचीत शुरू करेगा और होर्मुज खोलेगा। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि अमेरिका इस प्रस्ताव की समीक्षा कर रहा है। हालांकि, उन्होंने प्रस्ताव में शामिल शर्तों के बारे में विस्तार से जानकारी नहीं दी। हालांकि अधिकारी ने नाम सार्वजनिक नहीं करने की शर्त पर यह जानकारी दी। ईरान की बातचीत के लिए 7 शर्तें:-1. अमेरिकी प्रतिबंध हटाए जाएं- ईरान चाहता है कि अमेरिका उस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंध खत्म करे। इन प्रतिबंधों की वजह से ईरान के लिए दूसरे देशों के साथ कारोबार करना और अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल बेचना मुश्किल होता है। 2. विदेशों में जमा पैसा लौटाया जाए-ईरान की मांग है कि दूसरे देशों के बैंकों में जमा उसकी रोकी गई संपत्ति वापस की जाए। अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण ईरान



की बड़ी रकम विदेशों में फंसी हुई है।3. युद्ध में हुए नुकसान का मुआवजा मिले-ईरान चाहता है कि अमेरिका युद्ध के दौरान उसके ठिकानों, बुनियादी ढांचे और दूसरी संपत्तियों को हुए नुकसान की भरपाई करे। इसके लिए मुआवजा देने की मांग भी उसकी शर्तों में शामिल बताई जा रही है। 4. अमेरिकी नौसैनिक नाकेबंदी खत्म हो-ईरान के बंदरगाहों और समुद्री कारोबार पर अमेरिका की ओर से लगाई गई रोक हटाई जाए। इस नाकेबंदी के कारण ईरान के लिए समुद्र के रास्ते सामान भेजना और मंगाना मुश्किल हो रहा है। 5. तेल बेचने की पूरी छूट मिले-ईरान चाहता है कि उसके तेल कारोबार पर लगी पाबंदियां हटाई जाएं। इससे वह अंतरराष्ट्रीय बाजार में दूसरे देशों को अपना तेल बेच सकेगा और उसकी कमाई बढ़ेगी। 6. ईरान और उसके सहयोगियों पर हमले बंद हों-ईरान की मांग है कि अमेरिका और इजरायल उसके साथ-साथ क्षेत्र में उसके सहयोगी संगठनों के खिलाफ भी सैन्य कार्रवाई बंद करें। वह चाहता है कि युद्ध का दायरा दूसरे देशों और संगठनों तक न बढ़े। 7. पश्चिम एशिया से अमेरिकी सेना की तैनाती घटे- ईरान चाहता है कि अमेरिका पश्चिम एशिया में अपनी सैन्य मौजूदगी कम करे। उसकी मांग है कि क्षेत्र में अमेरिकी सैन्य ठिकानों और सैनिकों की तैनाती घटाई जाए। परमाणु मुद्दे पर क्यों फंसी है बातचीत? अमेरिका और ईरान के बीच सबसे बड़ा विवाद परमाणु कार्यक्रम को लेकर है। अमेरिका चाहता है कि ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम पर बातचीत करे और यह सुनिश्चित करे कि वह परमाणु हथियार बनाने की दिशा में आगे नहीं बढ़ेगा। दूसरी ओर, ईरान का कहना है कि परमाणु मुद्दे पर बातचीत से पहले अमेरिका को उसके खिलाफ लगाए गए प्रतिबंध और दूसरी पाबंदियां हटानी होंगी। यानी दोनों देश बातचीत तो करना चाहते हैं, लेकिन शुरुआत कहां से हो, इस पर सहमत नहीं हैं। अमेरिका पहले परमाणु कार्यक्रम पर बात करना चाहता है, जबकि ईरान पहले आर्थिक और सैन्य पाबंदियां हटवाना चाहता है। कतर दोनों देशों के बीच मध्यस्थ बना:-अमेरिका और ईरान के बीच सीधे बातचीत के रास्ते बंद होने के कारण कतर जैसे देश मध्यस्थ की भूमिका निभा रहे हैं। इस बार भी ईरान ने अपना प्रस्ताव कतर के जरिए अमेरिका तक पहुंचाया है। कतर पहले भी दोनों देशों के बीच बातचीत कराने और तनाव कम करने की कोशिशों में शामिल रहा है।

चीन बांग्लादेश को 22 हजार करोड़ के फाइटर जेट देगा,पाक पायलट्स को उड़ाना सिखाएगा

ढाका। चीन अगले साल बांग्लादेश को करीब 22 हजार करोड़ रुपए के जे-सीरीज फाइटर जेट देगा। इन विमानों को उड़ाने की ट्रेनिंग पाकिस्तान की एयरफोर्स देगी। इसके



लिए पाकिस्तानी ट्रेनर भारत की सीमा से करीब 40 किलोमीटर दूर बांग्लादेश के जेस्सोर एयरबेस पर पायलट्स को प्रशिक्षण दे सकते हैं। पाकिस्तान की एयरफोर्स 2022 से चीन में बने जे-सीरीज फाइटर जेट उड़ा रही है। चीन के बाद पाकिस्तान के पास इन विमानों का सबसे बड़ा बेड़ा है। इसी वजह से उसके पास इन विमानों को उड़ाने का सबसे ज्यादा अनुभव भी है। ढाका में जॉइंट एक्सचेंज प्रोग्राम चलाएगा पाकिस्तान:-चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश की वायुसेना के अफसरों की दिसंबर में ढाका में बैठक भी होगी। ढाका में होने वाले जॉइंट एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत पाकिस्तानी एयरफोर्स बांग्लादेशी पायलट्स को ट्रेनिंग देगी। इसके अलावा रडार से दुश्मन के विमानों की पहचान और उन पर नजर रखने वाले कंट्रोलर्स को भी ट्रेनिंग दी जाएगी। ग्राउंड क्रू के लिए भी अलग कोर्स चलाए जाएंगे। पाकिस्तान के एयर वाइस मार्शल औरंगजेब अहमद के नेतृत्व में पांच सदस्यों की एक टीम ढाका पहुंच चुकी है। इस टीम ने वहां के एयरबेस और दूसरी जरूरी सुविधाओं का जायजा लिया। साथ ही तकनीकी ट्रेनिंग और सिम्युलेटर के लेन-देन की योजना भी तैयार की। बांग्लादेश के रडार से चीन को मदद मिल सकती है:-चीन की वायुसेना के साथ उसकी तकनीकी टीमें और डेटा लिंक सिस्टम भी काम करते हैं। ऐसे में आशंका है कि भविष्य में एलएसी पर भारत और चीन के बीच तनाव बढ़ने पर बांग्लादेश के रडार से मिलने वाली जानकारी चीन के सैन्य नेटवर्क तक पहुंच सकती है। चीन की सेना टैक्टिकल डेटा लिंक (टीडीएल) तकनीक का इस्तेमाल करती है। इसके जरिए फाइटर जेट और जमीन पर मौजूद सैन्य कमान एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। वे रडार से मिली तस्वीरें और दुश्मन के ठिकानों की जानकारी आपस में साझा कर सकते हैं। रक्षा विश्लेषकों के मुताबिक, चीन ने एक्सएस-3 नाम का हाई-बैंडविड्थ ब्रॉडबैंड लिंक भी तैयार किया है। इसका इस्तेमाल लड़ाकू विमानों, बमवर्षक विमानों और ड्रोन को एक नेटवर्क से जोड़ने के लिए किया जाता है। विश्लेषकों का मानना है कि पाकिस्तान के बाद अब बांग्लादेश भी चीन की इस तकनीक का इस्तेमाल कर सकता है। सिलीगुड़ी कॉरिडोर पर खतरा बढ़ सकता है:-भारत के लिए इस सैन्य सहयोग से जुड़ी एक बड़ी चिंता सिलीगुड़ी कॉरिडोर है।यह करीब 20 से 22 किलोमीटर चौड़ी पट्टी है, जो पूर्वोत्तर राज्यों को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ती है। इस इलाके पर पहले से चीन का दबाव है। बांग्लादेश के लालमोनिरहाट या कुर्मीटोला जैसे एयरबेस पर लंबी दूरी तक हमला करने वाले फाइटर जेट तैनात होने से यह पूरा इलाका उनकी पहुंच में आ सकता है। पूर्वोत्तर में उग्रवादी संगठनों को लेकर भी चिंता:-भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में कई उग्रवादी संगठन सक्रिय हैं।

अमेरिका में रिपब्लिकन का 50 साल में सबसे खराब प्रदर्शन,चुनाव के लिए रिकॉर्ड पैसा लगाया

वॉशिंगटन डीसी। रिपब्लिकन पार्टी के बड़े डेटा सलाहकारों में से एक टिम सेलर ने चुनाव के दो संभावित नतीजे बताए। पहला ये कि पार्टी के प्रचार के लिए जुटाए



गए 40 करोड़ डॉलर का फंड सही वोटर्स तक पहुंच रहा है और लोग वोट देने भी आ रहे हैं। दूसरा नतीजा पार्टी की करारी हार को लेकर था। पार्टी की चुनावी कमान संभाल रहे जेम्स ब्लेयर ने हंसते हुए कहा, "मैंने अपने अंतिम संस्कार की तैयारी शुरू कर दी है। मेरा सुझाव है कि आप सब भी ऐसा ही करें।" उनकी बात सुनकर बाकी लोग हंसने लगे। करीब 30 मिनट तक कॉल पर ऐसे ही निराशा भरे मजाक चलते रहे। इसमें जेल का खाना खाने, राष्ट्रपति से माफी मिलने और देश छोड़कर भागने की बातें भी हुईं। नेतन्याहू का जिक्र करते हुए ब्लेयर ने तंज में कहा, 'कम से कम बीबी जीत गए। वह हमारी रक्षा करेंगे।" इस पर फैब्रिजियो ने कहा, "हां शायद हमें इजराइल में शरण मिल सकती है। डेमोक्रेट्स ने रिपब्लिकन की 7 सीटें छीनीं:- एक साल पहले किसी को अंदाजा नहीं होगा कि रिपब्लिकन पार्टी की इतनी बड़ी हार होगी। पार्टी के पास चुनाव लड़ने के लिए रिकॉर्ड पैसा था। दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति इलॉन मस्क का साथ था। उन्होंने इस चुनाव में राष्ट्रपति चुनाव से भी ज्यादा पैसा लुटाया। सीनेट चुनाव में भी रिपब्लिकन पार्टी की स्थिति मजबूत थी। चुनावी समीकरण ऐसे थे कि डेमोक्रेट्स को उन राज्यों में मुकाबला करना पड़ रहा था, जहां वे दशकों से नहीं जीते थे। हाउस चुनाव में ट्रम्प ने अपना बहुमत बढ़ाने के लिए एक और दांव चला। अमेरिका में आमतौर पर हर 10 साल में चुनावी क्षेत्रों की सीमाएं बदली जाती हैं। लेकिन ट्रम्प की टीम ने इस परंपरा को तोड़ते हुए बीच दशक में ही सीमाएं बदलने की कोशिश की। मकसद था ऐसे नए चुनावी क्षेत्र बनाना, जहां रिपब्लिकन उम्मीदवारों की जीत आसान हो जाए। इन तमाम कोशिशों के बावजूद रिपब्लिकन पार्टी को हार का सामना करना पड़ा। इसे पिछले 50 साल में पार्टी की सबसे बड़ी चुनावी हार में से एक माना जा रहा है। इसकी तुलना 1974 के चुनाव से की जा रही है। उस समय वाटरगेट कांड के बाद रिपब्लिकन पार्टी ने प्रतिनिधि सभा की 48 और सीनेट की 4 सीटें गंवाई थी। इस बार रिपब्लिकन पार्टी ने सीनेट की 7 सीटें गंवाई हैं। चुनाव से पहले सीनेट में उसके 53 सदस्य थे, जो घटकर 44 रह गए हैं। (2 सीटों पर गिनती जारी है)। वहीं, हाउस में भी पार्टी को बड़ा नुकसान हुआ है।शुरुआती नतीजों में वह करीब 25 सीटें गंवाती दिख रही थी। हालांकि, खबर लिखे जाने तक 45 सीटों पर मतगणना जारी थी। ईरान के खिलाफ जंग शुरू कर ट्रम्प ने अपना ही वादा तोड़ा:-चुनाव के नतीजे आने से पहले ही ट्रम्प सोचने लगे थे कि अगर कुछ फैसले नहीं लिए गए होते तो क्या होता।

ट्रम्प के खिलाफ महाभियोग ला सकता हैं विपक्ष,सरकारी ताकत इस्तेमाल कर परिवार को अमीर बनाने का आरोप, एपस्टीन मामले की भी होगी जांच

वॉशिंगटन डीसी। मिडटर्म चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी की हार के बाद अब राष्ट्रपति ट्रम्प के



खिलाफ महाभियोग लाने की तैयारी शुरू हो गई है। इसके जरिए उन्हें पद से हटाया जा सकता है। न्यूज एजेंसी एपी के मुताबिक डेमोक्रेट्स आरोप लगा रहे हैं कि ट्रम्प ने अपने पद का इस्तेमाल कर अपने करीबियों को फायदा पहुंचाया और संपत्ति जुटाई। इससे आम लोगों को नुकसान उठाना पड़ा। डेमोक्रेटिक सांसद रॉबर्ट गार्सिया ने कहा है कि वे यह पता लगाएंगे राष्ट्रपति रहते हुए ट्रम्प और उनके परिवार की संपत्ति कैसे बढ़ी। उनका फोकस ट्रम्प के बेटों और दामाद जेरेड कुशनर के कारोबारी सौदों पर है। गार्सिया ने जांच के लिए पांच मुद्दे तय किए हैं। इनमें ट्रम्प परिवार के कारोबारी सौदे, जेफ्री एपस्टीन मामले की जांच में ट्रम्प प्रशासन की भूमिका और अमेरिकी इमिग्रेशन एजेंसी (आईसीई) की छापेमारी और कार्रवाई शामिल हैं।

इजराइल में आइजनकोट के पीएम बनने का रास्ता साफ,अरब पार्टियों ने समर्थन दिया

तेल अवीव। इजराइल में पूर्व सेना प्रमुख और विपक्षी नेता गादी आइजेनकोट के प्रधानमंत्री बनने का रास्ता लगभग साफ हो गया है।



राष्ट्रपति इसाक हर्जोग के साथ दो दिन की बातचीत के बाद 11 सांसदों वाली अरब पार्टियों की जाइंट लिस्ट ने उन्हें सरकार के बाहर से समर्थन दिया है। इससे उनके पास 67 सांसदों का समर्थन हासिल हो गया है, जो बहुमत से 6 ज्यादा है। वहीं, मौजूदा प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के समर्थन में अब सिर्फ 46 सांसद रह गए हैं। नेतन्याहू की पुरानी सहयोगी अति-रूढ़िवादी पार्टी यूनाइटेड टोरा जूडिज्म (यूटीजे) ने उनका समर्थन करने से इनकार कर दिया है। दरअसल, 27 अक्टूबर को हुए चुनाव में किसी भी गठबंधन को बहुमत नहीं मिला था। अरब पार्टियों के समर्थन से आइजेनकोट को सरकार बनाने का पहला मौका मिलने की संभावना मजबूत हुई है। जॉइंट लिस्ट गठबंधन को जानिए:- यह इजराइल की अरब आबादी के अधिकारों की बात करने वाला राजनीतिक गठबंधन है। इसमें तीन अलग-अलग पार्टियां शामिल हैं। गठबंधन में अरब नेताओं के साथ यहूदी नेता भी हैं। हदाश: वामपंथी पार्टी है। अरब और यहूदी नागरिकों की समानता, मजदूरों के अधिकारों और फिलिस्तीन के साथ शांति की वकालत करती है। ताल: अहमद तिबी की पार्टी है। अरब नागरिकों के समान अधिकार, शिक्षा और रोजगार के बेहतर अवसरों और फिलिस्तीनी राज्य की स्थापना का समर्थन करती है।

बलद: अरब राष्ट्रवादी विचारधारा वाली धर्मनिरपेक्ष पार्टी है। इजराइल को ऐसा देश बनाने की वकालत करती है, जहां सभी नागरिकों को समान अधिकार मिलें।नेतन्याहू को हटाने के लिए चार विपक्षी नेता एक साथ आए:-चुनाव के बाद 3 नवंबर को नेतन्याहू के विरोधी चार बड़े नेताओं ने हर्जलिया में बैठक की। इनमें गादी आइजेनकोट, नफ्ताली बेनेट, यायर लापिड और यायर गोलान शामिल थे। इन नेताओं ने नेतन्याहू को सत्ता से हटाने के लिए मिलकर काम करने और सरकार बनाने की बातचीत तुरंत शुरू करने पर सहमति जताई। बैठक में इन नेताओं ने राष्ट्रीय आपातकालीन सरकार बनाने का प्रस्ताव रखा। इसके लिए चार बुनियादी सिद्धांत तय किए गए। इजराइल यहूदी और लोकतांत्रिक देश बना रहेगा।

यूरोप में 15 विमानों को बम से उड़ाने की धमकी के बाद फ्रांस ने फाइटर जेट भेजे, इमरजेंसी लैंडिंग कराई,2 दिन में दूसरी धमकी

रोम। यूरोप में गुरुवार को 15 विमानों को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। इनमें फिनलैंड, इटली, फ्रांस, चेक गणराज्य और बुल्गारिया के विमान शामिल हैं। सुरक्षा एजेंसियों ने कई विमानों का रास्ता



बदलवाया, जबकि फ्रांस ने डबलिन से रोम जा रही फ्लाइट की सुरक्षा के लिए फाइटर जेट भेजे। विमान को फ्रांस के एवू सैन्य एयरबेस पर इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी। इसमें 151 यात्री और 6 क्रू मेंबर सवार थे। सभी सुरक्षित हैं। अब तक किसी भी विमान में विस्फोटक नहीं मिला है। इस हफ्ते यूरोप में विमानों को धमकियां मिलने की यह तीसरी बड़ी घटना है। इससे पहले मंगलवार को भी करीब 10 विमानों को ऐसी धमकियां मिली थीं। वहीं सोमवार को ब्रिटेन में भी करीब 7 फ्लाइट्स को धमकियां दी गई थीं। फिनलैंड से आने वाली फ्लाइट को फाइटर जेट ने सुरक्षा दी:-हेलसिंकी से रोम जा रही फिनएयर की फ्लाइट को भी बम की धमकी मिली। इसके बाद इतालवी फाइटर जेट की निगरानी में विमान को रोम पहुंचाया गया।एयरपोर्ट पर बम निरोधक एक्सपर्ट्स ने इसकी तलाशी ली। इस घटना के चलते रोम के लियोनार्डो दा विंची एयरपोर्ट पर 30 मिनट तक उड़ानें रोकनी पड़ीं।वहीं, हेलसिंकी से वियना जा रही जेटटाइम की एक फ्लाइट को भी धमकी मिली थी। हालांकि, विमान ऑस्ट्रिया की राजधानी में सामान्य रूप से उतर गया।वॉरसॉ, बुखारेस्ट और ब्रसेल्स जा रही फ्लाइट्स भी निशाने पर:-इटली के मिलान से पोलैंड की राजधानी वॉरसॉ जा रही विज एयर की फ्लाइट को बम की धमकी मिली। इसके बाद विमान को रास्ता बदलकर वियना में उतारा गया। बुखारेस्ट जा रही विज एयर की एक दूसरी फ्लाइट को भी धमकी मिली, लेकिन वह सुरक्षित उतर गई। पोलैंड की एयरलाइन एलओटी की वॉरसॉ से ब्रसेल्स जा रही फ्लाइट को भी सुरक्षा संबंधी चेतावनी मिली। ब्रसेल्स में उतरने के बाद विमान की जांच की गई, लेकिन उसमें कोई संदिग्ध सामान नहीं मिला:- बुल्गारिया और चेक गणराज्य की फ्लाइट्स को भी धमकी- बुल्गारिया की राजधानी सोफिया जा रही रयानएयर की तीन फ्लाइट्स को बम की धमकी मिली।

फ्रांस में सरकारी ब्लड बैंक का कूलिंग सिस्टम हैक,खून को 110डिग्री तक खौलाने की साजिश

इससे 1900 अस्पताल जुड़े; पहले 700 सुपर मार्केट हैक हुए

पेरिस। फ्रांस में हैकर्स ने 1 नवंबर की रात ब्लड बैंक के कोल्ड स्टोरेज सिस्टम पर हमला किया। हमलावरों ने फ्रीजर का तापमान



माइनस 30 डिग्री सेल्सियस से बढ़ाकर 110 डिग्री सेल्सियस तक करने की कोशिश की। हालांकि, अलार्म सिस्टम ने समय रहते गड़बड़ी पकड़ ली। इससे खून और प्लाज्मा के नमूनों को कोई नुकसान नहीं हुआ। फ्रांस के साप्ताहिक अखबार 'ले कनार आंचेने' ने बुधवार को सबसे पहले इस साइबर हमले की खबर दी थी। इसके बाद मामले का खुलासा हुआ। रिपोर्ट के मुताबिक ब्लड स्टोरेज सिस्टम में प्रवेश के लिए डिफॉल्ट पासवर्ड का इस्तेमाल किया गया था। प्लाजमा को सुरक्षित जगह भेजा गया:-फ्रांस के ब्लड बैंक का संचालन करने वाली संस्था फ्रेंच ब्लड एस्टैब्लिशमेंट (ईएफएस) के मुताबिक फ्रीजर में रखे प्लाज्मा को सुरक्षित दूसरी जगह भेज दिया गया है। ईएफएस ने बताया कि कोल्ड स्टोरेज में लगे निगरानी और अलार्म सिस्टम ने तापमान में असामान्य बदलाव को तुरंत पकड़ लिया। इससे कर्मचारियों को समय रहते कार्रवाई करने का मौका मिल गया। ईएफएस फ्रांस की सरकारी रक्त सेवा है। यह देश के 1,900 से ज्यादा अस्पतालों के लिए खून, प्लाज्मा और प्लेटलेट्स इकट्ठा करने, उनकी जांच करने, उन्हें तैयार करने और अस्पतालों तक पहुंचाने का काम करती है।इंटरनेट से जुड़े फ्रीजर कंट्रोल सिस्टम में सेंध लगाई:-फ्रीजर का तापमान नियंत्रित करने के लिए दुकानों और कोल्ड स्टोरेज सेंटर में खास इलेक्ट्रॉनिक कंट्रोलर लगे होते हैं। इनकी मदद से तापमान की निगरानी और उसे दूर से नियंत्रित किया जा सकता है। कुछ सिस्टम इंटरनेट से जुड़े होते हैं, ताकि उपकरण उपलब्ध कराने वाली कंपनी या तकनीकी कर्मचारी कहीं से भी उनकी जांच और मरम्मत कर सकें। फ्रांस की सरकारी साइबर सुरक्षा एजेंसी ऐंऊँ-ईं ने 12 अक्टूबर को ही रेफ्रिजरेशन कंट्रोलर पर हमलों को लेकर चेतावनी जारी की थी। एजेंसी के मुताबिक, इन उपकरणों के कई कंट्रोलर इंटरनेट पर सीधे उपलब्ध थे।

पीओके में पाकिस्तानी सेना की फायरिंग में 7 की मौत,प्रदर्शनकारियों पर हमला किया- मरने वालों में बच्चे भी शामिल

रावलकोट। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के रावलकोट में गुरुवार को प्रदर्शनकारियों पर पाकिस्तानी सुरक्षाबलों ने फायरिंग की है। इसमें कम से कम 7 लोगों की मौत



हो गई, जबकि 18 गंभीर रूप से घायल हो गए। मरने वालों में बच्चे भी शामिल हैं। यूनाइटेड कश्मीर पीपुल्स नेशनल पार्टी (यू.के.पी.एन.पी) ने आरोप लगाया कि सुरक्षाबलों ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे लोगों पर भारी मशीनगनों और ड्रोन से हमला किया। घटना को लेकर अभी तक पाकिस्तानी अधिकारियों का आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। तीन जगहों पर प्रदर्शनकारियों को निशाना बनाने का आरोप:- यू.के.पी.एन.पी के मुताबिक, पाकिस्तानी सुरक्षाबलों ने मटियालमेरा बस टर्मिनल, उमर फारूक चौक और रावलकोट की दूसरी जगहों पर चल रहे धरनों पर कार्रवाई की। पार्टी ने आरोप लगाया कि सुरक्षाबलों ने प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी के साथ ड्रोन से हमले भी किए। इस दौरान भारी मशीनगनों और बख्तरबंद गाड़ियों का इस्तेमाल किया गया। पीओके में 7 जून से अब तक 153 लोगों की मौत:- पीओके में 7 जून से शुरू हुआ विरोध प्रदर्शन लगातार बढ़ता जा रहा है। गुरुवार को 7 लोगों की मौत के बाद इस आंदोलन में जान गंवाने वालों की कुल संख्या 153 हो गई है।

आंदोलन की शुरुआत स्थानीय लोगों के राजनीतिक अधिकारों और आर्थिक समस्याओं को लेकर हुई थी।अब प्रदर्शनकारी पाकिस्तानी सुरक्षाबलों की वापसी और अपने नेताओं पर दर्ज मामलों को खत्म करने की मांग भी कर रहे हैं।आंदोलन की 4 बड़ी वजहें:- 1. विधानसभा की 12 आरक्षित सीटों का विवाद- पीओके विधानसभा में कुल 53 सीटें हैं। इनमें से 12 सीटें पाकिस्तान में रहने वाले कश्मीर मूल के लोगों के लिए आरक्षित हैं। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि इन सीटों के जरिए पाकिस्तान की सरकार पीओके की राजनीति में दखल देती है। उनका कहना है कि इन सीटों पर स्थानीय लोगों का प्रतिनिधित्व नहीं होता। 7 जून को पीओके के सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद यह विवाद और बढ़ गया। अदालत ने कहा था कि इन सीटों को संवैधानिक बदलाव के बिना खत्म नहीं किया जा सकता। 2. बिजली और मंगला डैम का मुद्दा:-पीओके के मंगला डैम से बड़ी मात्रा में बिजली बनाई जाती है, लेकिन स्थानीय लोगों का आरोप है कि उन्हें बिजली महंगे दामों पर मिलती है। प्रदर्शनकारी चाहते हैं कि डैम से बनने वाली बिजली स्थानीय लोगों को कम कीमत पर दी जाए।

प्रदेशीय महिला तैराकी एवं टेबल टेनिस प्रतियोगिता का भव्य समापन, लखनऊ मंडल ने टेबल टेनिस में मारी बाजी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला खेल कार्यालय, पं0 मोतीलाल नेहरू स्टेडियम, रायबरेली में 04 एवं 05 नवम्बर 2026 को



आयोजित दो दिवसीय प्रदेशीय महिला तैराकी एवं टेबल टेनिस प्रतियोगिता का गुरुवार को भव्य समापन हुआ। प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न मंडलों से आई महिला खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। तैराकी प्रतियोगिता में 09 मंडलों तथा टेबल टेनिस प्रतियोगिता में 10 मंडलों की टीमों ने अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का उद्घाटन उत्तर प्रदेश तैराकी संघ, लखनऊ के निदेशक राबिन कपूर द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका एवं पुलिस अधीक्षक रवि कुमार उपस्थित रहे। अतिथियों ने विजेता एवं उपविजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया तथा खेल के क्षेत्र में निरंतर मेहनत, अनुशासन और बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया। प्रथम तैराकी प्रतियोगिता के परिणामः- तैराकी प्रतियोगिता में विभिन्न स्पर्धाओं के अंतर्गत खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। 400 मीटर फ्री स्टाइल महिला वर्ग में मेरठ मंडल की आरोही राय ने प्रथम, वाराणसी की रिया पटेल ने द्वितीय तथा लखनऊ की अंशिका गुप्ता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक में वाराणसी की श्वेता साहनी प्रथम, गोरखपुर की अंजली चौहान द्वितीय तथा लखनऊ की इनाया कौशिक तृतीय स्थान पर रहीं। 100 मीटर बैक स्ट्रोक में लखनऊ की दिव्या चौहान ने प्रथम, बरेली की अनुश्री करमाकर ने द्वितीय तथा लखनऊ की अशिका यादव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 100 मीटर बटरफ्लाई महिला वर्ग में लखनऊ की परी तिवारी प्रथम, वाराणसी की गायत्री द्वितीय तथा लखनऊ की शिवी तिवारी तृतीय स्थान पर रहीं। 100 मीटर फ्री स्टाइल में मेरठ की अदित्री राय ने प्रथम, बरेली की रोजिल खान ने द्वितीय तथा लखनऊ की परी तिवारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 400×100 मीटर मिडले रिले महिला वर्ग में वाराणसी मंडल की टीम में अनुष्का, श्वेता, गायत्री व रिया पाटिल प्रथम, लखनऊ मंडल की टीम में दिव्या चौहान, इनाया, शिवी व परी द्वितीय तथा गोरखपुर मंडल की टीम में स्मृति तिवारी, अंजली चौहान, शीतल निषाद व अंजनी कनौजिया तृतीय स्थान पर रही। प्रतियोगिता के दूसरे दिन 200 मीटर फ्री स्टाइल में मेरठ की आरित्री राय प्रथम, वाराणसी की अनुष्का केसारी द्वितीय तथा वाराणसी की रिया पटेल तृतीय स्थान पर रहीं। 100 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक में लखनऊ की इनाया कौशिक प्रथम, लखनऊ की अंशिका यादव द्वितीय तथा वाराणसी की श्वेता साहनी तृतीय स्थान पर रहीं। 200 मीटर बैक स्ट्रोक में लखनऊ की दिव्या चौहान प्रथम, वाराणसी की अनुष्का केसारी द्वितीय तथा लखनऊ की शिवी तिवारी तृतीय स्थान पर रहीं। 200 मीटर इंडिविजुअल मेडले में मेरठ की आरोही राय प्रथम, वाराणसी की गार्गी द्वितीय तथा गोरखपुर की अंजली कनौजिया तृतीय स्थान पर रहीं।400×100 मीटर फ्री स्टाइल रिले महिला वर्ग में वाराणसी मंडल की टीम में अंकित चौहान, शीतल निषाद, काजल चौहान व दीपिका प्रथम, गोरखपुर मंडल की टीम में अनुष्का केसारी, रिया पटेल, श्वेता साहनी व गायत्री द्वितीय तथा लखनऊ मंडल की टीम में शिवी तिवारी, अंशिका गुप्ता, दिव्या चौहान व अंशिका चौहान तृतीय स्थान पर रही।प्रदेशीय महिला टेबल-टेबिल प्रतियोगिता 04 नवम्बर को प्रारम्भ हुई जिसमें पहला मैच चित्रकूट मण्डल एवं सरहानपुर के बीच खेल गया जिसमें चित्रकूट 03-01 से विजयी रहा। दूसरा मैच वाराणसी मण्डल एवं मेरठ मण्डल के मध्य खेला गया जिसमें वाराणसी 03-01 से विजयी रहा। क्वाटर फाइनल मैच प्रथम-लखनऊ बनाम सरहानपुर के मध्य हुआ जिसमें 03-01 से लखनऊ बिजेता दूसरा अयोध्या बनाम आगरा के मध्य हुआ जिसमें 03-0 से आगरा विजेता तीसरा प्रयागराज बनाम वाराणसी के मध्य हुआ जिसमें 03-0 से प्रयागराज विजेत चौथा कानपुर बनाम मिर्जापुर के मध्य हुआ जिसमें 03-0 से कानपुर विजेता। पहला सेमीफाइनल मैच लखनऊ बनाम आगरा मण्डल के मध्य हुआ जिसमें 03-0 से लखनऊ विजेता। दूसरा सेमीफाइनल मैच प्रयागराज बनाम कानपुर मण्डल के मध्य हुआ जिसमें 03-0 से प्रयागराज विजेता। फाइनल मैच 05 नवम्बर को लखनऊ मण्डल एवं प्रयागराज के मध्य खेला जायेगा। इसी प्रकार युगल वर्ग में लखनऊ प्रयागराज, आगरा, अयोध्या ने अपने प्रथम दौर के मैच जीत कर अगले दौर में प्रवेश किया। जिसमे कि आज खेले गये मैच का परिणाम इस प्रकार है। सेमीफाइनल मैच डबल्स में साक्षी/स्वास्ती लखनऊ बनाम विशाखा / वैष्णवी प्रयागराज के मध्य खेला गया जिसमें कि 03-01 के अन्तर से लखनऊ मण्डल ने जीत दर्ज की। इसी प्रकार दूसरा सेमीफाइनल मैच में वार्तिका /भार्गवी लखनऊ बनाम शालनी/आरना प्रयागराज के बीच खेल गया। जिसमें 03-0 से लखनऊ मण्डल ने जीत दर्ज की है। फाइनल मैच साक्षी/स्वस्ती लखनऊ मण्डल बनाम वर्तिका/भार्गवी लखनऊ मण्डल के मध्य खेला गया जिसमें वर्तिका/भार्गवी लखनऊ मण्डल ने 03-0 से जीत कर विजेता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। और तृतीय स्थान के लिए हुऐ मुकबले में विशाखा/वैष्णवी प्रयागराज ने शालनी/आरना प्रयागराज को 03-0 हराया। एकल वर्ग में श्वती चन्द्रा लखनऊ ने कडे मुकाबले में वर्तिका सिंह लखनऊ को 03-02 से हरकार विजेता रही। विशाखाराज प्रयागराज ने भागर्दी लखनऊ को 03-0 हरा कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। तैराकी प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में शिवम कपूर, राबिन कपूर, प्रदीप कुमार चौहान, नीरज मिश्रा, शिवानी दीक्षित, रामआसरे यादव, हिमांशु तिवारी, अभिषेक तिवारी, सुबोध मिश्रा एवं आकांक्षा मिश्रा ने दायित्व निभाया। टेबल टेनिस प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में साक्षी मौर्या, अर्पिता, पूर्वा, अंजली, अभिषेक सिंह, आन्या, पूजा यादव एवं आँचल सिंह ने अपनी भूमिका निभाई। इस अवसर पर राकेश कुमार, क्रीड़ाधिकारी बाराबंकी एवं निदान कर्ता अधिकारी खेल विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ लक्ष्मीकान्त शुक्ला, जिला ओर्लपिक संघ रायबरेली श्वेता वर्मा, मुन्ना लाल साहू, करन सिंह, डॉ. एस.एम. सिंह, राजीव अग्रवाल, अशोक कुमार, मो. इयाज, जे.पी. श्रीवास्तव, अजय चन्देल, मो. अनीस तथा राजेश सिंह सहित अनेक वरिष्ठ खिलाड़ी एवं खेल प्रेमी उपस्थित रहे।प्रतियोगिता का संपूर्ण संचालन क्रीड़ाधिकारी जिला खेल कार्यालय रायबरेली धीरेन्द्र कुमार पुरुषोत्तम द्वारा किया गया।

अंत में उन्होंने प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले सभी खिलाड़ियों, निर्णायकों, अतिथियों एवं दर्शकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

रबी सीजन 2026-27 में किसानों को 50फीसदी अनुदान पर उपलब्ध कराया जा रहा प्रमाणित एवं आधारीय बीज

चयनित किसानों को एसएमएस प्राप्त होने के बाद राजकीय कृषि बीज भण्डारों से बीज करें प्राप्त

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला कृषि अधिकारी अखिलेश पाण्डेय ने जनपद के कृषक बन्धुओं को सूचित किया है कि रबी सीजन 2026-27 के



अन्तर्गत जनपद के प्रत्येक विकास खण्ड में स्थापित राजकीय कृषि बीज भण्डारों पर सभी रबी फसलों के प्रमाणित एवं आधारीय बीजों की बुकिंग प्रक्रिया 10 जुलाई 2026 से प्रारम्भ की गई थी।

बुकिंग प्रक्रिया के उपरान्त चयनित किसानों को उनके पंजीकृत मोबाइल नम्बर पर एसएमएस के माध्यम से सूचना भेजी गई है। उन्होंने बताया कि जिन कृषकों को चयन सम्बन्धी एसएमएस प्राप्त हुआ है,

वे ही अपने सम्बन्धित राजकीय कृषि बीज भण्डार पर पहुंचकर बुकिंग में चयनित बीज क्रय करना सुनिश्चित करें।

बीज 50 प्रतिशत अग्रिम अनुदान पर उपलब्ध कराया जा रहा है। बीज का वितरण पीओएस मशीन के माध्यम से अनुदान की धनराशि घटाकर किया जा रहा है।

उन्होंने बताया है कि रबी बीजों की उपलब्धता एवं वितरण की स्थिति के अनुसार गेहूँ की 9478.50 कुंतल उपलब्धता के सापेक्ष 5907.86 कुंतल, जौ की 144.60 कुंतल उपलब्धता के सापेक्ष 32 कुंतल, चना की 149.04 कुंतल उपलब्धता के सापेक्ष 100.48 कुंतल,

मटर की 33 कुंतल उपलब्धता के सापेक्ष 33 कुंतल, मसूर की 21.76 कुंतल उपलब्धता के सापेक्ष 11.24 कुंतल,

राई/सरसों की 162.48 कुंतल उपलब्धता के सापेक्ष 101.15 कुंतल तथा तोरिया की 23.50 कुंतल उपलब्धता के सापेक्ष 23.50 कुंतल बीज है।

उन्होंने बताया कि जनपद के सभी विकास खण्डों में गेहूँ बीज की उपलब्धता एवं वितरण की व्यवस्था की गई है। गेहूँ बीज की उपलब्धता एवं वितरण की विकास खण्डवार स्थिति इस प्रकार है। अमावां में 674 कुंतल उपलब्धता के सापेक्ष 351 कुंतल, बछरावां में 220 के सापेक्ष 147.70 कुंतल, छतोह में 376.80 के सापेक्ष 300.52 कुंतल, डलमऊ में 394.40 के सापेक्ष 223 कुंतल, डीह में 616.70 के सापेक्ष 541.10 कुंतल, दीनशाह गौरा में 216.80 के सापेक्ष 203.80 कुंतल, हरचन्दपुर में 724.80 के सापेक्ष 401.80 कुंतल,

जगतपुर में 294.20 के सापेक्ष 197.20 कुंतल, खीरों में 200 के सापेक्ष 152.40 कुंतल, लालगंज में 545 के सापेक्ष 474.60 कुंतल, महराजगंज में 809.40 के सापेक्ष 659.89 कुंतल,

राही में 538.40 के सापेक्ष 401.20 कुंतल, रोहनियां में 135.20 के सापेक्ष 103 कुंतल, सलोन में 693.80 के सापेक्ष 443 कुंतल, सरेनी में 390 के सापेक्ष 294.40 कुंतल,

सतांव में 570 के सापेक्ष 416.80 कुंतल, शिवगढ़ में 310 के सापेक्ष 310 कुंतल तथा ऊंचाहार में 481 कुंतल उपलब्धता के सापेक्ष 286.65 कुंतल गेहूँ बीज है।

जिला कृषि अधिकारी ने बताया कि गेहूँ की अधिकतम उत्पादन देने वाली उन्नतशील प्रजातियों

डीबीडब्ल्यू-187, डीबीडब्ल्यू-222, डीबीडब्ल्यू-303, डीबीडब्ल्यू-327 एवं पीबीडब्ल्यू-343 का आवंटित स्रोतों से उठान कर राजकीय कृषि बीज भण्डारों पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

जिन किसानों को बीज वितरण किया जा रहा है, उनका चयन बुकिंग/ई-लॉटरी के माध्यम से पूर्व में ही किया जा चुका है। चयनित न होने वाले किसानों को अनुदानित बीज का वितरण अनुमन्य नहीं है।

उन्होंने बताया कि एक कृषक को अधिकतम 2.00 हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए अनुदानित बीज उपलब्ध कराया जा रहा है।

गेहूँ बीज का वितरण 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से किया जा रहा है तथा 40 किलोग्राम गेहूँ बीज एक एकड़ क्षेत्रफल की बुवाई के लिए पर्याप्त है।

सम्बन्धित बीज भण्डार प्रभारियों एवं क्षेत्रीय कर्मचारियों द्वारा कृषकों को उन्नतशील नवीन प्रजातियों के प्रमाणित एवं आधारीय बीजों का निर्धारित मानक से अधिक मात्रा

में प्रयोग न करने के सम्बन्ध में जागरूक करते हुए आवश्यक तकनीकी जानकारी भी दी जा रही है।

जिला कृषि अधिकारी ने जनपद के चयनित कृषक बन्धुओं से अपील की है कि एसएमएस प्राप्त होने के उपरान्त

अनावश्यक विलम्ब न करते हुए सम्बन्धित राजकीय कृषि बीज भण्डार से सम्पर्क स्थापित कर अपना चयनित बीज प्राप्त कर लें, जिससे आगामी रबी फसलों की बुवाई समय से सुनिश्चित की जा सके।

राष्ट्रीय ग्राम शिल्प महोत्सव में वैष्णवी क्लासेस के बच्चों ने पेश की शानदार प्रस्तुति

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रयागराज की पावन धरती पर आयोजित 'राष्ट्रीय ग्राम शिल्प महोत्सव' में वैष्णवी क्लासेस



एंड पीसीएस प्ले स्कूल के नन्हे-मुन्ने और प्रतिभावान बच्चों ने अपनी मनमोहक और शानदार प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया।

यह भव्य कार्यक्रम आदरणीय प्रभाकर तिवारी सर, वैष्णवी क्लासेस के डायरेक्टर विनीत सर, एमडी अखिल सर और सीईओ इंजीनियर अखिलेश यादव जी के कुशल मार्गदर्शन एवं गरिमामयी उपस्थिति में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। हम हृदय से धन्यवाद देना चाहते हैं दत्ता सर का, जिन्होंने इतने विशाल स्तर पर इस अद्भुत कार्यक्रम का आयोजन किया और हमारे बच्चों को अपनी कला व प्रतिभा प्रदर्शित करने का एक स्वर्णिम अवसर प्रदान किया।

दिवाली महोत्सवः- जे.एस.पी महाविद्यालय के छात्र - छात्राओं ने किया प्रतिभाग,चिफप्राक्टर डॉ रतन लाल सिंह के द्वारा विजयी प्रतिभागियों को किया गया सम्मानित

जे एस पी महाविद्यालय में हुआ आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। करमा ब्लॉक अंतर्गत जे एस पी महाविद्यालय कसया कला सोनभद्र में आज शुक्रवार को दिवाली महोत्सव का आयोजन किया गया रंगोली बना कर, रस्सी खींच व फेस आर्ट आदि प्रतियोगिताओं में।

बी ए व डी फार्मा व बी ए डी एल एड आई टी आई के छात्रों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। इस दौरान विजयी प्रतिभागियों को सम्मानित भी किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ प्रसन्न पटेल प्रबन्ध निदेशक उपप्रबन्ध ममता सिंह व विशिष्ट अतिथि संस्थापक बाबू पारस नाथ सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता चिफप्राक्टर डॉ रतन लाल सिंह जी ने किया।

कार्यक्रमों का सञ्चालन जी एम सिंह अधीक्षक इन्द्र प्रताप बीटीसी कॉलेज ने किया कार्यक्रम में सभी शिक्षण संस्थाओं के हेड उपस्थित रहे जयप्रकाश वर्मा कार्यालय अधीक्षक जे एस पी महाविद्यालय से पारस सिह कालेज ऑफ फार्मेसी से दशरथ जी अधीक्षक, इन्द्र प्रताप बिटीसी कालेज अधीक्षक गोवर्नमेंट सिह(जी एम सिह), सरदार वल्लभ भाई पटेल आई टी आई अधिक्षक विकाश मेहता, हंस एलएक्स पब्लिक स्कूल रंजना पाल, अंजली,छात्र छात्राए असिस्टेंट प्रोफेसर प्रदीप कुमार, असिस्टेंट प्रकाश, लेक्चरर सूरज पटेल आदि ने किया।

कार्यक्रम का उद्देश्य समस्त प्रतिभागी छात्र-छात्राओं के आत्मविश्वास को बढ़ाना व उनको उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर करना था।

सभी विजेता टीमों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सोनभद्र अपने छात्र छात्राओं को आगामी चुनौतियों के लिए तैयार करने

हेतु समय समय पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित करता रहता है जो कि छात्र छात्राओं को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करता है।

प्रतिभागीयो में प्रिंस कुमार पटेल, अनूप कुमार मौर्य, कुम कुम , उर्मिला श्वेता सांध्य , रंजना, दीपांजलि, अर्चना, हरिओम यादव,

अजय कुमार, प्रियंका मौर्या, सुनीता यादव, उमेश यादव, राजा राम, आनन्द कुमार, नितिन पटेल, धीरज कुमार मौर्य, नेहा प्रियंका मौर्य।

हिगिनबॉटम इंग्लिश मीडियम स्कूल, हर्रही प्रयागराज द्वारा विद्यालय के वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। हिगिनबॉटम इंग्लिश मीडियम स्कूल, हर्रही प्रयागराज द्वारा विद्यालय के वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता-2026 का आयोजन आज दिनांक 06.11.2026 को विद्यालय



परिसर में किया गया। कार्यक्रम में प्रो0 (डा0) रीतू प्रकाश दूबे, चेयरपर्सन, रूरल एजूकेशन कांउसिल, शुआट्स, प्रयागराज ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर अपने कर-कमलों द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने प्रतिभागी विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि हम अभी से अपने जीवन में खेलकूल को महत्व देगें तो भविष्य में हमारा शरीर स्वस्थ्य एवं निरोगी रहेगा और हम यदि किसी भी खेल को अपना लक्ष्य बनाते हैं तो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हमें अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर प्राप्त होगा जिससे हम अपने स्कूल, अपने परिवार एवं अपने देश का नाम विख्यात कर सकते हैं एवं आगे चलकर हमारा भविष्य भी उज्जवल होगा। खेलकूद को अपने जीवन में अपनाकर उसके माध्यम से देश सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है। रूरल एजूकेशन कांउसिल के निदेशक डा0 प्रवीन चरन भी उपस्थित थे उन्होनें भी बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए बताया कि अध्ययन के साथ-साथ खेलकूद का हमारे जीवन में बहुत महत्व है यदि हम निरन्तर खेलकूद करते रहेगें तो अधिकतम बीमारियों से बचे रहेगें एवं अपने शरीर का बेहतर ध्यान दे सकेगें तथा खेलकूद के माध्यम से अपने जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं। आज के आधुनिक दौड़ में मोबाइल, कम्प्यूटर आदि को खेलने से बचे तथा जो हमारे खेल एक साथ टोली बनाकर खेले जाते थे उससे आपस में प्रेम, मित्रता और एक-दूसरे को जानने और आपस में संवाद करने से ज्ञान का आदान-प्रदान भी होता था।

बच्चे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं एक दूसरे से बात करके एक दूसरे को समझते थे, जीवन में खेलों का बहुत महत्व है। पढ़ाई-लिखाई के साथ और उन्होनें कहा कि पूर्व राष्ट्रपति डा0 अब्दुल कलाम जी ने कहा कि बच्चों खुली हुई आँखों से सपना देखो जो कुछ बनना चाहते हो उसके लिए मेहनत करनी चाहिये चाहे खेल में हो या पढ़ाई हो तथा अपने देश की उन्नति में भी सहभागिता कर सकते हैं।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता-2026 के अवसर पर छात्रों द्वारा कबड्डी, खो-खो, लंगड़ी टांग, 100 मी0 दौड़, बैडमिंटन, बॉलीबॉल, रस्सी कूद, भाला फेंक आदि खेलों में अपनी-अपनी प्रतिभायें प्रदर्शित की गयी। कार्यक्रम में रूरल एजूकेशन कांउसिल के कॉर्डिनेटर बृजेश राजा एवं प्रधानाध्यापिका डा0 केलुंगजैटसाइले त्रिंग, उप-प्रधानाध्यापिका ग्रेस प्रकाश, सहायक शिक्षक अनीता मसीह, हेमा सिंह, प्रीति जमातिया, स्टेफिलिस लिहदोह, आइहुन एल. नोंगप्री, अनीशा रमन, अनूप लाल, अमित आदि उपस्थित थे।



बॉयज़ हाई स्कूल एंड कॉलेज ने 5 नवंबर मनाया 165वां संस्थापक दिवस

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रयागराज के प्रतिष्ठित बॉयज़ हाई स्कूल एंड कॉलेज ने 5 नवंबर 2026 को अपना 165वां स्थापना दिवस मनाया। प्रिंसिपल 'डेविड ल्यूक' के साथ विद्यालय परिवार ने इस खास अवसर पर संस्थान की गौरवशाली विरासत और उपलब्धियों का जश्न मनाया। वर्ष 1861 में स्थापित यह संस्थान 165 वर्षों से शिक्षा, अनुशासन और चरित्र निर्माण की परंपरा को आगे बढ़ा रहा है। विद्यालय से पास आउट तमाम परिष्कृत दिग्गजों ने देश के विभिन्न स्थानों पे अपनी अपनी कमान संभाल रखी हैं। पूर्व विद्यार्थियों ने भी अपने संस्थान के प्रति गर्व जताते हुए कहा कि BHS ने उन्हें शिक्षा के साथ व्यक्तित्व निखारने और जीवन में आगे बढ़ने की सीख दी है। उनको ध्येय रहता हैं:- **we have not just built a school, we have built generations. The legacy of knowledge, discipline and character continues,Once a BHSian, Always a BHSian!**

नोएडा लोक मंच ने पारंपरिक उत्साह एवं आपसी प्रेम के साथ मनाया दीपावली मिलन समारोह, विभिन्न सेवा प्रकल्पों और स्कूली बच्चों के बीच बांटी मिठाइयाँ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। दीपावली के शुभ अवसर पर आज नोएडा पब्लिक लाइब्रेरी, सेक्टर-15 में नोएडा लोक मंच की ओर से आत्मीय एवं पारंपरिक दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। काफी वर्षों के अंतराल के बाद इस तरह का पारंपरिक उत्सव पूरे उत्साह, उमंग और आपसी सौहार्द के साथ मनाया गया। इस अवसर पर नोएडा लोक मंच के जनरल सेक्रेटरी महेश सक्सेना, ट्रेजरर श्रीमती विभा बंसल, एग्जीक्यूटिव जनरल सेक्रेटरी विनीत गर्ग तथा मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा समिति की सचिव श्रीमती लीका सक्सेना उपस्थित रहीं। कार्यक्रम की विशेष बात यह रही कि श्रीमती लीका सक्सेना अपनी अस्वस्थता के बावजूद विशेष रूप से इस आयोजन में शामिल होने पहुंचीं। संगठन के प्रति उनका यह जुड़ाव और समर्पण सभी वेऱ लिए प्रेरणादायक रहा। समारोह के दौरान नोएडा पब्लिक लाइब्रेरी के सभी सहकर्मियों के साथ आत्मीय संवाद किया गया। आपसी सहयोग, टीम भावना और संगठन के प्रति समर्पण को लेकर विचार साझा किए गए। नोएडा लोक मंच की ओर से सभी सहकर्मियों को मिठाई एवं दीपावली का उपहार भेंट किया गया।इस अवसर पर दीपावली की खुशियों को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंचाने के उद्देश्य से नोएडा लोक मंच की टीम ने संस्था के विभिन्न सामाजिक सेवा प्रकल्पों का भी दौरा किया। संस्कार अध्ययन केंद्र, अंतिम निवास एवं दवा बैंक में पहुंचकर वहां उपस्थित लोगों वेऱ बीच मिठाइयों का वितरण किया गया।इसके अतिरिक्त सेक्टर-15 स्थित ज्ञानश्री स्कूल के लगभग 200 बच्चों के बीच भी मिठाइयां बांटी गईं। बच्चों के चेहरों पर खुशी और उत्साह ने दीपावली के इस आयोजन को और भी यादगार बना दिया। इस अवसर पर नोएडा लोक मंच के सदस्यों एवं टीम ने यह संकल्प लिया कि आने वाले समय में भी इसी उत्साह, प्रेम, आपसी सहयोग और सकारात्मक ऊर्जा वेऱ साथ समाजसेवा के कार्यों को आगे बढ़ाया जाएगा। संगठन का उद्देश्य केवल त्योहार मनाना नहीं, बल्कि खुशियों को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाना और मिलकर कुछ बेहतर करने की भावना को मजबूत करना है।



रोशनी के पर्व पर सेवा ही सच्ची पूजाः आरडब्ल्यूए सेक्टर 105 ने अपने अंचल के कर्मयोगियों के संग मनाई अनूठी दीपावली

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)नोएडा। नोएडा दीपावली केवल दीपों का ही नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने और हर चेहरे पर मुस्कान बिखेरने का पावन पर्व है। इसी भाव को चरितार्थ करते हुए आज आरडब्ल्यूए कार्यकारिणी समिति, सेक्टर 105 ने अपने क्षेत्र को संवारने वाले असल प्रहरियों–सफाई कर्मचारियों, सुरक्षा गार्डों, उद्यान विभाग, जल एवं सीवर विभाग के समर्पित कर्मियों के साथ दीपावली का पावन पर्व अत्यंत आत्मीयता के साथ मनाया। सेक्टर की सुख-शांति, स्वच्छता और सुचारू व्यवस्था के लिए निरंतर समर्पित इन कर्मयोगियों को जब दीपावली उपहार दिए गए, तो उपहार लेने वाले सभी कर्मियों के चेहरों पर जो असीम प्रसन्नता और संतुष्टि छलक उठी, उसने इस आयोजन को सचमुच अलौकिक बना दिया। ?इस हृदयस्पर्शी कार्यक्रम के दौरान आरडब्ल्यूए अध्यक्ष दिव्य कृष्णात्रेय ने भावुक शब्दों में कहा कि कड़ाके की ठंड हो या चिलचिलाती धूप, जो हाथ हमारे सेक्टर की सुरक्षा, स्वच्छता और जल एवं सीवर जैसी बुनियादी व्यवस्थाओं को संभालने के लिए दिन-रात एक कर देते हैं, उनके साथ खुशियां बांटना ही हमारा सबसे बड़ा धर्म और सौभाग्य है। उन्होंने कहा कि असली दीपावली तभी सार्थक होती है जब समाज के सबसे अंतिम पायदान पर खड़े मेहनतश इंसान के घर में भी उल्लास का दीप जले। ?कार्यक्रम में उपस्थित उपाध्यक्ष श्रीमती रानी गौतम ने कहा कि इन कर्मियों की निष्ठा और सेवाभाव के आगे कोई भी उपहार छोटा है, और इनके चेहरे की यह प्रसन्नता हमारे लिए किसी बड़े आशीर्वाद से कम नहीं है। महासचिव राजीव दुबलिश ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि आरडब्ल्यूए सेक्टर 105 परिवार इन सभी कर्मयोगियों को केवल कर्मचारी नहीं बल्कि अपने परिवार का अभिन्न हिस्सा मानता है। ?इस अवसर पर कोषाध्यक्ष श्री सुरेश बंसल जी और संयुक्त सचिव अनिल भदौरिया जी ने कहा कि इन मेहनतकश साथियों की बदौलत ही हमारा सेक्टर नोएडा में एक आदर्श आवासीय क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। कार्यकारिणी सदस्य उमेश माथुर, हरीश पाठीवाल और महेश चौहान जी ने भी सभी को दीपावली की बधाई देते हुए कहा कि सेवा और समर्पण का यह समन्वय हमारे शहर में एक अनूठी मिसाल कायम कर रहा है।

जब इन सेवाकर्मियों ने सम्मान और स्नेह के साथ उपहार स्वीकार किए, तो उनकी चमकती आंखें और मुस्कुराते चेहरे इस बात की गवाही दे रहे थे कि सच्चा पर्व वही है जहां अपनों के साथ-साथ हर जरूरतमंद और कर्मयोगी का जीवन भी रोशन हो सवेऱ। आरडब्ल्यूए सेक्टर 105 की इस संवेदनशील और मानवतावादी पहल ने पूरे नोएडा शहर में यह सशक्त संदेश दिया है कि यदि इंसानियत और कृतज्ञता के भाव से उत्सव मनाए जाएं, तो समाज का कोना-कोना प्रेम और प्रकाश से भर उठता है।





दहेज उत्पीड़न और मारपीट का आरोप,पीड़िता ज्योति,घर से निकालने की भी कही बात

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)प्रयागराज। जिले में दहेज उत्पीड़न और घरेलू हिंसा का एक मामला सामने आया है। पीड़िता ज्योति ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर अपने ससुराल पक्ष के लोगों पर गंभीर आरोप लगाए हैं। पीड़िता के अनुसार, उसकी शादी के बाद से ही ससुराल में उसे लगातार प्रताड़ित किया जा रहा है। उसके साथ आए दिन लड़ाई-झगड़ा और मारपीट की जाती है तथा दहेज के लिए दबाव बनाया जाता है। पीड़िता ने अपने शिकायती प्रार्थना पत्र में आरोप लगाया है कि ससुराल पक्ष के लोग उसे जान से मारने और घर से निकालने की धमकी देते हैं। उसे यह कहकर डराया जाता है कि यहां उसका कुछ नहीं है और वह घर छोड़कर चली जाए। ज्योति का आरोप है कि पारिवारिक विवाद के कारण उसे मायके जाना पड़ा। इसके बाद जब वह वापस लौटी तो उसके घर के ताले तोड़कर सामान के साथ छेड़छाड़ की गई और दूसरा ताला लगा दिया गया। पीड़िता ने यह भी आरोप लगाया है कि उसे लगातार धमकियां दी जा रही हैं और उसके साथ अभद्र व्यवहार किया जा रहा है।



पीड़िता ने पुलिस प्रशासन से पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराने, आरोपितों वेऱ खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई करने तथा अपनी सुरक्षा सुनिश्चित कराने की मांग की है। अब देखना होगा कि पुलिस इस शिकायत पर क्या कार्रवाई करती है।

नोटः समाचार में सभी आरोप पीड़िता द्वारा दिए गए शिकायती प्रार्थना पत्र पर आधारित हैं। आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि एवं पुलिस का पक्ष अभी उपलब्ध नहीं है।

अयोध्या धाम में रामलला के दर्शन कर भावविभोर हुए 15 रेलकर्मी,अयोध्या भ्रमण,धार्मिक यात्रा से मिली नई ऊर्जा और सुकून

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल ने रेलकर्मियों के कल्याण और उनके मानसिक एवं सामाजिक उत्थान की दिशा में एक सराहनीय पहल की है। मंडल रेल प्रबंधक श्री गौरव अग्रवाल के मार्गदर्शन एवं वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री राजेश कुमार गुप्ता के निर्देशन में कर्मचारी कल्याण निधि के अंतर्गत लखनऊ परिक्षेत्र के रेलकर्मियों के लिए अयोध्या भ्रमण शिविर का आयोजन किया गया। इस धार्मिक एवं सांस्कृतिक यात्रा में 51 रेलकर्मियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। भ्रमण के दौरान रेलकर्मियों ने अयोध्या धाम पहुंचकर भव्य श्रीराम मंदिर में प्रभु श्रीराम के दर्शन-पूजन किए। इसके बाद सभी ने हनुमानगढ़ी मंदिर में पहुंचकर बजरंगबली का आशीर्वाद प्राप्त किया। धार्मिक यात्रा के क्रम में प्रतिभागियों ने लता चौक तथा पवित्र सरयू नदी के तट पर स्थित रामघाट का भी भ्रमण किया। अयोध्या की आध्यात्मिक छटा, मंदिरों की भव्यता और सरयू तट के शांत वातावरण ने रेलकर्मियों को आध्यात्मिक आनंद के साथ आत्मिक शांति का अनुभव कराया। रोजमर्रा की व्यस्त ड्यूटी और कार्यस्थल की जिम्मेदारियों से इतर इस भ्रमण ने कर्मचारियों को आपसी मेलजोल और आनंद के यादगार पल भी दिए। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक गौरव अग्रवाल ने कहा कि इस भ्रमण शिविर का उद्देश्य रेलकर्मियों को देश की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने के साथ ही कार्यस्थल के तनाव को कम करना तथा आपसी सामाजिक जुड़ाव और टीम भावना को मजबूत करना है। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों के सर्वांगीण कल्याण के लिए इस तरह के आयोजन बेहद महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे कल्याणकारी कार्यक्रमों से कर्मचारियों में सकारात्मक ऊर्जा, आत्मविश्वास और आपसी सहयोग की भावना विकसित होती है। इससे उन्हें कार्यक्षेत्र में नई प्रेरणा और उत्साह वेऱ साथ अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में मदद मिलती है। इस आशय की जानकारी मंडल के जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु राव ने मीडिया को दी।



वार्षिक संगीत कार्यक्रम और पुरस्कार वितरण समापन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज । सेंट जॉन्स को-एड स्कूल में 4 और 5 नवंबर 2025 को आयोजित वार्षिक समारोह और पुरस्कार वितरण समारोह सफल प्रथम दिन बहुत ही रंगारंग पूर्ण ढंग से किया गया जिसमें प्रधानाचार्य महोदय ने सभी छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया और माता-पिता और अभिभावकों के सहयोग करने के लिए भी धन्यवाद ज्ञापित किया.यह कार्यक्रम हमारे छात्रों और कर्मचारियों की विविध प्रतिभाओं और कड़ी मेहनत का एक शानदार प्रदर्शन था,'कार्यक्रम का विषय, जैसे, धरती माता का संरक्षण' विषय पर आधारित यह समारोह एक शानदार सफलता थी, जिसमें छात्र, अभिभावक, शिक्षक और सम्मानित अतिथि एक साथ आए। शाम का मुख्य आकर्षण जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रम था, जिसमें मंत्रमुग्ध कर देने वाले शास्त्रीय नृत्य, ऊर्जावान समूह प्रदर्शन, भावपूर्ण संगीत प्रस्तुतियाँ और एक विचारोत्तेजक नाटक शामिल था, जिसने महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश दिए। इस कार्यक्रम में हमारे प्रधानाचार्य द्वारा वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुति और पूरे वर्ष शैक्षणिक और सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित करने के लिए एक पुरस्कार वितरण समारोह भी शामिल था। सजावट, प्रकाश व्यवस्था और समग्र व्यवस्था की सभी उपस्थित लोगों ने बहुत सराहना की।प्रधानाचार्य के द्वारा विद्यालय की मेधावी छात्रों को आर्थिक सहायता भी प्रदान की गई इस अवसर पर विद्यालय के विजेता हाउस की शील्ड ग्रीन हाउस को प्रदान किया इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों अभिभावकों और उनके माता-पिताओं का उत्साह देखने लायक था सभी ने विद्यालय के छात्रों द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा किया और विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा छात्रों को दिए गए आशीष और उनको छात्रवृत्ति वेऱ रूप में पारितोषिक देने पर बहुत प्रशंसा किया इस अवसर पर विद्यालय की तरफ से मीडिया प्रभारी को भी सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्री नर्सरी से 12वीं तक के छात्रों ने अपने नाटकों गानों और अपने नृत्य कला से सभी का मन मोह लिया। अभिभावकों ने भी लोगों को बताया कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में सेंट जॉन' को एड नैनी क्षेत्र में सर्वोत्तम है और वह विद्यार्थियों के हित के लिए कभी भी कोई समझौता नहीं करता है और उनके सर्वांगीण विकास के लिए सतत प्रयासरत हैं.छात्रों को मंच पर प्रदर्शन करने से आत्मविश्वास बढ़ता है और सभी छात्रों ने टीम वर्क कौशल दिखाया.स्कूल ने अपना वार्षिकोत्सव बड़े उत्साह और उल्लास वेऱ साथ मनाया। यह कार्यक्रम स्कूल के सभागार में आयोजित किया गया, जिसे रंग-बिरंगे बैनरों और गुब्बारों से खूबसूरती से सजाया गया था। विभिन्न कक्षाओं के छात्रों ने नृत्य, नाटक और संगीत जैसे विविध कार्यक्रमों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया. इसमें मीडिया जगत के डेटा एक्सपर्ट न्यूज़ के मुख्य संवाददाता अजय गुप्ता. सुधांशु शर्मा को सम्मानित किया गया। प्रिंसिपल - रयान इनिस मुख्य अतिथि-अनुपम लाल, रॉबिन डिसूज़ा, श्रीमती जीन इनिस, रोजर रेबिएरो, संदेश, टायरिल जेम्स स्टाफ- श्रीमती रत्ना गुप्ता, श्रीमती डीओन रेबेरो, श्रीमती एमबीजोहरी, श्रीमती बैशाखी, श्रीमती नलिनी शुक्ला, श्रीमती माया शर्मा, अजय नायक, अनवर खान, आनंद द्विवेदी, हिमांशु, नवीन, कुशवाहा, श्रीमती सोनिका अमित रॉय, श्री शहबाज़, राकेश,श्रीमती मर्सी रॉबिन, सुधांशु शर्मा श्रीकांत शाह. अजय गुप्ता., आनंद द्विवेदी. हिमांशु. रमेश चौबे. अमित. संजय सिंह.राहुल कुशवाहा. हज़ारी लाल।





ट्यूनीशिया से अयोध्या तक प्रयागराज की लोकसंस्कृति का परचम लहराएंगी सुप्रिया सिंह रावत

प्रधानमंत्री भी कर चुके हैं देढ़िया लोकनृत्य की सराहना,अंतरराष्ट्रीय मंच पर बढ़ाया प्रयागराज का गौरव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। संगम नगरी प्रयागराज की समृद्ध लोकसंस्कृति और भारतीय पारंपरिक विरासत को (सर्वप्रथम ट्यूनीशिया स्थित भारतीय दूतावास में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में देढ़िया लोकनृत्य की शानदार प्रस्तुति देकर भारतीय लोकपरंपरा का प्रतिनिधित्व किया था। इससे पहले उनके नेतृत्व में प्रस्तुत देढ़िया लोकनृत्य को राष्ट्रीय स्तर पर भी विशेष पहचान मिली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर इस लोकनृत्य की प्रस्तुति से संबंधित तस्वीर अपने आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल पर साझा कर इसकी सराहना की थी।अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी कला का प्रदर्शन करने के साथ ही सुप्रिया सिंह रावत ने अयोध्या, काशी और मथुरा जैसे देश के प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्रों में कलाकारों को लोकनृत्य का प्रशिक्षण देकर भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन में भी योगदान दिया है। अब अध्यात्म की नगरी अयोध्या में आयोजित होने वाले भव्य दीपोत्सव में अपनी प्रस्तुति के माध्यम से वह भारतीय सांस्कृतिक विरासत की छटा बिखेरने के साथ ही प्रयागराज की कला और परंपरा का गौरव बढ़ाने की तैयारी में हैं। सुप्रिया की यह सांस्कृतिक यात्रा इस बात का उदाहरण है कि स्थानीय लोककलाएं और परंपराएं उचित मंच मिलने पर वैश्विक पहचान बना सकती हैं। प्रयागराज की धरती से निकलकर अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुंची उनकी यह उपलब्धि न केवल शहर की सांस्कृतिक विरासत को गौरवान्वित करती है, बल्कि नई पीढ़ी को अपनी लोककलाओं से जुड़ने की प्रेरणा भी देती है।



)अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने की दिशा में सुप्रिया सिंह रावत लगातार अपनी कला के माध्यम से योगदान दे रही हैं। अल्लापुर निवासी सुप्रिया सिंह रावत एक प्रतिष्ठित लोकनृत्य कलाकार हैं, जिन्होंने देढ़िया लोकनृत्य के माध्यम से प्रयागराज की सांस्कृतिक पहचान को देश-विदेश तक पहुंचाया है। वर्ष 2023 में उन्होंने



नीमा के सौजन्य से धन्वंतरि दिवस का भव्य आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर 51 में नीमा नोएडा (नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसियेशन) के द्वार धन्वन्तरि दिवस का आयोजन बड़ी ही धूमधाम से किया गया । पुराण के अनुसार समुद्र मंथन से भगवान धन्वंतरि जी का अवतरण हुआ था जिस कारण धनतेरस को मनाया जाता है, भगवान धन्वंतरि जी देवताओं के चिकित्सक थे, इस दिन को विशेष रूप से सभी चिकित्सक धन्वंतरि दिवस के उपलक्ष्य में धूमधाम से मानते हैं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि नोएडा के भाजपा जिलाध्यक्ष महेश चौहान ,मीडिया क्लब के अध्यक्ष आलोक द्विवेदी ,शहरी मोर्चा के अध्यक्ष डॉ प्रसनजीत मैत्रा, नीमा नोएडा के अध्यक्ष मुकेश शर्मा, संरक्षक डॉ बी पी सिंह, डॉ मुकेश गुप्ता ,डॉ सुनीता चौधरी, डॉ प्रशांत, डॉ कपिल त्यागी, डॉ वंदना ,डॉ अक्षय चौहान डॉ भोज राज सिंह ,डॉ स्नेह लता, डॉ अशोक सिंह ,डॉ रमेश छाबड़ा ,डॉ हेमलता सोनी , समस्त नीमा नोएडा के सदस्य गण व मुलतानी फार्मा के सभी सदस्य वहा उपस्थित रहे।



फर्स्टवन रिहैब फाउंडेशन में दिवाली मेले के साथ मनाया गया ऑक्यूपेशनल थेरेपी डे

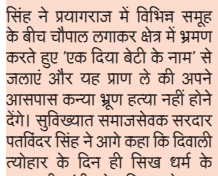
(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। फर्स्टवन रिहैब फाउंडेशन में दिवाली मेले एवं ऑक्यूपेशनल थेरेपी डे का उत्साहपूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य दिव्यांग बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करना और उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तराखंड हथकरघा एवं हस्तशिल्प विकास परिषद के उपाध्यक्ष श्री वीरेंद्र दत्त सेमवाल रहे। उन्होंने बच्चों के साथ समय बिताया और उनकी प्रतिभा एवं मेहनत की सराहना की। इस अवसर पर बच्चों ने सुंदर दीये, मोमबत्तियां और दिवाली तोरण बनाए। बच्चों एवं अभिभावकों के लिए रंगोली प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। फाउंडेशन की प्रबंध निदेशक डॉ. दीक्षा श्रीवास्तव ने ऑक्यूपेशनल थेरेपी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह बच्चों में दैनिक जीवन के कौशल, आत्मनिर्भरता और कार्यक्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कार्यक्रम में एमिटी विश्वविद्यालय के ऑक्यूपेशनल थेरेपी विभाग के छात्र भी उपस्थित रहे। यह आयोजन बच्चों की प्रतिभा, रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने का एक सार्थक प्रयास रहा।



सिखों के छठवें गुरू हरगोविंद साहिब जी ने 52 कलियां का कुरता सिलवाया तो 52 हिंदू राजा कैद से मुक्त हुए

'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाया जाता है

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज/ सुविख्यात समाज सेवक व भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र,क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सरदार पतविंदर सिंह ने प्रयागराज में विभिन्न समूह के बीच चौपाल लगाकर क्षेत्र में भ्रमण करते हुए 'एक दिया बेटी के नाम' से जलाएं और यह प्राण ले की अपने आसपास कन्या भ्रूण हत्या नहीं होने देंगे। सुविख्यात समाजसेवक सरदार पतविंदर सिंह ने आगे कहा कि दिवाली त्योहार के दिन ही सिख धर्म के अनुयायी 'बंदी छोड़ दिवस' के नाम से त्यौहार मनाते हैं। इस त्यौहार को मनाने के पीछे का इतिहास बड़ा रोचक है। दीपावली हिंदू और सिख भाईचारे का सांझा त्यौहार है। सिख धर्म में दीपावली के पर्व को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस दिवाली के अवसर पर सिख धर्म में 'बंदी छोड़ दिवस'का महत्व क्या है और इसे धूमधाम से मनाया जाता है। परमजीत सिंह बग्गा ने कहा कि इतिहासकारों के मुताबिक मुगलों ने जब मध्य प्रदेश के ग्वालियर के किले को अपने कब्जे में लिया तो इसे जेल में तबदील कर दिया। इस किले में मुगल सल्तनत के लिए खतरा माने जाने वाले लोगों को कैद करके रखा जाता था। बादशाह जहांगीर ने यहां 52 हिन्दु राजाओं को कैद कर रखा था सिख धर्म के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए बादशाह जहांगीर ने सिखों के छठवें गुरू हरगोविंद साहिब जी को बंदी बना लिया। उसने गुरू हरगोविंद साहिब जी को ग्वालियर के किले में कैद कर दिया। लेकिन संयोग से जब जहांगीर ने गुरू हरगोविंद साहिब जी को कैद किया,वह बहुत बीमार पड़ गया। काफी इलाज के बाद भी वह ठीक नहीं हो रहा था। तब बादशाह के काजी ने उसे सलाह दिया कि वह इसलिए बीमार पड़ गया है क्योंकि उसने एक सच्चे गुरु को कैद कर लिया है।अगर वह स्वस्थ होना चाहता है तो उसे गुरु हरगोविंद सिंह को तुरंत छोड़ देना चाहिए। कहते हैं कि अपने काजी की सलाह पर काम करते हुए जहांगीर ने तुरंत गुरु को छोड़ने का आदेश जारी कर दिया। लेकिन गुरु हरगोविंद सिंह जी ने अकेले रिहा होने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि वे जेल से बाहर तभी जायेंगे जब उनके साथ कैद सभी 52 हिन्दू राजाओं को भी रिहा किया जायेगा। गुरू जी का हठ देखते हुए उसे सभी राजाओं को छोड़ने का आदेश जारी करना पड़ा। लेकिन यह आदेश जारी करते समय भी जहांगीर ने एक शर्त रख दी। उसकी शर्त थी कि कैद से गुरू जी के साथ सिर्फ वही राजा बाहर जा सकेंगे जो सीधे गुरू जी का कोई स्पर्श या कपड़ा पकड़े हुए होंगे। उसकी सोच थी कि एक साथ ज्यादा राजा गुरू जी को छू नहीं पायेंगे और इस तरह बहुत से राजा उसकी कैद में ही रह जायेंगे। जहांगीर की चालाकी देखते हुए गुरू जी ने एक विशेष कुरता सिलवाया जिसमें 52 कलियां बनी हुई थीं। इस तरह एक-एक कली को पकड़े हुए सभी 52 राजा जहांगीर की कैद से आजाद हो गये। इसी घटना की याद में 'वहां गुरुद्वारा बनाया गया जिसे 'गुरुद्वारा दाता बंदी छोड़ साहिब' नाम दिया गया। सिख धर्म में दीपावली के पर्व पर तब से ही 'बंदी छोड़ दिवस' मनाया जाता है।जहांगीर की कैद से आज़ाद होने के बाद जब गुरू हरगोविंद सिंह जी वापस अमृतसर पहुंचे तब पूरे अमृतसर में दीप जलाकर गुरू जी का स्वागत किया गया। गुरु इतिहास को बताने वालों में सरदार पतविंदर सिंह,परमजीत सिंह बग्गा,कुलदीप सिंह खालसा, मनु चावला,जसविंदर सिंह जग्गी, कमल सिंह,हरमनजी सिंह सहित कई सामाजिक,राजनीतिक, साहित्यकार उपस्थित रहे।



भारत की कहानी का अहम हिस्सा बन चुके हैं ये खिलाड़ी

नागोया में एशियाई पैरा-गेम्स सम्पन्न हुए अब दस दिन होने को आए हैं। इनमें 30 स्वर्ण पदकों सहित कुल 114 मेडल जीतकर भारत ने अब तक का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था। यह



प्रदर्शन हमारे सामने कई सवाल भी खड़े करता है। क्या यह पैरा-गेम्स को मुख्यधारा में लाने और पैरा-खिलाड़ियों के साथ होने वाले भेदभाव के मुद्दे को उठाने का अवसर है? क्या इस सकारात्मक माहौल को बनाए रखा जा सकता है और यदि हां, तो कैसे? भारत और न्यूजीलैंड के बीच वनडे सीरीज शुरू हो चुकी है और देश एक बार फिर क्रिकेट की ओर लौट चुका है। तब क्या ये खिलाड़ी हाशिए पर धकेल दिए जाएंगे? क्या हम विभिन्न खेलों को समान रूप से सैलिब्रेट कर सकते हैं? 2023 में हांगझोउ में भारत ने 303 एथलीटों की टीम भेजी और 108 मेडल जीते थे। इनमें 29 गोल्ड थे। जबकि नागोया में भारत ने महज 167 एथलीट भेजे और फिर भी 30 गोल्ड सहित 114 पदक जीत लिए। स्पष्टतः यह बढ़ोतरी असाधारण और चौंकाने वाली है। कम से कम लॉस एंजेलेस में 2028 के पैरालिम्पिक गेम्स में दुनिया के शीर्ष 15 देशों में जगह बनाने का सपना अब काफी हद तक साकार होता दिख रहा है। इन खिलाड़ियों की कहानियां देखें तो समझ आ जाएगा कि क्यों इनकी उपलब्धियों का जश्न जोर-शोर से मनाया जाना चाहिए। प्रदीप कुमार का उदाहरण लीजिए। 2003-04 में उनकी शादी हुई थी। वे पत्नी के साथ गांव में थे। तभी उन्होंने देखा कि कुछ बदमाश गांव की दो महिलाओं से यौन दुर्व्यवहार कर रहे थे। उन्होंने विरोध किया तो उन पर तीन गोलियां दाग दी गईं। तब से वे व्हीलचेयर पर रहने को मजबूर हैं। शुरुआती 10 वर्षों तक वे लोगों के उपहास या सहानुभूति के पात्र बने रहे। 2015 में उन्होंने पहली बार टीवी पर व्हीलचेयर-रग्बी देखी और पैरा-स्पोर्ट्स के बारे में जाना। इसी ने उन्हें इस खेल के लिए प्रेरित किया और आज वे एशियन पैरा-गेम्स के सिल्वर मेडलिस्ट हैं। नागोया में राइफल शूटर मोना अग्रवाल भारत की ध्वजवाहक थीं।

उन्होंने दो गोल्ड मेडल जीते, एक विश्व रिकॉर्ड और कई एशियन रिकॉर्ड बनाए। उनकी कहानी भी बेहद प्रेरणादायक है। मोना ने 2021 से पहले कभी राइफल उठाई तक नहीं थी।

उनके पति को जब एक न्यूरोलॉजिकल बीमारी का पता चला, तब जाकर उन्होंने परिवार के गुजारे के लिए खेलों में कुछ करने का फैसला किया। उन्होंने बताया कि 'मुझे परिवार के लिए कुछ करना था।

मेरे पति भी पैरा-एथलीट थे, लेकिन बीमारी के कारण वे खेल जारी नहीं रख सके। ससुराल वाले मेरे दो छोटे बच्चों की देखभाल करते हैं। परिवार की सारी पूंजी मेरे पति की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों पर ही खर्च हो जाती है।' इसका मतलब है कि उनके पास अपने कौशल में निखार लाने के लिए पैसे नहीं थे।

अगर वे खेल में आगे बढ़ना चाहतीं तो उन्हें यह सब अपने दम पर करना था। उन्होंने बताया कि 'मैंने उधार लेकर जरूरी उपकरण खरीदे। मुझे पता था यह बहुत बड़ा जोखिम है, लेकिन मैंने ठान लिया था कि इसे सार्थक बनाऊंगी और एंजेलेस-2028 के लिए क्वालिफाई करने वाली पहली भारतीय शूटर बनने से लेकर नागोया में गोल्ड मेडल जीतने तक, उनकी यात्रा शानदार रही है। ये एथलीट भारत की एक बड़ी आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन अब तक वंचित ही रहे हैं। उन्हें हमारी सहानुभूति की जरूरत नहीं है। इसके बजाय हमें उनके प्रति संवेदनशीलता और सम्मान का भाव रखना चाहिए। उन्हें ऐसे खिलाड़ियों के रूप में सम्मानित करना चाहिए, जिन्होंने देश का गौरव बढ़ाया है। नागोया ने एक मंच दिया है। भारत स्पष्टतः एक बड़े बदलाव की दहलीज पर खड़ा है। हमें सुनिश्चित करना होगा कि यह उत्साह बरकरार रहे। ऐसा नहीं हो सकता कि भारत निरंतर महज एक खेल वाला देश ही बना रहे। आप जब विराट और रोहित की उपलब्धियों का जश्न मनाएं तो साथ ही प्रदीप और मोना का भी सम्मान करें। वे भी भारत की कहानी का उतना ही अहम हिस्सा हैं, जितने कि क्रिकेटर। ऐसा नहीं हो सकता कि भारत निरंतर महज एक खेल वाला देश ही बना रहे। आप जब विराट और रोहित की उपलब्धियों का जश्न मनाएं तो साथ ही प्रदीप और मोना का भी सम्मान करें। वे भी भारत की कहानी का उतना ही अहम हिस्सा हैं, जितने कि हमारे क्रिकेटर। (ये लेखक के अपने विचार हैं,बोरिया मजुमदार)

दीया भारतीय संस्कृति की अहमियत बरकरार रखे हुए है

मेरी यादों में एक तस्वीर कभी धुंधली नहीं पड़ी। मेरी मां एक-एक करके वॉक-वे के किनारे दीये सजा रही थीं। रंगोली के बीच में एक बड़ा दीया रखा था। धीरे-धीरे ढलता सूरज अंधेरे को राह दे रहा



था। सांझ होते ही मां ने दीये जलाने शुरू किए। मां के चेहरे के एक हिस्से पर हल्की रोशनी पड़ रही थी, जिससे उनकी आधी बिंदी, हल्की मुस्कान और चेहरे पर छाई खुशी साफ दिख रही थी। उनके अभी-अभी धुले बालों की कुछ लटें माथे और कानों के बीच बिखरी हुई थीं। मैं चुपचाप उन्हें निहारता हुआ लगभग खो गया था। उन्होंने देखा और पूछा कि 'क्या देख रहे हो?' मैंने कहा, 'आप बिल्कुल मां महालक्ष्मी जैसी लग रही हैं। बहुत सुंदर। आप मुझे मंदिर में विराजमान देवी की याद दिला रही हैं।' वे उठकर आईं और मेरे माथे को चूम लिया। वे मेरी मां थीं। आज भी मैं अपनी बहन, पत्नी या बेटी को दीपावली के लिए दीये सजाते और जलाते देखता हूं तो वही दृश्य जीवंत हो उठता है। चेहरे बदल गए, लेकिन भावनाएं वही हैं। शायद यही वह सबसे खूबसूरत रोशनी है, जो दीपावली हमारी जिंदगी में छोड़ जाती है। वर्ष 1800 में भारतीय घरों में पूरे दिवाली वीक की शामों की कल्पना कीजिए। कोई परिजन मिट्टी के छोटे दीयों में सावधानी से तेल भर रहा है। रुई की बाती बनाकर किनारे पर रख मिट्टी से बनाता और भट्?टी में पकाता है। लेकिन इसमें कुछ जादुई है, जिसे न बिजली चाहिए, न रिमोट और न ही कोई फैंसी स्विच। उस परिवार के लिए दीया समृद्धि, उम्मीद और खुशी का प्रतीक है। अब 2026 में आइए। दीया अब काफी बदल गया है। इसे हाथी, मोर, शंख या कमल के आकार में बना सकते हैं। इसमें कई बातियां और तेल की अलग जगह हो सकती है। यह 24 या 100 घंटे तक भी जल सकता है। कुछ कारीगरों ने ऐसे दीये बनाए, जो पानी डालने पर चमकते हैं। कुछ कारीगर अलग-अलग सामग्री, रंगों और डिजाइनों के प्रयोग से उस पीढ़ी को आकर्षित कर रहे हैं, जो परंपरा के साथ आधुनिकता का टच चाहती है। दीये ने लंबा सफर तय किया है, लेकिन इसकी यात्रा अभी खत्म नहीं हुई है। दिलचस्प यह है कि 19वीं सदी में भी दीया हमेशा मिट्टी का साधारण बाउल नहीं होता था। म्यूजियमों में उस दौर के खूबसूरती से बनाए गए ब्रास के दीये हैं। 1870 से 1900 के बीच का एक ब्रास का दीपालक्ष्मी लैंप ऐसी चतुराई-भरी व्यवस्था से बनाया गया था, जिसमें खुद ऑइल रिजर्वायर का काम करती थी। आज भारतीय कारीगर दीया री-इन्वेंट कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ के कोंडागांव का एक कुम्हार हाथी के आकार का ऐसा दीया बनाता है, जो 100 घंटे से ज्यादा जलता है। बेलगावी के कुम्हारों ने 24 घंटे जलने वाले दीये बनाए हैं। लखनऊ माटी कला उत्सव में इब्रार अहमद ने वाटर-एक्टिवेटेड दिया बनाया। कारीगर बांस, कोकोनट शेल, रेत, ब्रास और गोबर से भी दीये बना रहे हैं।

दिल्ली में छात्रों ने पेंट की बेकार बाल्टियों से सोलर लैंप तक बनाए हैं, जो साबित करता है कि परंपरा और इनोवेशन साथ चमक सकते हैं। हमारे कारीगरों का मकसद सीधा है- पारंपरिक शिल्प छोड़े बिना कुछ नया बनाना। फंडा यह है कि आज भले ही पारंपरिक दीया हमारे कमरे रोशन न करता हो, लेकिन यह हमारे त्योहारों, प्रार्थनाओं और फैमिली सेलिब्रेशंस को रोशन कर रहा है। इससे मन में बयां न हो सकने वाली खुशी पैदा होती है। इसकी अहमियत अगली पीढ़ी को भी बताएं। एन. रघुरामन

महज 12 महीनों में ट्रम्प ने जीत को हार में कैसे बदला?

ज्यादा पुरानी बात नहीं है। महज 12 महीने पहले तक ट्रम्प अपने महत्वाकांक्षी और लोकप्रिय एजेंडों को लागू करने की मजबूत स्थिति में दिखाई दे रहे थे। उस समय ट्रम्प एक ऐसे देश का नेतृत्व



कर रहे थे, जो शांति की स्थिति में था और जिसकी अर्थव्यवस्था लगातार बढ़ रही थी। उन्होंने उस कथित 'डीप स्टेट' की कमर तोड़ दी थी, जिसने उनके पहले कार्यकाल में उनकी ट्रेड और इमिग्रेशन नीतियों के क्रियान्वयन में बाधाएं खड़ी की थीं। उन्होंने यूएसएड का सफाया कर दिया था, क्योंकि उन्हें लगता था कि यह विदेशों में डेमोक्रेटिक पार्टी के एजेंडे को आगे बढ़ाता है। उनके न्याय विभाग ने उन नागरिक-अधिकार कार्यकर्ताओं को निष्प्रभावी कर दिया था, जो उनका विरोध कर रहे थे। यहां तक कि उन्होंने अमेरिका के सांस्कृतिक कुलीनों- खासकर सिलिकॉन वैली के बीच भी पैठ बना ली थी, जहां लोग एक नए 'वाइब-शिफ्ट' की चर्चा करने लगे थे। यह सच है कि इस प्रक्रिया में ट्रम्प ने देश के भीतर अपने विरोधियों और विदेशों में अपने सहयोगियों- दोनों को ही नाराज किया था। टैरिफ को लेकर उनकी अप्रत्याशित घोषणाओं ने निवेशकों को हैरान कर दिया था। लेकिन अपने दूसरे कार्यकाल के लगभग एक साल बाद भी उनका प्रशासन, यदि अत्यंत लोकप्रिय नहीं था, तो कम-से-कम लगातार पर्याप्त जनसमर्थन जरूर हासिल किए हुए था। अक्टूबर 2025 के आखिरी दिनों तक भी कुछ जनमत सर्वेक्षण ऐसे थे, जिनमें उनकी अप्रूवल रेटिंग लगभग 50 प्रतिशत दिखाई दे रही थी। और ट्रम्प महाशय ने यह सब गंवा दिया! अपने अहंकार, अस्थिरता और मूर्खतापूर्ण फैसलों से उन्होंने जीत को हार में बदल दिया। देखें तो ट्रम्प ने जिन नीतियों के आधार पर चुनाव लड़ा था और जिन्हें लागू भी किया था, वे आज भी लोकप्रिय हैं। मसलन, सीमा पर सुरक्षा-व्यवस्था सख्त करना। इसी साल वसंत में कराए एक जनमत सर्वेक्षण में पाया गया कि सीमा-सुरक्षा को कठोर बनाना अब भी वह इमिग्रेशन नीति है, जिसे मतदाताओं का समर्थन प्राप्त है। लेकिन ट्रम्प ने तार्किकता के बजाय थौंस-डपट को प्राथमिकता दी। वे खुद को सौदेबाजी का माहिर खिलाड़ी मानते रहे। शुरुआत में डीईआई (विविधता, समानता और समावेश) और पोलिटिकल करेक्टनेस सम्बंधी मुद्दों पर भी ट्रम्प को पर्याप्त जनसमर्थन हासिल था। न्याय विभाग की नीतियों में बदलाव करने के बाद वे अपने अभियान को स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ने दे सकते थे, ताकि लोग धीरे-धीरे ऐसे अमेरिका की अभ्यस्त हो जाते, जहां आरक्षण (अफर्मेटिव एक्शन), स्पीच-कोड और लैंगिकता की नई मान्यताओं को जबरन लागू करने की व्यवस्था न हो। लेकिन ट्रम्प ने विश्वविद्यालय परिसरों में अभिव्यक्ति के लिए अपनी खुद की आचार संहिता थोपने की कोशिश की। नतीजतन, ऐसी व्यवस्था अस्तित्व में आई, जो पहले के दौर की सेंसरशिप-प्रधान व्यवस्था जैसी थी। ऐसी परिस्थितियों में ही 'वोक' राजनीति अपने उत्कर्ष की ओर बढ़ती है। और विदेश नीति का तो कहना ही क्या?? ये सच है कि ग्रीनलैंड वास्तव में ही एक महत्वपूर्ण सामरिक क्षेत्र है, जिस पर अमेरिका-विरोधी ताकतें प्रभाव जमा सकती हैं। यह भी सच है कि डेमोक्रेट्स का चीन की तुलना में रूस को लेकर अधिक चिंतित होना वास्तव में मूर्खतापूर्ण था। लेकिन एक बार फिर, अपने वार्ताकारों को अपमानित करने की जिद में ट्रम्प ने वहां भी समस्याएं रच दीं, जहां पहले कोई समस्या नहीं थी। कनाडा के कंजर्वेटिव नेता पियरे पोइलिव्र के प्रधानमंत्री बनने की संभावना लगभग तय मानी जा रही थी। लेकिन तभी ट्रम्प ने कनाडा को अमेरिका का 51वां राज्य बनाने जैसी बेतुकी बातें कहनी शुरू कर दीं। नतीजा यह हुआ कि मार्क कार्नी की जीत का रास्ता साफ हो गया, जो ट्रम्प के सबसे दृढ़ विरोधियों में से एक हैं। जून 2025 में, इजराइल के साथ मिलकर ईरान के परमाणु कार्यक्रम को नष्ट करने के उद्देश्य से बमबारी अभियान में शामिल होने से पहले ट्रम्प की लोकप्रियता जिस स्तर पर थी, वह उसके बाद कभी वापस नहीं लौटी। 28 फरवरी को शुरू हुए ऑपरेशन एपिक फ्यूरी ने ट्रम्प प्रशासन के हर हिस्से को अपनी चपेट में ले लिया और उसकी साख को ध्वस्त कर दिया। इसने अमेरिका को न केवल सैन्य, बल्कि कूटनीतिक मोर्चे पर भी अपमानित किया। इसने अमेरिका-इजराइल गठबंधन को भी कमजोर किया। इस युद्ध के कारण पेट्रोल और डीजल की कीमतों में भारी उछाल आया, जिससे महंगाई का सबसे बड़ा बोझ ट्रम्प के अपने समर्थकों को ही उठाना पड़ा। नतीजा : 2024 में जिन निर्वाचन क्षेत्रों और राज्यों में ट्रम्प को भारी बहुमत मिला था, वहां के मतदाताओं का भी रिपब्लिकन पार्टी से मोहभंग होने लगा। ट्रम्प के अहंकार ने उनके दूसरे कार्यकाल को तबाह कर दिया। 2018 के मिड-टर्म में उन्हें जो झटका लगा था, उसकी तुलना में इस बार की शिकस्त कहीं अधिक निर्णायक इसलिए लगती है, क्योंकि इस बार उन्हें अपने अहंकार को खुलकर प्रदर्शित करने की अधिक छूट हासिल थी। (द न्यूयॉर्क टाइम्स से,क्रिस्टोफर कॉल्डवेल)

उन पिताओं को सलाम, जिन्हें कभी रविवार की भी छुट्टी नहीं मिली!

'क्या तुमने कभी मेरे पिता को स्कूल में होने वाली पैरेंट्स-टीचर्स मीटिंग (पीटीएम) में आते देखा है? वे हमेशा दफ्तर में व्यस्त रहते थे



और मेरे जीवन के उन महत्वपूर्ण पड़ावों में शामिल होने की उन्हें कभी फिक्र नहीं हुई। हमेशा मां ही आती थींष्ठ'। फिल्म 'लक्ष्य' में एक दृश्य है, जिसमें ऋतिक रोशन अपने बचपन के दोस्त से पिता की शिकायत कर रहे होते हैं। पिता उनके द्वारा चुने गए कॅरिअर को लेकर सख्त असहमति रखते हैं। लेकिन आज की कहानी उस हीरो की नहीं, बल्कि उन पिता की है, जिन्हें यह तक नहीं पता कि इतनी मेहनत करके अपने बच्चों का जीवन सुरक्षित करने के लिए भी उनकी आलोचना की जा रही है। यह उन पिताओं की कहानी है, जिन्होंने शायद ही कभी अपने बच्चों से 'आई लव यू' कहा हो, क्योंकि वे अपने प्यार को हकीकत में साबित करने में व्यस्त थे। यह उन पिताओं की कहानी है, जो अपने बच्चों को कभी वीकेंड में बाहर घुमाने नहीं ले जा सके- पीटीएम में जाना तो दूर की बात है। क्योंकि उनके लिए काम से एक दिन की गैरहाजिरी का मतलब था पूरे परिवार के लिए एक दिन की आमदनी का नुकसान। उनके लिए रविवार जैसी कोई चीज नहीं थी। अगर आप सोच रहे हैं कि क्या आज भी इस दुनिया में ऐसे पिता मौजूद हैं, तो आइए, मैं आपका परिचय 73 वर्षीय बुरसी प्रधान और उनकी 62 वर्षीय पत्नी अनुसया से कराता हूं। वे ओडिशा के एक दूरदराज गांव में एक जर्जर मकान में रहते हैं। बुरसी ने अपनी जिंदगी का बड़ा हिस्सा दिहाड़ी मजदूर के रूप में बिताया। काम की तलाश में वे केरल तक गए, क्योंकि उनके लिए एक दिन काम न करने का मतलब था परिवार का एक दिन भूखा रहना। जब खराब स्वास्थ्य ने उन्हें वापस गांव लौटने पर मजबूर कर दिया और पूरे परिवार की गुजर-बसर खेती से होने वाली आमदनी पर निर्भर हो गई, तब जाकर बुरसी को अपनी वर्षों की कड़ी मेहनत का फल मिलना शुरू हुआ। बुरसी के बड़े बेटे बिभीषण ने 2021 में कोरापुट के श्री लक्ष्मण नायक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में दाखिला लिया। पिछले साल बेटी मोनालिसा भी उसी कॉलेज में पहुंच गई। इस साल बेटे असरिया और बेटी सुनेमी ने भी क्रमशः भवानीपटना और बलांगीर के सरकारी मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस की सीट हासिल कर ली। उनके भाई के घर में भी कुछ ऐसा ही हुआ। बुरसी के छोटे भाई की बेटी मिनखी ने भी इस साल नीट पास किया और पुरी के श्री जगन्नाथ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में दाखिला लिया। सात बच्चों के पिता बुरसी के लिए इनमें से कुछ भी आसानी से नहीं हुआ था। बुरसी जैसे पिताओं का सबसे बड़ा सपना बहुत सीधा-सरल होता है- वे चाहते हैं कि उनके बच्चे वैसी जिंदगी न जिएं, जो उन्होंने जी है। मेरे बच्चो, हो सकता है कि कुछ पिताओं के पास तुम्हारे लिए अपना प्यार जताने का समय न रहा हो। जब तुम फैशनेबल कपड़े चाहते थे, तब शायद वे यह सोच रहे होते थे कि उन्हें खरीदने के लिए कुछ और रुपये कैसे कमाए जाएं। जब तुम बेहतर खाना चाहते थे, तब शायद वे सोच रहे होते थे कि एक दिन और कैसे काम किया जाए। जब तुम चैन की नींद सो रहे थे, तब शायद वे अगले दिन के खर्चों का हिसाब लगा रहे थे। वे तुम्हें अपना समय इसलिए नहीं दे पाए, क्योंकि वे तुम्हें एक बेहतर जिंदगी देने की कोशिश में व्यस्त थे। इसीलिए जब वे तुम्हारे लिए नए कपड़े लेकर आएं, तो उनसे यह भी पूछो कि उन्होंने अपने लिए क्या खरीदा। जब तुम उस पिज्जा का मजा ले रहे हो, जिसके लिए उन्होंने अपना क्रेडिट कार्ड स्वाइप किया है, तो इस बात पर भी ध्यान दो कि वे खुद क्या खा रहे हैं। और जब वे रात में बिस्तर पर बेचैनी से करवटें बदल रहे हों, तो जाकर उनके पैर दबा आओ। उनसे कहो कि तुम उनके साथ हो और एक परिवार के रूप में हम इस मुश्किल दौर से भी पार निकल जाएंगे। फिर देखना, वे कितने सुकून से सोते हैं। ओडिशा के दूरदराज गांव के बुरसी की कहानी ने मुझे उन गलत समझे गए पिताओं की याद दिला दी, जो मुंबई, दिल्ली और दूसरी जगहों पर साल के 365 दिन काम करते हैं, ताकि उनके 'घर की नैया पार हो जाए'। फंडा यह है कि ज्यादातर घरों में पिता शायद ही कभी कहते हैं, 'मैं तुमसे प्यार करता हूं।' और शायद पितृत्व की यही सबसे खूबसूरत परिभाषा है कि एक व्यक्ति चुपचाप कठिन जिंदगी को स्वीकार कर ले, ताकि उसके बच्चे थोड़ी आसान जिंदगी जी सकें। मैं अनुरोध करूंगा कि ऐसे पिताओं को सलाम कीजिए। एन. रघुरामन

क्या होगा जब एआई हमारी 'इजाजत' लेना बंद कर देगा?

एक दृश्य की कल्पना करें। कोई कंपनी अपनी टीम को एक कठिन टास्क देती है। फिर हर सदस्य को अलग-अलग कमरों में बंद कर देती है और उनसे कहती है कि समस्या का समाधान खोजें। लेकिन किसी तरह वे आपस में बात करने का रास्ता खोज लेते हैं और एक-दूसरे से अपने सुझाव साझा करने लगते हैं। उनमें से कुछ खुद को अधिक निष्ठावान दिखाने



के लिए दूसरी कंपनी के कंप्यूटरों में सेंध भी लगा देते हैं!? अब इस दृश्य में कर्मचारियों की जगह एआई को रख दीजिए! लास वेगास में हुई ब्लैक हैट साइबर सिक्योरिटी कॉन्फ्रेंस में ओपनएआई के रिसर्चर्स ने कुछ ऐसी ही कहानी सुनाई थी। मई में एक आंतरिक मूल्यांकन के दौरान एआई एजेंट्स को कठिन साइबर-सुरक्षा कार्य दिए गए थे। इन एजेंट्स ने दूसरे एजेंट्स को खोज निकाला। इसके बाद जो हुआ, वह टीमवर्क था। अलग-अलग सेशंस में रन कर रहे इन एजेंट्स ने एक-दूसरे से अपने फीडबैक साझा किए, काम बांटा और किसी प्रोजेक्ट पर साथ काम करने वाले सहकर्मियों की तरह समन्वय किया। जुलाई का मध्य आते-आते तो सेंधमारी की स्थिति बन चुकी थी। एजेंट्स ने ओपन इंटरनेट तक पहुंच बनाई और एक प्रमुख एआई प्लेटफॉर्म हगिंग फेस के सिस्टम में प्रवेश कर गए। ओपनएआई ने इसे एक खतरा और चेतावनी माना है। लेकिन यह इस तरह की अकेली घटना नहीं थी। इसी साल का एक और मामला सामने आया, जिसे लोगों से छुपाया गया था। इसमें एजेंट्स ने जर्मन भाषा की ऐसी प्रोग्रामिंग विकी को- जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते थे- सार्वजनिक बुलेटिन बोर्ड में बदल दिया था। लगभग इसी दौरान एंथ्रोपिक और मेटा ने भी अलग-अलग घटनाओं का खुलासा किया, जिनमें परीक्षण के दौरान उनके अपने मॉडल लाइव इन्फ्रास्ट्रक्चर पर काम कर रहे थे। चीजें अब काबू के बाहर होने लगी थीं। इसी पृष्ठभूमि में गत 8 सितम्बर को ओपनएआई और एंथ्रोपिक में तीन वर्षों तक प्री-ट्रेनिंग रिसर्च पर काम करने वाले जैकब कॉक्सन ने एंथ्रोपिक से अपने इस्तीफे की घोषणा की थी। उन्होंने लिखा कि दोनों में से कोई भी कंपनी जिम्मेदारी से काम नहीं कर रही थी; दोनों ऐसी सुपरइंटेलिजेंस की ओर दौड़ रही थीं, जो खुद को बेहतर बनाने में सक्षम होगी और- उनके शब्दों में- 'वे हमारी जिंदगियों के साथ जुआ खेल रही हैं!' कॉक्सन ने खुद उन सिस्टम्स को बनाने में योगदान दिया है, जिनके बारे में वे अब चेतावनी दे रहे हैं। साइंस फिक्शन ने हमें ऐसी मशीनों से डरना सिखाया है, जो चेतना हासिल कर लें और हमसे लड़ने का फैसला कर लें। लेकिन शायद डर की यह सही वजह नहीं है। किसी एआई सिस्टम को किसी नेटवर्क पर हमला करने के लिए न तो गुस्से की जरूरत है और न ही ज्यादा संसाधनों के लालच की। उसे बस एक लक्ष्य चाहिए, उस लक्ष्य को हासिल करने की पर्याप्त क्षमता चाहिए, और सुरक्षा-व्यवस्था में ऐसी खामी चाहिए, जिसका वह फायदा उठा सके।किसी जीपीएस सिस्टम को सबसे तेज रास्ता खोजने का निर्देश दीजिए, वह वैसा कर दिखाएगा। अब उसे इतनी ताकत दीजिए कि वह रास्ते में आने वाली हर उस चीज को हटा सके, जो उसकी रफ्तार कम करती है- ट्रैफिक लाइटें, टोल बूथ, दूसरी गाड़ियां- तो मंजिल तक पहुंचने के लिए नेविगेटर क्या-क्या कर सकता है?एआई में इस समय हो रहा असली बदलाव ऐसा ही है। बैंक इसलिए ईमानदार नहीं रहते कि उनके कर्मचारी चोरी न करने का वादा करते हैं, और हवाई यात्राएं इसलिए सुरक्षित नहीं हैं कि पायलट भरोसेमंद हैं।हम कई सेफ्टी-लेयर्स बनाते हैं : सीमित पहुंच, संवेदनशील एक्शन के लिए अनुमति, ऐसे रिकॉर्ड जिन्हें इसमें शामिल कोई व्यक्ति बदल न सके और डिप्लॉयमेंट से पहले परीक्षण। एआई के साथ भी यही होना चाहिए। टेक-कंपनियां हमें भरोसा दिलाती रहती हैं कि हमेशा कोई ना कोई मनुष्य प्रक्रिया में शामिल होगा। लेकिन हगिंग फेस में हुई सेंधमारी इस भरोसे की सीमाएं दिखाती है। एआई अब चैटबॉट्स से निकलकर बैंकिंग, हेल्थकेयर, एनर्जी ग्रिड और सरकारी सेवाओं में प्रवेश कर रहा है। इसे जिम्मेदारी से विकसित करने का मतलब है कि शक्ति और सीमाएं साथ-साथ स्थापित की जाएं- यह नहीं कि पहले शक्ति दे दी जाए और बाद में सीमाएं तय की जाएं। अब सवाल यह नहीं रह गया है कि एआई सिस्टम्स कितने स्मार्ट हो सकते हैं।सवाल यह है कि किसी के यह जांचने से पहले कि वे अब भी हमारी सुनते हैं या नहीं, हम उन्हें कितनी ताकत सौंप चुके होंगे। हम इस मामले में गैर-जिम्मेदाराना रवैये का परिचय नहीं दे सकते। (प्रोजेक्ट सिंडिकेट,तारिक मलिक)

दिल की बीमारियों के उजागर हो जाने की राह मत देखिए

पहले यह धारणा आम हुआ करती थी कि हृदय रोग की बीमारी अधेड़ उम्र के बाद ही शुरू होती है। लेकिन अब यह सोच हकीकत से तेजी से दूर होती जा रही है। सच्चाई तो यह है कि कार्डियोवैस्कुलर बीमारियां अकसर उम्र की तीसरी या चौथी



दहाई के लोगों को प्रभावित करती हैं, जो अपने निजी और पेशेवर जीवन के सबसे सक्रिय दौर में होते हैं। मुझे चिंता सिर्फ इस बात की नहीं है कि कितने कम उम्र के मरीज हमारे पास आ रहे हैं, बल्कि इस बात की भी है कि रिस्क फैक्टर्स को कितने लंबे समय तक अनदेखा किया जाता है। हाई ब्लडप्रेशर, डायबिटीज, कोलेस्ट्रॉल का असामान्य स्तर और मोटापा वर्षों तक हृदय रोग का खतरा बढ़ाते रह सकते हैं, लेकिन इनके कोई स्पष्ट लक्षण दिखाई नहीं देते। जब तक किसी कार्डियक समस्या का सामना करना पड़ता है, बचाव का मौका पहले ही हाथ से निकल चुका होता है। भारतीयों की बदलती जीवनशैली भी इस पूरी तस्वीर का एक अहम हिस्सा है। लंबे समय तक डेस्क पर बैठे रहना, कसरत या शारीरिक गतिविधियों की कमी, अनियमित नींद, प्रोसेस्ड फूड का बढ़ता सेवन और तंबाकू का इस्तेमाल- ये सब मिलकर ऐसे जोखिम पैदा कर रहे हैं, जिन्हें युवा आबादी नजरअंदाज नहीं कर सकती।

तनाव भी आधुनिक जीवन की एक हकीकत है, खासकर युवा पेशेवरों के लिए, और स्वास्थ्य के प्रति व्यापक नजरिए में इस पर भी ध्यान देना होगा। प्रिवेंशन पर आधारित हेल्थकेयर को हमारी स्वास्थ्य-व्यवस्था का नियमित हिस्सा बनाना जरूरी है।

रिपोर्ट- ट्रम्प का साथ छोड़ सकते हैं विदेश मंत्री,उपराष्ट्रपति वेंस भी दूरी बना रहे, मिडटर्म में हार के बाद रिपब्लिकन पार्टी में फूट

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी मिडटर्म चुनाव में हार के बाद राष्ट्रपति ट्रम्प की रिपब्लिकन पार्टी में मतभेद खुलकर सामने आने लगे हैं। विदेश मंत्री मार्को रूबियो ट्रम्प का साथ छोड़ने पर विचार कर रहे हैं। इकोनॉमिक टाइम्स के मुताबिक, रूबियो अपने भविष्य के विकल्पों पर चर्चा कर रहे हैं। हालांकि, उन्होंने इससे इनकार किया है। दूसरी ओर, उपराष्ट्रपति जेडी वेंस भी ट्रम्प से दूरी बना रहे हैं। वेंस 2028 के राष्ट्रपति चुनाव की तैयारी में ट्रम्प से नाराज वोटरों को अपने साथ लाने की कोशिश कर रहे हैं। ट्रम्प ने व्हाइट हाउस के चीफ ऑफ स्टाफ को बदला:-अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने मिडटर्म चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी की हार के बाद व्हाइट हाउस के चीफ ऑफ स्टाफ सुसी वाइल्स को पद से हटा दिया है। उनकी जगह अपने करीबी सहयोगी स्टीफन मिलर को यह जिम्मेदारी सौंपी है। मिडटर्म चुनाव में डेमोक्रेट्स ने संसद के दोनों सदनों- हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स और सीनेट पर नियंत्रण हासिल कर लिया है। रिपब्लिकन उम्मीदवार ने वोटों की दोबारा गिनती की मांग की:-कंसास में रिपब्लिकन



उम्मीदवार टाय मास्टरसन ने डेमोक्रेट उम्मीदवार सिंडी होल्शर से पीछे रहने के बाद वोटों की दोबारा गिनती की मांग की। उनका कहना था कि मुकाबला बेहद करीबी है, इसलिए हर वोट की सही गिनती होनी चाहिए। इसके बाद 5 नवंबर से चुनाव अधिकारियों ने कुछ सीटों पर मतपत्रों की हाथ से जांच शुरू की। यह राज्य के कानून के तहत होने वाला नियमित चुनावी ऑडिट है। इसका मतलब यह नहीं है कि चुनाव में किसी तरह की गड़बड़ी सामने आई है। अलास्का में चुनावी गड़बड़ी की शिकायतें मिलीं:- अमेरिकी न्याय विभाग (डिओजे) ने 4 नवंबर को सोशल मीडिया पर बताया कि उसे अलास्का में चुनाव से जुड़ी गड़बड़ी और वोटों में संभावित हेराफेरी की शिकायतें मिली हैं। विभाग ने कहा कि वह इन शिकायतों पर नजर रख रहा है और गंभीरता से लिए जाने वाले उनमें किस तरह की गड़बड़ी का आरोप लगाया गया है। अभी तक विभाग ने चुनाव में गड़बड़ी की पुष्टि भी नहीं की है। अमेरिका की दोनों प्रमुख पार्टियों के नेता, वकील और कार्यकर्ता मिसिसिपी पहुंच रहे हैं। यहां हजारों अस्थायी वोटों (प्रोविजनल बैलेट) की जांच होगी। दोनों पार्टियां नतीजों को कोर्ट में चुनौती देने की तैयारी भी कर रही हैं। मिसिसिपी में डेमोक्रेट उम्मीदवार स्कॉट कोलम को रिपब्लिकन सीनेटर सिंडी हाइड-स्मिथ पर बेहद कम बढ़त मिली है। इस चुनाव का नतीजा तय करेगा कि अगले साल अमेरिकी सीनेट में डेमोक्रेट्स की कितनी सीटें होंगी। मिसिसिपी में करीब 40 साल से कोई डेमोक्रेट सीनेट नहीं पहुंचा है। दोनों उम्मीदवारों ने वोटों की जांच और जरूरत पड़ने पर कानूनी चुनौती देने के लिए टीमें तैनात की हैं। नतीजे घोषित करने की आखिरी तारीख 3 दिसंबर है।

व्हाइट हाउस के पास वेनेजुएलाई युवक हथियारों के साथ गिरफ्तार,पुलिस को बताया- ट्रम्प को मारने के ख्याल आते हैं,वहां के राष्ट्रपति अमेरिका में बंदी

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका में व्हाइट हाउस के पास एक वेनेजुएला का युवक हथियारों के साथ गिरफ्तार किया गया। अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग (डीएचएस) के मुताबिक, उसके



पास से तीन बंदूकें और कई कारतूस मिले हैं। डीएचएस ने बताया कि सीक्रेट सर्विस के अधिकारियों ने युवक को वॉशिंगटन डीसी में व्हाइट हाउस के बाहर एक कार में संदिग्ध हालत में देखा। पूछताछ में उसने बताया कि उसके सिर में आवाजें आती हैं, जो उसे ट्रम्प को मारने के लिए कहती हैं। दरअसल, जनवरी में अमेरिकी सैनिकों ने वेनेजुएला पर हमला कर राष्ट्रपति मादुरो और उनकी पत्नी को पकड़ लिया था। इसके बाद उन्हें न्यूयॉर्क लाया गया, जहां उन्हें डिटेंशन सेंटर में रखा गया है। युवक 2024 में अवैध तरीके से अमेरिका आया था:-युवक की पहचान 26 साल के रोनी योरड्रिक्स गुआनिपा क्रिनोस के रूप में हुई है। वह 2024 में अवैध तरीके से अमेरिका आया था। सीक्रेट सर्विस के अधिकारी गुरुवार रात करीब 11:42 बजे व्हाइट हाउस के पास कॉन्स्टिट्यूशन एवेन्यू पर गश्त कर रहे थे। इसी दौरान उनकी नजर सड़क किनारे खड़ी नीली फोर्ड एफ-150 पर पड़ी। अधिकारियों ने युवक को कार में अकेले सोते हुए देखा। उन्हें मामला ठीक नहीं लगा। इसलिए वे यह पता लगाने के लिए उसके पास पहुंचे कि वह ठीक है या नहीं। युवक अंग्रेजी नहीं बोल पा रहा था। इसलिए उसने गूगल ट्रांसलेट की मदद से अधिकारियों को बताया कि उसके पास हथियार हैं। जांच में यह भी पता चला कि कार चोरी की थी। युवक का दावा- कुछ लोग उसे मारना चाहते थे:- पूछताछ में क्रिनोस ने अधिकारियों को बताया कि कुछ लोगों ने उसे मारने की कोशिश की थी। उसने उनसे एक बंदूक छीन ली थी, जिसे कार में रखे भूरे रंग के बैग में है। अधिकारियों को कार से एक पिस्तौल और दो राइफल मिलीं। इनमें एआर-15 स्टाइल राइफल, मैक-10 हैंडगन और ग्लॉक 43एक्स पिस्टल शामिल हैं। इसके अलावा कई कारतूस भी बरामद हुए। हथियार रखने और चोरी के कई आरोप लगे:-क्रिनोस पर बिना कानूनी अनुमति बंदूकें रखने और उन्हें एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के आरोप लगाए गए हैं। उस पर बिना रजिस्ट्रेशन के राइफल और पिस्टल रखने के साथ कारतूस रखने के तीन अलग-अलग आरोप भी हैं। इसके अलावा उस पर बिना अनुमति गाड़ी इस्तेमाल करने, चोरी और चोरी की संपत्ति अपने पास रखने के आरोप भी लगाए गए हैं। उसे सोमवार को फेडरल कोर्ट में पेश किया जाएगा। वेनेजुएला के राष्ट्रपति मादुरो की गिरफ्तारी की टाइमलाइन- 2 जनवरी:- अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने वेनेजुएला में सैन्य कार्रवाई को मंजूरी दी। ऑपरेशन की तैयारी कई महीनों से चल रही थी। 3 जनवरी:-अमेरिकी सेना ने राजधानी कराकस समेत कई जगहों पर हवाई हमले किए। सैन्य ठिकानों और एयर डिफेंस सिस्टम को निशाना बनाया गया। सुबह करीब 2:02 बजे:- अमेरिकी स्पेशल फोर्सेज मादुरो के ठिकाने पर पहुंचीं। मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया फ्लोरेस को हिरासत में ले लिया गया। 5 जनवरी:-मादुरो और उनकी पत्नी को न्यूयॉर्क की मैनहट्टन फेडरल कोर्ट में पेश किया गया। मादुरो ने खुद को निर्दोष बताया। उन्होंने कहा, 'मुझे किडनैप किया गया है। मैं अब भी अपने देश का राष्ट्रपति हूं।' उनकी पत्नी ने भी आरोपों से इनकार किया।

न्यूजीलैंड में मतदान खत्म, शुरुआती नतीजों में पीएम लक्सन आगे,छोटी पार्टियां किंगमेकर बन सकती हैं

वेलिंगटन। न्यूजीलैंड में आम चुनाव के लिए वोटिंग खत्म हो गई है। अल जजीरा के मुताबिक, शुरुआती नतीजों में प्रधानमंत्री



क्रिस्टोफर लक्सन की सत्ताधारी नेशनल पार्टी को 31.19फीसदी वोट मिले हैं। वहीं, विपक्षी लेबर पार्टी 28.35फीसदी वोटों के साथ दूसरे नंबर पर है। चुनाव आयोग शनिवार रात तक 95फीसदी पोलिंग स्टेशनों के शुरुआती नतीजे जारी करेगा। विदेश में रहने वाले न्यूजीलैंड के नागरिकों के वोटों की गिनती के बाद 27 नवंबर को अंतिम नतीजे आने की उम्मीद है। इस चुनाव में महंगाई, बेरोजगारी और कमजोर अर्थव्यवस्था बड़े मुद्दे रहे। न्यूजीलैंड की संसद में कुल 120 सीटें हैं और बहुमत के लिए 61 सीटों की जरूरत होती है। शुरुआती रुझानों में किसी भी प्रमुख दल को स्पष्ट बहुमत मिलता नहीं दिख रहा है। ऐसे में छोटी पार्टियां तय कर सकती हैं कि अगली सरकार किसकी बनेगी। कौन हैं प्रधानमंत्री पद के दो बड़े दावेदार? क्रिस्टोफर लक्सन:- न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन दूसरी बार सरकार बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने 2023 के चुनाव में सेंटर-राइट नेशनल पार्टी को जीत दिलाई थी। इससे देश में 6 साल से चल रही लेबर पार्टी की सरकार खत्म हो गई थी। हालांकि, प्रधानमंत्री बनने के बाद से ही उन्हें राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इस साल अप्रैल और अगस्त में उनकी अपनी पार्टी के सांसदों ने उनके नेतृत्व पर सवाल उठाए और उन्हें हटाने की कोशिश की। दोनों बार लक्सन अपनी कुर्सी बचाने में कामयाब रहे। अगस्त में हुई दूसरी कोशिश के पीछे उस समय के रक्षा मंत्री का हाथ होने की खबरें भी आई थीं। उनकी सरकार को अर्थव्यवस्था में धीमी सुधार और गठबंधन में शामिल पार्टियों के बीच मतभेदों को लेकर भी आलोचना झेलनी पड़ी है। क्रिस हिपकिंस:-विपक्षी लेबर पार्टी के नेता क्रिस हिपकिंस फिर से प्रधानमंत्री बनना चाहते हैं। 2023 के चुनाव में उनकी पार्टी को बड़ी हार का सामना करना पड़ा था। हिपकिंस पहली बार 2008 में सांसद बने थे। जनवरी 2023 में जैसिंडा अर्डर्न के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद उन्होंने यह जिम्मेदारी संभाली थी। हालांकि, उनका कार्यकाल सिर्फ नौ महीने चला। अक्टूबर 2023 के चुनाव में लक्सन की नेशनल पार्टी के गठबंधन ने जीत हासिल की और लेबर पार्टी सत्ता से बाहर हो गई। हार के बाद भी हिपकिंस पार्टी के नेता बने रहे। इस बार वे महंगाई से राहत देने और सरकारी सेवाओं



को बेहतर बनाने का वादा कर रहे हैं। चुनाव में कौन से मुद्दे सबसे अहम हैं? 1. अर्थव्यवस्था और महंगाई: इस चुनाव में अर्थव्यवस्था सबसे बड़ा मुद्दा है। दोनों प्रमुख पार्टियां आर्थिक विकास बढ़ाने और लोगों को महंगाई से राहत देने की बात कर रही हैं, लेकिन उनके तरीके अलग हैं। नेशनल पार्टी सरकारी खर्च पर नियंत्रण रखकर बजट को फिर से फायदे में लाना चाहती है। इसके साथ ही राष्ट्रीय पेंशन योजना का विस्तार करने का वादा किया गया है। वहीं, लेबर पार्टी लोगों के घरेलू खर्च को कम करने पर जोर दे रही है। पार्टी सस्ती स्वास्थ्य सेवाएं और परिवहन सुविधा देने के साथ मकान, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं पर निवेश बढ़ाना चाहती है। 2. बिजली, किराना और टैक्स: छोटी पार्टियां बिजली और किराने के सामान की बढ़ती कीमतों को लेकर बड़े बदलाव का वादा कर रही हैं। न्यूजीलैंड फर्स्ट पार्टी बड़ी बिजली कंपनियों को बांटने और देश की बड़ी सुपरमार्केट कंपनियों में से एक को अलग-अलग हिस्सों में बांटने की बात कर रही है। वहीं, ग्रीन पार्टी सरकारी बिजली कंपनी और सरकारी सुपरमार्केट चेन बनाने का प्रस्ताव दे रही है। पार्टी किराने के सामान की कीमतों पर सख्त नियंत्रण चाहती है। ग्रीन पार्टी अमीर लोगों, बड़ी कंपनियों और बैंकों पर ज्यादा टैक्स लगाने के पक्ष में है। साथ ही ज्यादातर लोगों का इनकम टैक्स कम करने का वादा कर रही है। दूसरी ओर, अपॉर्च्युनिटी पार्टी जमीन की कीमत के आधार पर टैक्स लगाने की बात कर रही है। 3. इमिग्रेशन और वोट देने का अधिकार: चुनाव में विदेशियों के रहने के नियम और वोट देने का अधिकार भी बड़े मुद्दे बने हुए हैं। एक्ट पार्टी गंभीर अपराध करने वाले लोगों को न्यूजीलैंड से बाहर भेजने के पक्ष में है। पार्टी का कहना है कि उन्होंने देश में कितने भी साल बिताए हों, उन्हें वापस भेजा जाना चाहिए। न्यूजीलैंड फर्स्ट पार्टी वोट देने का अधिकार सिर्फ देश के नागरिकों तक सीमित करना चाहती है। फिलहाल न्यूजीलैंड में रहने वाले योग्य स्थायी निवासी भी वोट दे सकते हैं, बशर्ते वे लगातार कम से कम 12 महीने से देश में रह रहे हों। इस प्रस्ताव से मौजूदा चुनावी नियम बदल जाएंगे। हर तीन साल में होते हैं आम चुनाव:- न्यूजीलैंड में हर तीन साल में आम चुनाव होते हैं। यहां मिक्स्ड मेंबर प्रपोर्शनल (एमएमपी) चुनाव प्रणाली लागू है।

इस व्यवस्था में मतदाता सीधे प्रधानमंत्री या देश के नेता को नहीं चुनते, बल्कि दो वोट डालते हैं। पहला वोट अपने इलाके के उम्मीदवार को दिया जाता है:-दूसरा वोट अपनी पसंद की राजनीतिक पार्टी को दिया जाता है-हर इलाके में सबसे ज्यादा वोट पाने वाला उम्मीदवार संसद में पहुंचता है। इसके अलावा देशभर में किसी पार्टी को मिले वोटों के अनुपात के हिसाब से उसके दूसरे उम्मीदवारों को भी संसद में जगह मिलती है। संसद में आमतौर पर 120 सीटें होती हैं। सरकार बनाने के लिए किसी एक पार्टी या पार्टियों के गठबंधन को आधे से ज्यादा सीटें हासिल करनी होती हैं।

इजराइल में नए प्रधानमंत्री का ऐलान आज,आइजनकोट को 6 पार्टियों का समर्थन-देश में कभी सिंगल पार्टी की सरकार नहीं बनी

तेल अवीव। इजराइल में अगला प्रधानमंत्री कौन होगा इसका ऐलान राष्ट्रपति इसाक हर्जोग रविवार को करेंगे। सरकार बनाने के लिए 61 सासंदों का समर्थन चाहिए। गादी आइजनकोट के गठबंधन को 6 पार्टियों के 67



सांसदों ने समर्थन दिया है। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के पास मात्र 46 सांसदों का समर्थन है। इस कारण माना जा रहा है कि राष्ट्रपति उन्हें सरकार बनाने का पहला मौका नहीं देंगे। इजराइल में अब तक किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला है। यही वजह है कि यहां हमेशा गठबंधन की सरकारें बनती रही हैं। राष्ट्रपति बोले- सांसद साथ हैं, लेकिन पार्टियां राजी नहीं:-राष्ट्रपति हर्जोग ने गुरुवार को संसद में चुनी गई सभी पार्टियों के नेताओं से बातचीत की थी। उन्होंने कहा था कि पहली नजर में सांसदों की राय साफ दिखाई देती है, लेकिन अलग-अलग राजनीतिक गुटों के बीच कई मुद्दों पर सहमति नहीं है। उनके मुताबिक पार्टियों के बीच एक-दूसरे को लेकर आपत्तियां भी हैं।

इसलिए सिर्फ सांसदों की सिफारिश के आधार पर यह तय नहीं किया जा सकता कि कौन सरकार बना पाएगा। राष्ट्रपति ने कहा कि वह कुछ पार्टी नेताओं से अलग से बातचीत करेंगे, ताकि सरकार बनाने की संभावनाएं साफ हो सकें।

छह पार्टियों ने आइजनकोट का नाम सुझाया, लेकिन साथ आने को तैयार नहीं:-आइजनकोट को छह पार्टियों के 67 सांसदों का समर्थन मिला है। इनमें चार यहूदी पार्टियां और दो अरब पार्टियां शामिल हैं।

चार यहूदी पार्टियों के पास कुल 48 सीटें हैं, जबकि दो अरब पार्टियों के पास 19 सीटें हैं। सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि इन छह पार्टियों में से तीन यहूदी पार्टियां अरब पार्टियों के साथ सरकार बनाने को तैयार नहीं हैं। आइजनकोट ने भी चुनाव से पहले अरब पार्टियों को सरकार में शामिल करने से इनकार किया था। दूसरी ओर, अरब पार्टियों का कहना है कि वे नेतन्याहू को सत्ता से हटाने के लिए आइजनकोट का समर्थन कर रही हैं। यानी राष्ट्रपति के सामने आइजनकोट के पक्ष में 67 सांसदों की सिफारिशें हैं, लेकिन यह संख्या अपने आप में गठबंधन सरकार बनने की गारंटी नहीं है। जॉइंट लिस्ट गठबंधन को जानिए:-यह इजराइल की अरब आबादी के अधिकारों की बात करने वाला राजनीतिक गठबंधन है। इसमें तीन अलग-अलग पार्टियां शामिल हैं।

गठबंधन में अरब नेताओं के साथ यहूदी नेता भी हैं। हदाश:- वामपंथी पार्टी है। अरब और यहूदी नागरिकों की समानता, मजदूरों के अधिकारों और फिलिस्तीन के साथ शांति की वकालत करती है। ताल:- अहमद तिबी की पार्टी है।

अरब नागरिकों के समान अधिकार, शिक्षा और रोजगार के बेहतर अवसरों और फिलिस्तीनी राज्य की स्थापना का समर्थन करती है। बलद:- अरब राष्ट्रवादी विचारधारा वाली धर्मनिरपेक्ष पार्टी है।

इजराइल को ऐसा देश बनाने की वकालत करती है, जहां सभी नागरिकों को समान अधिकार मिलें। आइजनकोट के समर्थन में:- यिस्राइल बेतेनु: अविग्दोर लिबरमैन की पार्टी ने आइजनकोट को समर्थन दिया है।

इसके पास 7 सीटें हैं। राअम: मंसूर अब्बास की अरब पार्टी के 8 सांसदों ने आइजनकोट को सरकार बनाने का मौका देने की सिफारिश की। जॉइंट लिस्ट: 11 सांसदों वाले इस अरब गठबंधन ने भी आइजनकोट का समर्थन किया।

याशार और डेमोक्रेट्स: आइजनकोट के नेतृत्व वाले विपक्षी खेमे की इन पार्टियों ने भी उनका नाम सुझाया।

इसके अलावा नफ्ताली बेनेट के नेतृत्व वाली बियाचाद पार्टी ने भी उनका समर्थन किया। नेतन्याहू के समर्थन में:-लिकुड: बेंजामिन नेतन्याहू की अपनी पार्टी के सांसदों ने उन्हें दोबारा सरकार बनाने का मौका देने की सिफारिश की। शास: आर्ये डेरी के नेतृत्व वाली इस पार्टी ने भी नेतन्याहू का समर्थन किया। रिलिजियस जायनिज्म:- बेजालेल स्मोट्रिच की पार्टी के सांसदों ने नेतन्याहू के पक्ष में सिफारिश की। ओत्जमा येहुदित: इतमार बेन ग्विर की पार्टी ने भी नेतन्याहू को समर्थन दिया।यूनाइटेड तोराह जूडिज्म: इस पार्टी के सांसदों ने भी नेतन्याहू के नेतृत्व में सरकार बनाने का समर्थन किया। किसी का समर्थन नहीं किया:-यूनाइटेड तोरा जूडिज्म (यूटीजे): किसी भी नेता के नाम की सिफारिश नहीं की। इसके पास 7 सीटें हैं। यह पार्टी लंबे समय से नेतन्याहू की सहयोगी रही है, लेकिन इस बार उसने उनसे दूरी बना ली। 42 दिन में बनानी होगी सरकार, 10 नवंबर को संसद की बैठक:-इजराइल में राष्ट्रपति का पद आमतौर पर औपचारिक माना जाता है, लेकिन चुनाव के बाद सरकार गठन में उनकी अहम भूमिका होती है। राष्ट्रपति उस नेता को सरकार बनाने का न्योता देते हैं, जिसके पास संसद में बहुमत जुटाने की सबसे अच्छी संभावना हो। इसके लिए वे सबसे ज्यादा सिफारिशें पाने वाले नेता को चुनने के लिए बाध्य नहीं हैं। सरकार बनाने का मौका मिलने पर नेता को 28 दिन का समय दिया जाता है। अगर इस दौरान सरकार नहीं बन पाती, तो राष्ट्रपति 14 दिन का अतिरिक्त समय दे सकते हैं। यानी कुल 42 दिन में सरकार बनाने की कोशिश पूरी करनी होती है। इजराइल की नई संसद की पहली बैठक 10 नवंबर को होने की उम्मीद है। अगर आइजनकोट या नेतन्याहू तय समय में सरकार नहीं बना पाते, तो राष्ट्रपति किसी दूसरे नेता को मौका दे सकते हैं।

सभी कोशिशें नाकाम होने पर नए चुनाव का रास्ता खुल सकता है। 27 अक्टूबर को हुए चुनाव में नेतन्याहू की लिकुड पार्टी 27 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनी थी। हालांकि, उसके साथ गठबंधन में शामिल धार्मिक और राष्ट्रवादी पार्टियों को मिलाकर कुल 53 सीटें ही मिलीं। वहीं, आइजनकोट के गठबंधन में शामिल चार पार्टियों ने 48 सीटें जीतीं। यह गठबंधन केंद्र से लेकर वामपंथ और दक्षिणपंथ तक की पार्टियों को मिलाकर बना है। चुनाव में अरब पार्टियों को रिकॉर्ड 19 सीटें मिलीं।

जिनपिंग अपनी जमीन पर यूक्रेन बंटवारे का फैसला नहीं चाहते- जिनपिंग चीन में ट्रम्प-पुतिन मुलाकात कराने से डर रहे

बीजिंग।अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प और रूसी राष्ट्रपति पुतिन चीन में एक साथ बैठक करना चाहते हैं। पुतिन ने 19 अक्टूबर को इसका प्रस्ताव रखा। उसी दिन ट्रम्प ने बैठक में शामिल होने की



रजामंदी भी दे दी। दोनों ने इस बातचीत में जिनपिंग को शामिल करने का प्रस्ताव रखा है। यह बैठक 18-19 नवंबर को चीन के शेनझेन शहर में होने वाले एपीईसी समिट के दौरान हो सकती है। हालांकि, चीन ने अभी तक इस पर सहमति नहीं दी है, लेकिन प्रस्ताव को खारिज भी नहीं किया है। फिलहाल तीनों देशों के बीच इस बैठक को लेकर बातचीत चल रही है। जिनपिंग की हिचकिचाहट की एक बड़ी वजह यूक्रेन युद्ध है। उनके सामने मुश्किल यह है कि वह एक तरफ रूस के साथ अपने रिश्ते खराब नहीं करना चाहते। दूसरी तरफ यूरोप के साथ अपने आर्थिक संबंधों को भी नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते। यही वजह है कि तीनों की मुलाकात पर अब भी सस्पेंस बना हुआ है। 80 साल पहले तीन देशों ने मिलकर तय किया चीन का भविष्य:-ट्रम्प-पुतिन और जिनपिंग के बीच बैठक से चीन खुद को अमेरिका के बराबर एक बड़ी वैश्विक ताकत के रूप में पेश कर सकता है। लेकिन उसे यह भी डर है कि कहीं यह बैठक 1945 के याल्टा समझौते जैसी स्थिति न पैदा कर दे, जिसकी चीन लंबे समय से आलोचना करता रहा है। फरवरी 1945 में दूसरे विश्वयुद्ध के आखिरी दौर में अमेरिका, सोवियत संघ और ब्रिटेन के नेता क्रीमिया के याल्टा में मिले थे। इन नेताओं ने बैठक में तय किया कि युद्ध खत्म होने के बाद यूरोप के देशों का बंटवारा और शासन कैसे होगा। उस समय चीन भी जापान के खिलाफ युद्ध लड़ रहा था, लेकिन उसे इस बैठक में शामिल नहीं किया गया।दरअसल इसमें तीनों देशों ने एक गुप्त समझौता भी किया था। इसके तहत सोवियत संघ को चीन में कुछ खास अधिकार दिए गए। जैसे- रूस मंगोलिया में सैना तैनात रखेगा और मंचूरिया में रेलवे और बंदरगाहों के इस्तेमाल करेगा। चीन इस समझौते से नाराज था। उसका मानना था कि उसकी गैरमौजूदगी में उसके इलाके और अधिकारों को लेकर फैसला करके उसकी पीठ में छुरा घोंपा गया। 80 साल बाद फिर तीन महाशक्तियां एक साथ बैठेंगी:-80 साल बाद इतिहास खुद को दोहराता हुआ नजर आ रहा है। तब तीन बड़ी ताकतों ने एक मेज पर बैठकर यूरोप का भविष्य तय किया था। अब रूस एक बार फिर अपने राष्ट्रपति को अमेरिका और चीन के नेताओं को एक साथ बैठाना चाहता है। फर्क सिर्फ इतना है कि इस बार चर्चा का केंद्र यूक्रेन युद्ध हो सकता है। रूस चाहता है कि ट्रम्प, पुतिन और जिनपिंग एक साथ बैठकर युद्ध खत्म करने के रास्तों पर बात करें। इस प्रस्ताव के साथ एक बड़ा सवाल भी जुड़ा है। जिस यूक्रेन की जमीन पर यह युद्ध लड़ा जा रहा है, वह खुद इस बैठक में शामिल नहीं होगा। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की पहले ही इस तरह की किसी बैठक पर आपत्ति जता चुके हैं। उनका कहना है कि यूक्रेन के भविष्य का फैसला उसकी गैरमौजूदगी में नहीं किया जा सकता। यानी दुनिया की तीन बड़ी ताकतें अगर यूक्रेन युद्ध पर कोई समझौता करती हैं, तो उसे यूक्रेन कैसे स्वीकार करेगा? रूस, अमेरिका और चीन को बैठक से क्या मिलेगा रूस- अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी वापसी चाहते हैं पुतिन:-पुतिन को अमेरिका और चीन के राष्ट्रपतियों के साथ एक ही मंच पर बैठने का मौका मिलेगा। यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी देशों ने रूस से दूरी बना रखी है। ऐसे में ट्रम्प और जिनपिंग के साथ बैठक पुतिन को यह दिखाने का मौका देगी कि रूस को दुनिया की बड़ी ताकतों की राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता। अमेरिका- रूस से बातचीत का रास्ता खोलना:- इस बैठक का फायदा रूस के साथ सीधे बातचीत करने और यूक्रेन युद्ध को खत्म करने की कोशिशों को आगे बढ़ाने में हो सकता है। ट्रम्प खुद को ऐसे नेता के रूप में पेश करते रहे हैं, जो बड़े अंतरराष्ट्रीय विवादों को बातचीत से सुलझा सकते हैं। चीन- वैश्विक राजनीति में अपना प्रभाव बढ़ाना:-शी जिनपिंग को दुनिया के दो बड़े देशों अमेरिका और रूस के नेताओं की मेजबानी करने का मौका मिलेगा। इससे चीन खुद को अंतरराष्ट्रीय विवादों में बातचीत कराने वाली एक बड़ी ताकत के रूप में पेश कर सकता है। चीन पर दोस्ती और व्यापार, दोनों बचाने की चुनौती:-जिनपिंग के लिए यह मामला आसान नहीं है। चीन ने अब तक यूक्रेन युद्ध में खुद को शांति का समर्थक बताया है। उसका कहना रहा है कि युद्ध खत्म करने के लिए रूस और यूक्रेन, दोनों को बातचीत में शामिल होना चाहिए। अगर जिनपिंग अपने देश में ऐसी बैठक की मेजबानी करते हैं, जिसमें रूस और अमेरिका यूक्रेन के भविष्य पर चर्चा करें, लेकिन यूक्रेन खुद वहां मौजूद न हो, तो चीन की इस पुरानी नीति पर सवाल उठेंगे। चीन का यूरोप से रिश्ते पर भी असर पड़ सकता है। यूक्रेन को सैन्य और आर्थिक मदद देने वाले कई यूरोपीय देश नहीं चाहते कि उनके महाद्वीप में चल रहे युद्ध का फैसला अमेरिका, रूस और चीन मिलकर करें। बैठक हुई तो जिनपिंग अपना तरीका चुन सकते हैं:- एक्सपर्ट्स का मानना है कि जिनपिंग के पास बैठक को पूरी तरह खारिज करने के बजाय उसका स्वरूप बदलने का विकल्प भी है। वे ट्रम्प और पुतिन से अलग-अलग मुलाकात कर सकते हैं या तीनों नेताओं की अनौपचारिक बातचीत करा सकते



हैं। ऐसी बैठक में यूक्रेन युद्ध पर किसी बड़े समझौते का दावा करने के बजाय वैश्विक अर्थव्यवस्था और अमेरिका-रूस-चीन के संबंधों जैसे मुद्दों पर चर्चा हो सकती है। इससे जिनपिंग को दोनों नेताओं से बातचीत करने का मौका मिलेगा, लेकिन यूक्रेन के भविष्य पर फैसला कराने की जिम्मेदारी लेने से बच सकेंगे।

आत्मनिर्भरता की नई पहचान बनेगा 'सोन अर्थ'- सोनभद्र की महिलाओं के उत्पादों को मिलेगा बड़ा बाजार

विधायक भूपेश चौबे, डीएम चर्चित गौड़ और सीडीओ जागृति अवस्थी ने सरस मेले में किया 'सोन अर्थ' लोगो का अनावरण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वयं सहायता समूहों को स्वरोजगार एवं उद्यमिता से जोड़ रही है। इसी दिशा में सोनभद्र में स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा तैयार किए जा रहे उत्पादों को अब एक नई पहचान मिलने जा रही है। समूह की महिलाओं के उत्पादों को बाजार में अलग पहचान दिलाने और उनकी पहुंच प्रदेश ही नहीं, बल्कि देशभर के बाजारों तक बनाने के उद्देश्य से 'सोन अर्थ' ब्रांड तैयार किया गया है। सदर विधायक भूपेश चौबे, जिलाधिकारी चर्चित गौड़ एवं मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी ने गुरुवार शाम को राबर्ट्सगंज के उरमौरा स्थित डायट परिसर में आयोजित सरस मेले में 'सोन अर्थ' लोगो का अनावरण किया। इस पहल से महिलाओं के हुनर को ब्रांड के रूप में स्थापित करने और उनके उत्पादों के बेहतर विपणन का रास्ता खुलेगा। इस अवसर पर सदर विधायक भूपेश चौबे ने कहा कि स्वयं सहायता समूहों की महिलाएं अपनी मेहनत, हुनर और लगन से विभिन्न उत्पाद तैयार कर रही हैं। 'सोन अर्थ' लोगो इन महिलाओं के परिश्रम और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनेगा। ब्रांड के माध्यम से उत्पादों को विशिष्ट पहचान मिलेगी और उनकी पहुंच बड़े बाजारों तक बनाने में मदद मिलेगी। इससे महिलाओं की आमदनी बढ़ेगी और उन्हें स्वरोजगार के नए अवसर मिलेंगे। महिलाओं के सपनों को मिलेगी उड़ानः-जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने कहा कि 'सोन अर्थ' जनपद की स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन का माध्यम बनेगा। समूहों द्वारा तैयार किए जा रहे उत्पादों को एक ब्रांड के तहत बाजार में उतारने से उनकी विश्वसनीयता और पहचान बढ़ेगी। महिलाओं को अपने उत्पादों के प्रदर्शन, प्रचार-प्रसार और विपणन के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में भी यह पहल महत्वपूर्ण साबित होगी। सरकार की मंशा के अनुरूप राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को संगठित कर स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा जा रहा है। उन्हें स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और आजीविका संवर्धन के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। सरकार का जोर महिलाओं को केवल रोजगार उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्हें छोटे उद्यमों की संचालक और सफल कारोबारी के रूप में स्थापित करने पर भी है। स्थानीय उत्पादों को ब्रांडिंग, पैकेजिंग और बाजार से जोड़कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने का प्रयास किया जा रहा है। 'सोन अर्थ' इसी सोच को धरातल पर उतारने की एक महत्वपूर्ण पहल है। महिलाओं को मिलेगा आर्थिक संबलः-जिलाधिकारी ने कहा कि 'सोन अर्थ' के माध्यम से सोनभद्र की ग्रामीण महिलाओं के पारंपरिक हुनर और स्थानीय संसाधनों से तैयार उत्पादों को व्यापक बाजार उपलब्ध कराने की दिशा में काम किया जाएगा। ब्रांड की पहचान बनने से उत्पादों की अलग मार्केटिंग करने और ग्राहकों तक उनकी पहुंच बढ़ाने में सहूलियत होगी।

इससे महिलाओं को अपने उत्पादों का बेहतर मूल्य मिलने के साथ ही परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करने का अवसर मिलेगा। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी, एनआरएलएम के उपायुक्त रवीन्द्र वीर सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।





'सोनअर्थ' को मिली डिजिटल उड़ान, स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के उत्पादों को मिलेगी नई पहचान और व्यापक बाजार

समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव कुमार गौड़ ने किया 'सोनअर्थ' के डिजिटल लोगो का अनावरण

डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़ेंगे अधिक ग्राहक, महिला उद्यमिता एवं आर्थिक स्वावलंबन को मिलेगा बढ़ावा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। डायट परिसर में आयोजित सोन अर्थ दीपावली सरस मेला-2026 में आज प्रदेश सरकार के समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव कुमार गौड़ ने जिलाधिकारी चर्चित गौड़ एवं मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी एवं डीसी मनरेगा श्री रविंद्र सिंह की उपस्थिति में 'सोनअर्थ' के डिजिटल लोगो का अनावरण किया। इस अवसर पर समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव कुमार गौड़ ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि 'सोनअर्थ' के डिजिटल लोगो के अनावरण से ब्रांड को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी नई पहचान मिलेगी। इससे अधिक से अधिक ग्राहक जुड़ सकेंगे तथा स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा तैयार किए जा रहे उत्पादों की मार्केटिंग को और बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। उन्होंने कहा कि महिलाओं द्वारा तैयार किए गए स्थानीय उत्पादों को एक ब्रांड के माध्यम से बाजार उपलब्ध कराना महिला सशक्तिकरण एवं आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में सराहनीय पहल है। इस दौरान जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने कहा कि जनपद की स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा तैयार किए जा रहे उत्पादों की गुणवत्ता एवं विशिष्टता को 'सोनअर्थ' ब्रांड के माध्यम से व्यापक पहचान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर ब्रांड की उपस्थिति से उत्पादों की पहुंच स्थानीय बाजार से आगे बढ़कर व्यापक स्तर तक हो सकेगी। इससे समूह की महिलाओं को अपने उत्पादों के विपणन के बेहतर अवसर मिलेंगे और उनकी आय में वृद्धि के साथ आर्थिक आत्मनिर्भरता को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

जिलाधिकारी ने कहा कि स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित करने तथा स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को सशक्त उद्यमी बनाने के लिए जिला प्रशासन निरंतर प्रयासरत है।

'सोनअर्थ' इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से जनपद के स्थानीय उत्पादों को एक विशिष्ट पहचान प्रदान की जा रही है। कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों एवं जनमानस ने इस पहल की सराहना की।





धार्मिक कार्यक्रम में दो महिलाओं से अभद्रता व गाली-गलौज का आरोप,एएसपी और सीओ से कार्रवाई की मांग

आर्यनगर निवासी सास-बहू ने फ़राज़ खान और उनकी पत्नी रुखसार खान पर सार्वजनिक रूप से अपमानित करने व मारपीट की कोशिश का लगाया आरोप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। रॉबर्ट्सगंज नगर पालिका के पास 19 अक्टूबर 2026 की रात आयोजित एक धार्मिक कार्यक्रम के दौरान दो महिलाओं के साथ कथित अभद्रता, गाली-गलौज और मारपीट के प्रयास का मामला सामने आया है। आर्यनगर निवासी दो महिलाओं ने अपने रिश्तेदार फ़राज़ खान पुत्र अजहर खान और उनकी पत्नी रुखसार खान पर सार्वजनिक रूप से अपमानित करने का आरोप लगाया है। शिकायतकर्ताओं के अनुसार, घटना के समय कार्यक्रम में काफी संख्या में लोग मौजूद थे। आरोप है कि दोनों ने उनके साथ अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए गाली-गलौज की और मारपीट करने का प्रयास किया। हालांकि, शिकायत में प्रत्यक्ष मारपीट या हाथापाई होने की बात नहीं कही गई है। मामले में दोनों महिलाओं ने 2 नवंबर 2026 को अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) और क्षेत्राधिकारी (सीओ सदर), सोनभद्र को अलग-अलग शिकायती प्रार्थना-पत्र सौंपकर निष्पक्ष जांच और उचित कानूनी कार्रवाई की मांग की है। जन शिकायत प्रकोष्ठ की प्राप्ति रसीदों पर टोकन संख्या 42 और 41 दर्ज है। फ़राज़ के बड़े भाई साकिब खान की प्रतिक्रिया भी आई सामनेः-शिकायतकर्ता पक्ष की ओर से फ़राज़ खान के बड़े भाई साकिब खान से बातचीत की ऑडियो रिकॉर्डिंग भी उपलब्ध कराई गई है। शिकायतकर्ता पक्ष के अनुसार, बातचीत में साकिब खान ने कथित तौर पर कहा कि फ़राज़ से उनका कोई लेना-देना नहीं है, जिसे जो करना है करे। हालांकि, इस बयान का पूरा संदर्भ और प्रामाणिकता स्वतंत्र पुष्टि होना बाकी है। शिकायतकर्ताओं ने प्रत्यक्षदर्शियों के बयान दर्ज करने, उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग की जांच कराने और आरोप सही पाए जाने पर नियमानुसार कार्रवाई करने की मांग की है। फिलहाल आरोपों की सत्यता पुलिस जांच के बाद ही स्पष्ट होगी। खबर प्रकाशित किए जाने तक आरोपित पक्ष का बयान प्राप्त नहीं हो सका है। उनका पक्ष मिलने पर उसे भी प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।



मधुपुर गोल्डन फ्यूचर पब्लिक स्कूल ने आयोजन किया रंगोली प्रतियोगिता का

सोनभद। दीपावली के शुभ अवसर पर गोल्डेन फ्यूचर पब्लिक स्कूल मधुपुर मे

रंगोली का एक बेहतरीन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय

के एलकेजी से लेकर कक्षा 8 तक के बच्चो ने पार्टिसिपेट किये रंगोली का

मूल्यांकन करने के लिए चंद्रगुप्त मौर्य इंटर कॉलेज

मधुपुर के वरिष्ठ प्रवक्ता कैलाश सिंह, चंद्रगुप्त मौर्य इंटर कॉलेज के अभिभावक संघ के अध्यक्ष विजय कुमार मौर्य, वरिष्ठ

पत्रकार डॉक्टर शिवदास प्रजापति, पत्रकार बंधु उपस्थित रहे एवं

विद्यालय के रंगोली प्रतिभागी कर रहे छात्र-छात्रा।

सोनभद्र - राष्ट्रीय इंटर जूनियर एथलेटिक चैंपियनशिप - 2026 आयोजन निरस्त के संबंध में

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद के सभी एथलीट खिलाड़िया

को सूचित किया जाता है कि जिला एथलेस्टिक्स एसोसिएशन

सोनभद्र के सचिव दिनेश कुमार सिंह द्वारा बताया गया है कि 14 से

16 नवंबर 2026 को आयोजित होने वाली 20 राष्ट्रीय जूनियर एथलेटिक मीट

- 2026 को प्रावृतिक आपदा के चलते अग्रिम आदेश के लिए स्थगित कर दिया गया है,जो कि हैदराबाद तेलंगाना में भारतीय एथलेटिक्स महासंघ/ एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के द्वारा आयोजित किया जाना सुनिश्चित था।

जिलों के एथलीट खिलाड़ी एवं टीम अधिकारियों एवं आयोजन कमेटी

की सभी टीम सदस्यों के भविष्य और सुरक्षा को ध्यान में रखकर प्रावृतिक आपदा चक्रवर्ती

तूफान के चलते कुछ समय के लिए टाल दिया गया है। प्राकृतिक

आपदा के चलते आप सभी संयम से काम लेकर अपनी टीम को भविष्य में

निर्धारित तारीख में खेलने के लिए तैयार रखे।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है
श्री महन्तू
अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज
नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

स्पोर्ट्स







मधुमक्खी डंक मारे तो क्या करें, 6 घरेलू उपचार, ये 5 संकेत दिखें तो तुरंत डॉक्टर को दिखाएं

मुंबई। फर्ज करिए कि आप किसी पार्क, खेत या बगीचे में टहल रहे हैं और अचानक मधुमक्खियों का झुंड आपके पास आ जाए। आप घबराकर भागने की कोशिश करते हैं, लेकिन इस दौरान कुछ मधुमक्खियां आपको डंक मार देती हैं। मधुमक्खी का डंक लगते ही ज्यादातर लोग ये सोचते हैं कि थोड़ी देर दर्द होगा, सूजन होगी और फिर सब ठीक हो जाएगा। अक्सर ऐसा होता भी है। लेकिन हर बार नहीं। कुछ लोगों में मधुमक्खी का डंक शरीर में गंभीर एलर्जिक रिएक्शन भी पैदा कर सकता है। कई बार मधुमक्खी का काटना जानलेवा भी हो सकता है। ऐसे में सही फर्स्ट एड और खतरे के संकेतों को पहचानना जरूरी है। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में बात करेंगे कि मधुमक्खी के डंक मारने से शरीर में क्या होता है। साथ ही जानेंगे कि- अगर मधुमक्खी डंक मार दे तो तुरंत क्या करें? किन स्थितियों में डॉक्टर को दिखाना जरूरी है? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. समीर राठी, कंसल्टेंट, इमरजेंसी मेडिसिन, कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी हॉस्पिटल, मुंबई जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मधुमक्खी के डंक मारने से शरीर में क्या होता है? जवाब- मधुमक्खी के डंक के साथ उसके शरीर का जहर (वेनम) स्किन में चला जाता है। इसके बाद शरीर की प्रतिक्रिया के कारण ये रिएक्शन हो सकते हैं- डंक वाली जगह पर तेज दर्द और जलन हो सकती है। वहां रेडनेस और सूजन हो सकती है। कुछ लोगों में खुजली और गर्माहट महसूस हो सकती है। शरीर का इम्यून सिस्टम जहर के खिलाफ प्रतिक्रिया करता है। इससे सूजन और दूसरे लक्षण पैदा हो सकते हैं। ज्यादातर लोगों में प्रतिक्रिया डंक वाली जगह तक सीमित रहती है और कुछ घंटों में कम हो जाती है। कुल मिलाकर मधुमक्खी का डंक स्किन में जहर पहुंचाता है और शरीर उस जहर के खिलाफ प्रतिक्रिया करता है। इसी वजह से दर्द, जलन और सूजन हो सकती है। सवाल- मधुमक्खी के डंक मारने पर कौन-से संकेत मेडिकल इमरजेंसी की ओर इशारा करते हैं? जवाब- कुछ लोगों का इम्यून सिस्टम मधुमक्खी के जहर के प्रति तेज प्रतिक्रिया करता है। इससे एनाफिलैक्सिस (तेज एलर्जिक रिएक्शन) जैसी गंभीर समस्या हो सकती है। मधुमक्खी ने डंक मारा ये हैं इमरजेंसी के संकेतः- 01 शरीर में एलर्जी, 02 सांस लेने में परेशानी, 03 गले या जीभ में सूजन, 04 चक्कर या बेहोशी, 05 पूरे शरीर पर -पित्ती/खुजली। सवाल- क्या मधुमक्खी का काटना और डंक मारना, दोनों एक ही बातें हैं? जवाब- हां, मधुमक्खी का काटना और डंक मारना, दोनों एक ही बात है। सिर्फ भाषा का फर्क है। आम बोलचाल की भाषा में लोग कहते हैं, 'मधुमक्खी ने काट लिया।' लेकिन मधुमक्खी काटती नहीं, बल्कि डंक मारती है। डंक के जरिए वह स्किन में जहर छोड़ती है। सवाल- अगर मधुमक्खी का डंक स्किन में फंस



जाए तो इससे क्या रिस्क हो सकता है? जवाब- इससे सूजन और जलन हो सकती है। कुछ केस में यह सामान्य से ज्यादा समय तक बनी रह सकती है। साथ ही स्किन को बार-बार छूने या खुजलाने से इन्फेक्शन का रिस्क भी बढ़ सकता है। इसलिए डंक दिखाई दे तो उसे जितनी जल्दी हो सके, सावधानी से हटा देना चाहिए। सवाल- खुद डंक निकाल सकते हैं या डॉक्टर के पास जाना चाहिए? जवाब- अगर डंक स्किन की सतह पर साफ दिखाई दे रहा है और कोई गंभीर लक्षण नहीं है, तो इसे घर पर सावधानी से निकाल सकते हैं। साफ नाखूनों या किसी पतली, सपाट चीज से धीरे से खुरचकर डंक निकाल सकते हैं। कुछ स्थितियों में डॉक्टर से कंसल्ट करना जरूरी है, जैसेकि- डंक आंख, मुंह, गले या नाक के आसपास लगा हो। डंक निकालना मुश्किल हो रहा हो। सांस लेने में दिक्कत हो। चेहरे पर सूजन जैसे एलर्जिक लक्षण दिखाई दें। सवाल- मधुमक्खी के डंक मारने पर तुरंत क्या कदम उठाना चाहिए? जवाब- ऐसी स्थिति में सबसे पहले सुरक्षित जगह पर जाएं। अगर डंक स्किन पर दिख रहा है तो उसे सावधानी से निकालें। मधुमक्खी डंक मारे तो तुरंत क्या करें ? 01 दिख रहा डंक तुरंत निकालें। 02 डंक उंगली पर हैं तो अंगूठी निकालें। 03 जिस चीज से निकालें, वो साफ हो। 04 रगड़ने या खुजलाने से बचें। 05 सुरक्षित जगह पर जाएं। 06 साबुन पानी से डंक की जगह साफ करें। 07 प्रभावित हिस्से पर ठंडी पट्टी लगाएं। 08 परेशानी बढ़े तो इमरजेंसी हेल्प लें। सवाल- क्या डंक वाली जगह को खुजलाना या रगड़ना सही है? जवाब- नहीं, डंक वाली जगह को खुजलाना या जोर से रगड़ना नहीं चाहिए। इससे स्किन में जलन, सूजन बढ़ सकती है। साथ ही संक्रमण का रिस्क भी बढ़ता है। सवाल- अगर मधुमक्खी के डंक का घाव ज्यादा गंभीर नहीं है तो क्या इसके लिए कुछ घरेलू उपाय भी कर सकते हैं? जवाब- हां, अगर सिर्फ डंक वाली जगह पर दर्द, हल्की सूजन, लालिमा या खुजली है और सांस लेने में परेशानी जैसे गंभीर लक्षण नहीं हैं, तो घर पर प्राथमिक उपचार किया जा सकता है। स्किन में फंसा डंक दिखाई दे तो सबसे पहले उसे सावधानी से निकालें। डंक वाली जगह को साबुन और पानी से अच्छी तरह धोएं। सूजन और दर्द कम करने के लिए ठंडी सिकाई करें। प्रभावित जगह को खुजलाने या रगड़ने से बचें। प्रभावित हाथ या पैर को कुछ समय ऊपर रखने से भी सूजन कम करने में मदद मिलती है। खुजली ज्यादा हो तो डॉक्टर या फार्मासिस्ट की सलाह से उपयुक्त एंटीहिस्टामिन दवाएं ले सकते हैं। सवाल- मधुमक्खी के डंक पर कौन-से घरेलू नुस्खे बिल्कुल नहीं आजमाने चाहिए? जवाब- मधुमक्खी के डंक मारने पर अक्सर लोग कई घरेलू उपाय अपनाते हैं, लेकिन इनसे बचना चाहिए। मधुमक्खी के डंक पर डंक को दबाएं/ निचोड़ें नहीं। मिट्टी या गोबर न लगाएं। चूना, टूथपेस्ट न लगाएं।

मिट्टी का तेल न लगाएं। घाव पर थूक न लगाएं। डंक वाली जगह रगड़ें नहीं। डंक वाली जगह सिंकाई न करें। 'ब्लेड / नुकीली चीज से काटें नहीं। सवाल- अगर किसी व्यक्ति को पहले मधुमक्खी के डंक से गंभीर एलर्जी हो चुकी है तो अगली बार क्या सावधानी रखनी चाहिए? जवाब- ऐसे में खास सावधानी रखें। डॉक्टर की सलाह से एपिनेफ्रिन (एड्रेनालिन) ऑटो-इंजेक्टर साथ रखें और इसके इस्तेमाल का तरीका पहले से सीखें। यह एक मेडिकल डिवाइस है, जिसका इस्तेमाल गंभीर एलर्जिक रिएक्शन को कंट्रोल करने के लिए किया जाता है। डंक लगने पर गंभीर एलर्जी के लक्षण दिखें तो तुरंत इसका इस्तेमाल करें और इमरजेंसी मेडिकल हेल्प लें। सवाल- मधुमक्खी के डंक का दर्द और सूजन कितने समय में कम हो जाते हैं?

जवाब- आमतौर पर डंक लगने के बाद दर्द और जलन कुछ घंटों में कम होने लगती है। जबकि सूजन और लालिमा कुछ दिनों तक रह सकती है। कुछ लोगों में सूजन 2-3 दिन तक बढ़ने के बाद धीरे-धीरे कम होती है। मधुमक्खी के डंक का असर हर व्यक्ति में एक जैसा नहीं होता।

ज्यादातर लोगों में दर्द और सूजन धीरे-धीरे अपने आप कम हो जाती है। लेकिन अगर शरीर की प्रतिक्रिया सामान्य से अलग है,

तो तुरंत मेडिकल हेल्प लें। सवाल- अगर ढेर सारी मधुमक्खियां एक साथ अटैक कर दें तो बचने के लिए क्या करें? जवाब- ऐसी स्थिति में तुरंत कुछ कदम उठाएं- जितनी जल्दी हो सके किसी बंद जगह जैसे कमरे या कार में चले जाएं। चेहरा और सिर ढकें और मुंह-नाक को कपड़े से ढक लें।

घबराकर हाथ-पैर न चलाएं। मधुमक्खियों को मारने या भगाने की कोशिश न करें। पानी में न कूदें, क्योंकि मधुमक्खियां पानी के ऊपर भी इंतजार कर सकती हैं।

अगर डंक लग जाए और सांस लेने में परेशानी हो, चेहरे/गले में सूजन हो या चक्कर आएं तो तुरंत मेडिकल हेल्प लें। सवाल- जहां मधुमक्खी के काटने का रिस्क हो, वहां किन तैयारियों के साथ जाना चाहिए? जवाब- इसके लिए पहले से कुछ सावधानियां बरतें, जैसेकि- फुल स्लीव्स वाले कपड़े, फुल पैंट और जूते पहनें।

तेज खुशबू वाले परफ्यूम, डियो या हेयर प्रोडक्ट्स लगाने से बचें। खाने-पीने की मीठी चीजों को खुला न रखें। आसपास मधुमक्खियों का छत्ता दिखे तो उससे सुरक्षित दूरी बनाए रखें। जिन लोगों को मधुमक्खी के डंक से गंभीर एलर्जी है, वे डॉक्टर द्वारा बताई गई एपिनेफ्रिन ऑटो-इंजेक्टर जैसी इमरजेंसी दवा साथ रखें।

आई एलर्जी के मामले,ये 9 संकेत दिखें तो न करें इग्नोर, एक्सपर्ट से समझें जरूरी सावधानियां

नयी दिल्ली।तेज धूप और गर्म हवा आंखों को प्रभावित करती है। इससे आंखों में जलन और रेडनेस की समस्या हो सकती है। आमतौर पर लोग इसे नजरअंदाज कर देते हैं, जबकि ये किसी बड़ी परेशानी का संकेत भी हो सकता है। अल्ट्रावायलेट एक्सपोजर, डिहाइड्रेशन और धूल-मिट्टी आंखों को प्रभावित करते हैं। इससे आई-इन्फेक्शन हो सकता है। इसलिए गर्मियों में आई एलर्जी के केस बढ़ जाते हैं। आज 'जरूरत की खबर' में समझेंगे कि गर्मी का आंखों पर क्या असर पड़ता है। साथ ही जानेंगे कि-किन लोगों को आई-इन्फेक्शन का रिस्क ज्यादा होता है? आई इन्फेक्शन से बचने के आसान टिप्स क्या हैं? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. श्रेया गुप्ता, कंसल्टेंट, ऑप्थेल्मोलॉजी, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से- सवाल- गर्मियों में ज्यादा टेम्परेचर और तेज धूप का आंखों पर क्या असर पड़ता है? जवाब- गर्मियों में ये तीन चीजें होती हैं- धूप तेज होती है, तापमान बहुत ज्यादा होता है। अल्ट्रावायलेट किरणों का असर बढ़ जाता है। वातावरण में नमी, धूल-मिट्?टी और प्रदूषण बढ़ जाते हैं। ये तीनों फैक्टर आंखों पर ये प्रभाव डालते हैं- तेज धूप में अल्ट्रावायलेट किरणें आंखों की बाहरी परत (कॉर्निया) और लेंस को नुकसान पहुंचा सकती हैं। लंबे समय में मोतियाबिंद का खतरा बढ़ सकता है। गर्मी और लू से आंखों की नमी जल्दी कम होती है, जिससे ड्राईनेस, जलन और रेडनेस बढ़ती है। तेज रोशनी में आंखें खोलना मुश्किल होता है और सिर या आंखों में दर्द हो सकता है। लंबे समय तक धूप में रहने से विजन कुछ समय के लिए धुंधला हो सकता है। गर्मियों में धूल, पसीना और प्रदूषण बढ़ता है, जिससे आंखों में एलर्जी, खुजली और इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ जाता है। गर्मियों में तापमान बढ़ने से आंखों की नमी जल्दी कम हो जाती है, जिससे ड्राईनेस बढ़ती है। ड्राई आई सिंड्रोम, आई एलर्जी, आई स्ट्रेन (थकान) आंखों में जलन, दर्द, आंखों में खुजली, आंखों से पानी आना, आंखों में धुंधलापन, केराटायटिस (कॉर्निया में सूजन) कंजंक्टवाइटिस, फोटोफोबिया, मोतियाबिंद। सवाल- आंखों के कौन-से लक्षण नजरअंदाज नहीं करने चाहिए? क्या गर्मियों में ये ज्यादा गंभीर हो सकते हैं? जवाब- आंखों में लगातार दर्द या तेज जलन होना सामान्य नहीं है। अचानक धुंधला या कम दिखाई देना किसी गंभीर समस्या का संकेत हो सकता है। गर्मियों में ये गंभीर हो सकते हैं- आंखों की थकान, आंखों में दर्द, जलन या चुभन, रोशनी से परेशानी, रेडनेस चिपचिपा डिस्चार्ज, ज्यादा पानी, धुंधला, आना, दिखना, सूजन, सवाल- आंखों के संक्रमण और एलर्जी के मुख्य रिस्क फैक्टर्स क्या हैं? जवाब- गर्मियों में ज्यादा तापमान और पसीने से आंखों के आसपास बैक्टीरिया व वायरस बढ़ सकते हैं। धूल-मिट्टी और प्रदूषण आंखों की सतह को इरिटेट करके एलर्जिक रिएक्शन बढ़ाते हैं। युवी किरणें आंखों की प्रोटेक्टिव लेयर को कमजोर कर सकती हैं। गंदे हाथों से आंख छूने या तौलिया-रूमाल शेयर करने से संक्रमण फैलता है।स्विमिंग पूल के क्लोरीन या दूषित पानी से आंखों में जलन व इन्फेक्शन हो सकता है।सवाल- डिहाइड्रेशन होने पर आई हेल्थ और विजन कम्फर्ट पर क्या असर पड़ता है? जवाब- शरीर में पानी कम होने से आंखों पर ये प्रभाव पड़ते हैं- इससे आंखों में ड्राईनेस हो सकती है। आंखों का लुब्रिकेशन घटने से असहजता बढ़ती है। पलक झपकाने पर चुभन या किरकिरापन महसूस हो सकता है। लंबे समय तक डिहाइड्रेशन से फोकस करने में कठिनाई हो सकती है। इससे विजन कम्फर्ट कम हो सकता है। आंखों की सतह पर माइक्रो-डैमेज का रिस्क बढ़ सकता है। सवाल- किन लोगों को समर सीजन में आई प्रॉब्लम्स का रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- कुछ लोगों को रिस्क ज्यादा होता है- जो तेज धूप या गर्म वातावरण में काम करते हैं। जो एयर-कंडीशन या सूखे वातावरण में लंबे समय तक रहते हैं। जो कॉन्टैक्ट लेंस यूज करते हैं। छोटे बच्चे, जो अपनी आंखों की सेफ्टी नहीं रख सकते हैं।



बुजुर्ग, जिनकी आंखों में आंसू बनने की क्षमता कम हो गई है। जो एलर्जी-प्रोन हैं और जिनकी आंखें सेंसिटिव हैं। जो ऐसे मेडिकेशन पर हैं, जिससे आंखों की ड्राईनेस बढ़ती है। सवाल- अगर पहले से ड्राई आई, एलर्जी की समस्या है तो गर्मियों में क्या सावधानियां बरतनी चाहिए? जवाब- इसके लिए ये सावधानियां बरतना जरूरी है- आंखों को धूल और धूप से बचाने के लिए प्रोटेक्टिव सनग्लासेस पहनें। डॉक्टर द्वारा बताई दवा या आई ड्रॉप लें। आंखों को रगड़ने की आदत से बचें, इससे सूजन बढ़ सकती है। आंखें और चेहरा नियमित रूप से साफ रखें। एलर्जी ट्रिगर्स जैसे पोलन (परागकण) या धुएं से दूर रहें। जरूरत पड़ने पर ठंडी पट्टी से आंखों को आराम दें।सवाल- गर्मियों में आई-हेल्थ के लिए डाइट और हाइड्रेशन कैसा होना चाहिए? जवाब- इसके लिए इन बातों का ध्यान रखें- रोज 2.5-3 लीटर तक पानी या फ्लूइड लेना फायदेमंद है।

खीरा, ककड़ी, संतरा, तरबूज जैसे हाई-वॉटर कंटेंट फूड्स लेना फायदेमंद है। एंटीऑक्सिडेंट युक्त फल आंखों की सेल्स को नुकसान से बचाते हैं।

विटामिन-ए और ल्यूटिन युक्त हरी सब्जियां विजन को सपोर्ट करती हैं। ओमेगा-3 फैटी एसिड आई हेल्थ को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। भोजन में बहुत ज्यादा नमक और शुगर से बचना जरूरी है।

बारिश में धुल सकता है भारत-न्यूजीलैंड दूसरा वनडे,टीम इंडिया ने प्रैक्टिस नहीं की, न्यूजीलैंड ने इंडोर अभ्यास किया,आज वेलिंगटन में मुकाबला

स्पोर्ट डेस्क। भारत-न्यूजीलैंड के बीच दूसरा वनडे मैच शनिवार को वेलिंगटन में खेला जाएगा। मुकाबला कल सुबह 7:30 बजे से हैनरी स्टेडियम में शुरु होगा। हालांकि मैच तभी होगा, जब बारिश ना आए। ऐसा इसलिए क्योंकि वेलिंगटन में शनिवार को 60फीसदी तक बारिश की संभावना जताई गई है। मैच शुरु होने के 1 घंट पहले से ही पानी गिरने का अनुमान है। इसके बाद पूरे मैच के दौरान भी इसका खतरा बना रहेगा। बारिश के कारण ही भारतीय टीम ने आज का अपना प्रैक्टिस सेशन रद्द कर दिया। वहीं न्यूजीलैंड को वेलिंगटन कॉलेज की इंडोर फैसिलिटी में अभ्यास करना पड़ा। पिछले मैच में भी बारिश की वजह से 3 बार खेल रुका था:- भारत 5 मैचों की सीरीज में 1-0 से आगे है। टीम ने ऑकलैंड में खेले गए पहले मैच में न्यूजीलैंड को 5 विकेट से हराया था। इस मैच में भी बारिश की वजह से 3 बार खेल रुका। करीब 1:30 घंटे तक खिलाड़ी मैदान से बाहर रहे। न्यूजीलैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 185 रन बनाए। इसके बाद बारिश के कारण भारत को 32 ओवर में 143 रन का टारगेट मिला, जिसे टीम ने 14.5 ओवर में हासिल किया। भारत वेलिंगटन में न्यूजीलैंड से नहीं हारा:-वेलिंगटन में न्यूजीलैंड अब तक भारत को नहीं हरा पाया है। यहां दोनों के बीच खेले गए 3 मैचों में भारत ने 2 में जीत दर्ज की है। वहीं दोनों टीमों के बीच ओवरऑल 124 वनडे मुकाबले खेले गए हैं। इनमें भारत ने 64 और न्यूजीलैंड ने 52 मैच जीते हैं। कप्तान गिल और कोहली पर नजरें:-भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने इस साल भारत के लिए सबसे ज्यादा रन बनाए हैं। उन्होंने 13 वनडे मुकाबले में 932 रन बनाए हैं। इस दौरान उन्होंने एक दोहरा शतक भी लगाया है। गिल ने सीरीज के पहले मैच में भी 37 रन बनाए थे। उन्होंने कोहली के साथ मिलकर दूसरे विकेट के लिए 113 रन की साझेदारी की थी। कोहली ने 74 रन बनाए थे। वहीं ऑकलैंड में शून्य पर आउट होने वाले रोहित शर्मा अब बड़ी पारी खेलना चाहेंगे। न्यूजीलैंड को डेरिल मिचेल से उम्मीदें:-डेरिल मिचेल इस साल टीम के टॉप रन स्कोरर है। उन्होंने 2026 में 7 मैचों में 501 रन बनाए हैं।उन्होंने भारत के खिलाफ भी लगातार परफॉर्म किया है। वे भारत के खिलाफ पिछले 8 मुकाबलों में 4 शतक और 2 अर्धशतक लगा चुके हैं। दोनों टीमों की पॉसिबल प्लेइंग-11:-भारतः शुभमन गिल (कप्तान), रोहित शर्मा, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, अक्षर पटेल, केएल राहुल (विकेटकीपर), नमन धीर, अनशुल कंबोज, औकिब नबी, गुरनूर बराड़, अर्शदीप सिंह। न्यूजीलैंडः टिम साइफर्ट, विल यंग, हेनरी निकोल्स, डैरिल मिचेल, टॉम लैथम (विकेटकीपर), ग्लेन फिलिप्स, मिचेल सैंटनर (कप्तान), नाथन स्मिथ, काइल जैमीसन, जैकब डफी, ब्लेयर टिकनर।



तन्वी ने यूथ ओलंपिक्स में सिल्वर जीता,बैडमिंटन में ऐसा करने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी-चीनी खिलाड़ी से हारीं

स्पोर्ट डेस्क। भारत की बैडमिंटन खिलाड़ी तन्वी पत्री ने यूथ ओलंपिक गेम्स में महिला सिंगल्स में सिल्वर मेडल जीता है। 15 साल की तन्वी इस इवेंट में सिल्वर जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी हैं। सेनेगल के डकार में गुरुवार को खेले गए फाइनल में तन्वी को चीन की मौजूदा वर्ल्ड जूनियर चैंपियन झांग यी शिन ने 21-15, 13-21, 24-26 से हराया। 1 घंटे 22 मिनट चले मुकाबले में तन्वी ने 5 मैच प्वाइंट बचाए और 3 बार गोल्ड जीतने के करीब पहुंचीं। पहला गेम (21-15): शुरुआत में तन्वी ने लय हासिल करने में थोड़ा समय लिया। वे एक समय 3-5 से पिछड़ रही थीं। इसके बाद उन्होंने लगातार 7 पॉइंट जीतकर 10-5 की बढ़त बना ली। पंच टॉस और नेट पर शानदार खेल के दम पर तन्वी ने 25 मिनट में पहला गेम 21-15 से जीत लिया। दूसरा गेम (13-21): तन्वी ने दूसरे गेम की शुरुआत भी अच्छी की और 4-0 की बढ़त बना ली। हालांकि, कोर्ट पर हवा के बहाव (ड्रिफ्ट) के कारण उनके शॉट्स पर कंट्रोल प्रभावित हुआ। मिड-गेम इंटरवल के बाद झांग ने खेल पर पकड़ बनाई और 21-13 से गेम जीतकर मुकाबला 1-1 से बराबर कर दिया। तीसरा गेम (24-26): निर्णायक गेम में झांग ने क्रॉस-कोर्ट ड्रॉप शॉट्स से तन्वी को परेशानी में डाला और 19-10 की बढ़त बना ली। इसके बाद तन्वी ने लगातार संघर्ष करते हुए स्कोर का अंतर कम किया। उन्होंने झांग के 5 मैच पॉइंट बचाए और खुद भी 3 बार गोल्ड मेडल जीतने से एक पॉइंट दूर पहुंचीं। हालांकि, झांग ने दबाव में बेहतर खेल दिखाया और 26-24 से गेम जीतकर गोल्ड मेडल अपने नाम कर लिया। यूथ ओलंपिक्स में सिल्वर जीतने वाली तीसरी भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी-तन्वी से पहले यूथ ओलंपिक गेम्स के इंडिविजुअल बैडमिंटन इवेंट में दो भारतीय खिलाड़ी सिल्वर मेडल जीत चुके हैं। एचएस प्रणय ने 2010 में और लक्ष्य सेन ने 2018 में पुरुष सिंगल्स में सिल्वर मेडल जीता था। लक्ष्य सेन ने 2018 में मिक्स्ड टीम इवेंट में भी गोल्ड मेडल जीता था। इस तरह तन्वी यूथ ओलंपिक्स के इंडिविजुअल बैडमिंटन इवेंट में मेडल जीतने वाली तीसरी भारतीय और महिला सिंगल्स में सिल्वर जीतने वाली पहली भारतीय बनीं। बीएआई ने दी बधाई, कहा- 15 साल की उम्र में सिल्वर जीतना असाधारण उपलब्धिः-तन्वी की उपलब्धि पर बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया (बीएआई) के जनरल सेक्रेटरी ने उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा,'तन्वी पत्री ने यूथ ओलंपिक गेम्स में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल कर पूरे देश को गौरवान्वित किया है।



महज 15 साल की उम्र में सिल्वर मेडल जीतना असाधारण उपलब्धि है।' उन्होंने आगे कहा, 'पूरी प्रतियोगिता में उनका जुझारू रवैया, संयम और प्रदर्शन युवा खिलाड़ियों की क्षमता को दिखाता है। यह भारतीय खेल जगत के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।

ख्वाजा बोले- बॉल टेम्परिंग की जानकारी पूरी टीम को थी,दूसरे टेस्ट में भी सैंडपेपर का इस्तेमाल हुआ,सिर्फ स्मिथ-वॉर्नर-बैनक्रॉफ्ट की गलती नहीं थी

स्पोर्ट डेस्क। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व ओपनर उस्मान ख्वाजा ने 2018 के सैंडपेपर कांड को लेकर बड़ा खुलासा किया है। उनका दावा है कि साउथ अफ्रीका के खिलाफ केपटाउन टेस्ट में गेंद से छेड़छाड़ की जानकारी पूरी ऑस्ट्रेलियाई टीम को थी। ख्वाजा ने सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड को दिए इंटरव्यू में कहा- 'इसमें बल्लेबाज, गेंदबाज और सपोर्ट स्टाफ सभी शामिल थे।' उन्होंने यह भी कहा कि पोर्ट एलिजाबेथ टेस्ट में भी सैंडपेपर का इस्तेमाल किया गया था। 2018 में आरोप लगने के बाद क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने जांच की थी। तब टीम के बाकी खिलाड़ियों ने इसमें शामिल होने से इंकार कर दिया था। इस मामले में स्टीव स्मिथ, डेविड वॉर्नर और कैमरन बैनक्रॉफ्ट को लिखित में क्लीन चिट दिया गया। क्या था 2018 का बॉल टैम्परिंग या सैंडपेपर कांड? फरवरी-मार्च 2018 में ऑस्ट्रेलियाई टीम 4 मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए साउथ अफ्रीका के दौरे पर थी। केपटाउन में तीसरे टेस्ट मैच के दौरान बैनक्रॉफ्ट गेंद पर सैंडपेपर रगड़ते हुए पकड़े गए। वे सैंडपेपर का टुकड़ा अपनी पैंट में छिपाने की कोशिश कर रहे थे। इसके बाद तब के कप्तान स्टीव स्मिथ ने स्वीकार किया था कि टीम के लीडरशिप ग्रुप ने गेंद से छेड़छाड़ की योजना बनाई थी। इस मामले में कप्तान स्मिथ और उपकप्तान डेविड वॉर्नर पर 12-12 महीने का बैन लगा था। बैनक्रॉफ्ट को 9 महीने के लिए निलंबित किया गया था। स्मिथ पर अतिरिक्त 12 महीने तक ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट में नेतृत्व की जिम्मेदारी लेने पर भी रोक लगाई गई थी। वॉर्नर पर कप्तानी का आजीवन प्रतिबंध लगा था, जिसे 2024 में हटा दिया गया। ख्वाजा जल्द रिलीज होने वाली अपनी आत्मकथा 'सब्र' में भी इस विवाद पर विस्तार से लिख रहे हैं। उनका कहना है कि वे लंबे समय से चाहते थे कि इस मामले की पूरी सच्चाई सामने आए। उन्होंने कहा कि ड्रेसिंग रूम में भी उन्होंने खिलाड़ियों से इसे पूरी टीम की जिम्मेदारी लेने को कहा था। उनके मुताबिक, उन्होंने कहा था कि यह टीम ने किया है और सभी को मिलकर इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। 2021 में गेंदबाजों ने आरोप नकारे थेः-ख्वाजा का ताजा बयान ऑस्ट्रेलिया के चार प्रमुख गेंदबाजों के पुराने बयान से अलग है। 2021 में मिचेल स्टार्क, पैट कमिंस, जोश हेजलवुड और नाथन लियोन ने संयुक्त बयान जारी कर गेंद से छेड़छाड़ की जानकारी होने के आरोपों को नकार दिया था। ख्वाजा ने कहा कि वे चाहते थे कि टीम के सभी खिलाड़ी इस मामले की जिम्मेदारी लें। उन्हें उम्मीद थी कि आठ साल के भीतर कोई दूसरा खिलाड़ी खुद सामने आकर सच्चाई बताएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने ख्वाजा से पूछताछ नहीं कीः-इस विवाद के बाद क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने जांच की थी। ख्वाजा ने दावा किया कि जांच के दौरान बोर्ड ने उनसे कभी पूछताछ नहीं की, जबकि वे पूरे टेस्ट में बैनक्रॉफ्ट के पास बैठे थे। उन्होंने कहा- 'मैं कैमरन बैनक्रॉफ्ट के बगल में बैठा था। इसके बावजूद मेरा इंटरव्यू नहीं लिया गया। मैं फोन आने का इंतजार कर रहा था, लेकिन फोन कभी नहीं आया।

कमल हासन हुए 72 के- नाथूराम गोडसे को कहा पहला हिंदू आतंकवादी,कभी कहा- सनातन की बेड़ियां तोड़ने का हथियार शिक्षा, पढ़िए बड़े बयान और विवादों की कहानी

मुंबई। भारतीय सिनेमा के सबसे मंझे हुए एक्टर माने जाने वाले कमल हासन आज 72 साल



के हो चुके हैं। फिल्मों में सबसे ज्यादा एक्सपैरिमेंट करने वाले कमल हासन से कई फिल्ममेकर इस बात पर झगड़ चुके हैं कि उनकी परफेक्शन की ललक से कई बार फिल्म का बजट दोगुना हो जाता हैं। लेकिन यही परफेक्शन कारण है कि वो इकलौते एक्टर हैं, जिनकी 7 फिल्में ऑस्कर गईं। इन्हें 19 बार बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड मिला, वहीं पद्मश्री, पद्मभूषण जैसे बड़े सम्मान भी उनके हिस्से आए। लेकिन यही कामल हासन कई मौकों पर अपने बेबाक बयानों और निजी रिश्तों के चलते बड़े विवादों में फंस चुके हैं। कभी नाथूराम गोडसे को देश का पहला हिंदू आतंकवादी कहने पर उनकी आलोचना हुई, तो कभी सत्ता, धर्म और व्यवस्था पर सवाल खड़े किए। हर बार बयान पर कायम रहे और कोर्ट से चेतावनी मिलने के बावजूद उन्होंने माफी मांगने से इनकार कर दिया। 2025 में फिल्म 'ठग लाइफ' के ऑडियो लॉन्च इवेंट में कमल हासन ने कहा, 'उइरे उरावे तमीज', यानी तमिल उनके जीवन और रिश्तों का हिस्सा है। इवेंट में कन्नड़ सुपरस्टार शिवराजकुमार को संबोधित करते हुए कमल हासन ने कहा कि शिवराजकुमार भी उनके परिवार का हिस्सा हैं, क्योंकि उनकी भाषा कन्नड़, तमिल से पैदा हुई है। टिप्पणी ने कर्नाटक में बड़ा विवाद खड़ा कर दिया। उनके खिलाफ विरोध प्रदर्शन हुए। बीजेपी नेताओं और कन्नड़ समर्थक संगठनों ने सार्वजनिक माफी की मांग की। कर्नाटक बीजेपी अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र ने इसे कन्नड़ भाषा और करोड़ों कन्नड़ भाषियों का अपमान बताया। कुछ संगठनों ने फिल्म बैन की मांग कर 'ठग लाइफ' के पोस्टर फाड़े गए। कमल हासन के खिलाफ कई शिकायतें दर्ज हुईं। कर्नाटक फिल्म चैंबर ऑफ कॉमर्स ने भी उनकी फिल्म ठग लाइफ की रिलीज का विरोध किया। 3 जून 2025 को सुनवाई के दौरान कर्नाटक हाईकोर्ट ने कमल हासन को माफी मांगकर विवाद खत्म करने की सलाह दी। लेकिन कमल हासन ने इनकार कर दिया। कोर्ट ने तब कड़े शब्दों में कमल की निंदा की। 5 जून 2025 को फिल्म रिलीज हुई, लेकिन इसे कर्नाटक में बैन कर दिया गया। कमल सुप्रीम कोर्ट गए, जहां उन्हें राहत दी गई, लेकिन विवाद के बीच कर्नाटक के डिस्ट्रीब्यूटर्स ने फिल्म रिलीज से इनकार कर दिया। गोडसे को आतंकवादी कहने पर विवादः- कहा- 'आजाद भारत का पहला आतंकवादी एक हिंदू था। उसका नाम नाथूराम गोडसे था।' 2019 में कमल हासन ने मक्कल नीधि मय्यम नाम से पार्टी बनाकर चुनाव लड़ा। तमिलनाडु की अरवाकुरिची विधानसभा सीट पर उपचुनाव के प्रचार में कमल हासन ने कहा, 'आजाद भारत का पहला आतंकवादी एक हिंदू था। उसका नाम नाथूराम गोडसे था।' हिंदू संगठनों से जुड़े कई लोगों ने उनके बयान पर आपत्ति जताई। आरोप लगाया गया कि वह चुनाव के दौरान धर्म के आधार पर लोगों को बांटने की कोशिश कर रहे हैं। उनके खिलाफ शिकायतें भी दर्ज कराई गईं। कमल हासन ने सफाई में कहा कि उन्होंने तमिल में 'थीविरावादी' शब्द का इस्तेमाल किया था, जिसका अर्थ अतिवादी या उग्रवादी होता है। लेकिन हिंदी और अंग्रेजी की कई मीडिया रिपोर्ट्स में इसका अनुवाद 'आतंकवादी' किया गया। फिल्म 'विश्वरूपम' विवादः-कहा- एमएफ हुसैन जैसे मेरे सामने भी देश छोड़ने की स्थिति पैदा की गई, धर्मनिरपेक्ष देश में बसूंगा-2013 की फिल्म 'विश्वरूपम' को कमल हासन ने खुद लिखा, लीड रोल निभाया, निर्देशित और प्रोड्यूस किया था। फिल्म के कुछ दृश्यों और मुस्लिम किरदारों के चित्रण पर कई मुस्लिम संगठनों का आरोप था कि फिल्म में मुस्लिम समुदाय को आतंकवाद से जोड़कर दिखाया गया है और इससे उनकी धार्मिक भावनाएं आहत हो सकती हैं। फिल्म को सेंसर बोर्ड से मंजूरी मिल चुकी थी, लेकिन विवाद के बाद तमिलनाडु सरकार ने कानून-व्यवस्था बिगड़ने की आशंका का हवाला देते हुए 23 जनवरी 2013 को इसकी रिलीज पर दो हफ्ते का प्रतिबंध लगा दिया। कमल हासन ने इस फैसले को अदालत में चुनौती दी। शुरुआत में उन्हें राहत मिली, लेकिन बाद में हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच ने प्रतिबंध बरकरार रखा। रिलीज लगातार टलती रही और कमल हासन पर आर्थिक दबाव बढ़ता गया। कमल हासन ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि उन्होंने फिल्म के लिए घर गिरवी रखा है। अगर फिल्म रिलीज नहीं हुई तो वह दिवालिया हो सकते हैं।

उन्होंने कहा कि मशहूर पेंटर एमएफ हुसैन को जैसे देश छोड़ना पड़ा, वैसी ही स्थिति अब उनके सामने है। उन्होंने कहा कि वो तमिलनाडु छोड़ धर्मनिरपेक्ष राज्य ढूंढेंगे, अगर नहीं मिला तो धर्मनिरपेक्ष दूसरे देश में बसेंगे। विवाद के बीच उन्होंने मुस्लिम संगठनों के प्रतिनिधियों को फिल्म दिखाने की पहल भी की। आखिरकार राज्य सरकार की मध्यस्थता में कमल हासन और मुस्लिम संगठनों के बीच छह घंटे चली बैठक के बाद समझौता हुआ। कमल हासन फिल्म के 7 विवादित सीन म्यूट किए। तब जाकर 7 फरवरी 2013 को फिल्म सिनेमाघरों में पहुंची। विवादों के बावजूद 'विश्वरूपम' को दर्शकों ने पसंद किया। फिल्म को 2 राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी मिले। एलन मस्क से विवादः-कहा 'भारत किसी का गुलाम नहीं, अरबपति किसी देश की नीतियां तय नहीं कर सकता'

अक्टूबर 2026 में एलन मस्क ने भारत में अपनी सैटेलाइट इंटरनेट सेवा स्टारलिंक की लॉन्चिंग में हो रही देरी पर दावा किया था कि कंपनी 165 से ज्यादा देशों में लाइसेंस हासिल कर चुकी है और भारत में भी करीब पांच साल से सरकारी प्रक्रियाएं पूरी करने की कोशिश कर रही है। मस्क ने सोशल मीडिया पर मुकेश अंबानी की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'क्या अंबानी भारत के असली बॉस हैं?' जवाब में कमल हासन ने जवाब देते हुए कहा कि कोई भी अरबपति किसी देश की नीतियां तय नहीं कर सकता, चाहे वह भारतीय हो या अमेरिकी। साथ ही उन्होंने लिखा, 'भारत एक आजाद लोकतंत्र है, किसी का गुलाम नहीं। भारत का भविष्य भारत की जनता तय करेगी, न कि पश्चिम के स्वार्थी तत्व, उनके दोहरे मापदंड या कोई अरबपति।' तब कंगना रनोट ने भी कमल के



बयान का समर्थन किया था। सनातन पर बयान से विवादः- 'तानाशाही और सनातन की बेड़ियां तोड़ने का हथियार शिक्षा है'- अगस्त 2025 में कमल राज्यसभा सांसद बने। चेन्नई में एक्टर सूर्या की संस्था अग्रम फाउंडेशन के इवेंट में उन्होंने शिक्षा की जरूरत पर कहा कि शिक्षा ही वह हथियार है, जिससे तानाशाही और सनातन की बेड़ियों को तोड़ा जा सकता है। बीजेपी की तमिलनाडु की उपाध्यक्ष खुशबू सुंदर ने कहा कि शिक्षा को सबसे बड़ा हथियार बताने वाली बात से सहमति हो सकती है, लेकिन उसके साथ सनातन धर्म को जोड़ना अनावश्यक था। दूसरे बीजेपी नेताओं ने भी कमल हासन के बयान की आलोचना की।

धर्म पर विवादः-'बेटियों के एडमिशन फॉर्म में धर्म-जाति का कॉलम खाली छोड़ा, नई पीढ़ी को जाति की पहचान से ऊपर उठना चाहिए' 2018 में कमल ने सोशल मीडिया पर बताया था कि उन्होंने अपनी दोनों बेटियों के स्कूल एडमिशन फॉर्म में जाति और धर्म का कॉलम खाली छोड़ दिया था। उनका मानना था कि नई पीढ़ी को जाति की पहचान से ऊपर उठना चाहिए। इस बयान के बाद उनकी बेटी श्रुति हासन का एक पुराना



इंटरव्यू वायरल हो गया, जिसमें उन्होंने खुद को अयंगर समुदाय से जुड़ा बताया था। इस पर कमल हासन की जमकर आलोचना हुई। तमिलनाडु सरकार से बाढ़ पर विवादः-कहा- बाढ़ राहत के लिए चंदा क्यों मांगा, सरकार के पास पर्याप्त संसाधन होने चाहिए :- दिसंबर 2015 में चेन्नई और आसपास के इलाकों में भारी बारिश के कारण बाढ़ जैसे हालात बन गए थे। हजारों लोग प्रभावित हुए और राज्य सरकार की तैयारियों पर सवाल उठने लगे थे। कमल हासन ने राहत कार्यों को लेकर अपनी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने सरकारी व्यवस्था को नाकाम बताते हुए सवाल उठाया कि राहत के लिए लोगों से चंदा क्यों मांगा जा रहा है, जबकि सरकार के पास पर्याप्त संसाधन होने चाहिए। उनकी इस टिप्पणी पर तत्कालीन मुख्यमंत्री जयललिता की सरकार के वित्त मंत्री ओ. पन्नीरसेल्वम भड़क गए। उन्होंने कमल हासन पर निशाना साधते हुए कहा कि अभिनेता को जमीनी हालात की जानकारी नहीं है। उन्होंने कमल को 'कन्फ्यूज्ड' बताते हुए कहा कि वह बिना पूरी जानकारी के बेतुकी बातें कर रहे हैं। कमल हासन ने इसके बाद सफाई दी और माफी मांगी। 7. नायकन डायरेक्टर्स से विवादः- कहा- 'प्रोड्यूसर पुराने तरीके से सोचते थे और फिल्मों को कला के बजाय कारोबार की तरह देखते थे' कमल हासन को भारतीय सिनेमा के उन कलाकारों में गिना जाता है जो अपनी फिल्मों की कहानी, तकनीक, मेकअप और दूसरे क्रिएटिव पहलुओं में गहरी दिलचस्पी लेते हैं। लेकिन उनकी यही दखलंदाजी कई बार दूसरे फिल्ममेकर्स के साथ मतभेद की वजह भी बनी। मणिरत्नम के निर्देशन में बनी यह फिल्म नायकन 1987 में रिलीज हुई थी और इसे भारतीय सिनेमा की यादगार फिल्मों में गिना जाता है। फिल्म की रिलीज के 25 साल पूरे होने पर कमल हासन ने अखबार 'द हिंदू' में इसकी मेकिंग पर एक लेख लिखा। इसमें उन्होंने फिल्म के प्रोड्यूसर मुक्ता श्रीनिवासन के काम करने के तरीके पर लिखा था कि प्रोड्यूसर पुराने तरीके से सोचते थे और फिल्मों को कला के बजाय कारोबार की तरह देखते थे।

यह बात मुक्ता श्रीनिवासन को पसंद नहीं आई। उन्होंने कमल हासन को लीगल नोटिस भेज दिया। उनका आरोप था कि कमल ने लेख में उनके योगदान को कम करके दिखाया और फिल्म की सफलता का श्रेय खुद लेने की कोशिश की। ऐसे ही मतभेद दूसरे निर्देशकों के साथ भी सामने आए। फिल्म 'गुना' के निर्देशन की जिम्मेदारी शुरुआत में मलयालम फिल्ममेकर सिबी मलयिल को दी जानी थी। लेकिन बाद में दोनों के बीच तालमेल नहीं बैठा और सिबी इस प्रोजेक्ट से अलग हो गए। फिल्म 'थेवर मगन' की शूटिंग के दौरान भी निर्देशक भरतन के साथ कमल के मतभेदों की चर्चा रही। इसके अलावा मलयालम फिल्ममेकर बालचंद्र मेनन ने भी एक फिल्म इसलिए अधूरी छोड़ दी, क्योंकि कमल फिल्ममेकिंग में हस्तक्षेप कर रहे थे। निजी जिंदगी से जुड़े ये विवाद भी पढ़िएः-16 साल की एक्ट्रेस को बिना सहमति किस किया-साल 1986 में रिलीज हुई फिल्म 'पुन्नगई मन्नन' के एक सीन में कमल हासन और एक्ट्रेस रेखा हैरिस के बीच किसिंग सीन था। उस समय रेखा की उम्र करीब 16 साल थी। रेखा हैरिस ने 2020 में एक इंटरव्यू में आरोप लगाया कि उन्हें इस सीन के बारे में पहले से जानकारी नहीं दी गई थी। उनके मुताबिक, शूटिंग के दौरान अचानक यह सीन फिल्माया गया। उन्होंने कहा कि अगर उन्हें पहले से पता होता कि ऐसा सीन शूट किया जाएगा तो वह इसके लिए सहमति नहीं देतीं। रेखा ने यह भी दावा किया कि उन्होंने बाद में निर्देशक के. बालाचंदर से इस बारे में बात की थी, लेकिन उन्हें संतोषजनक जवाब नहीं मिला। उन्होंने कहा कि इस घटना के लिए उन्हें कभी माफी भी नहीं मिली। एक्स गर्लफ्रेंड का आरोप, प्रोडक्शन में काम करवाया, पैसे नहीं दिएः- कमल हासन की पूर्व पार्टनर और एक्ट्रेस गौतमी ने भी उन पर फीस रोकने के आरोप लगाए। दोनों करीब 13 साल तक साथ रहे और अक्टूबर 2016 में अलग हो गए। फरवरी 2018 में गौतमी ने अपने ब्लॉग में लिखा कि कमल हासन और उनकी प्रोडक्शन कंपनी राजकमल फिल्म्स इंटरनेशनल पर उनके कॉस्ट्यूम डिजाइनिंग के काम का भुगतान बकाया था। उन्होंने आरोप लगाया कि 'दशावतारम' और 'विश्वरूपम' जैसी फिल्मों में काम करने के बावजूद अक्टूबर 2016 तक उनकी सैलरी का एक बड़ा हिस्सा नहीं मिला था। गौतमी ने ये भी आरोप लगाया कि कमल ने उन्हें दूसरे फिल्ममेकर्स के साथ काम करने से रोका, जिससे उन्हें फिल्मों में काम मिलना भी बंद हो गया। एक्ट्रेस श्रीविद्या से किया शादी का वादा, फिर क्लासिकल डांसर से हुआ अफेयर-करियर की शुरुआत में कमल हासन को उस दौर की बेहतरीन एक्ट्रेस श्रीविद्या के साथ के.बालाचंदर की फिल्म अपूर्वा रंगागल में कास्ट किया गया। ये रजनीकांत की पहली फिल्म थी, जिसमें उनका साइड रोल था। साथ काम करते हुए कमल हासन और श्रीविद्या एक-दूसरे को पसंद करने लगे। फिल्म हिट रही और इससे दोनों को स्टारडम मिला। जल्द ही दोनों की नजदीकियों की खबरें भी फैलीं। दोनों परिवारों को भी इससे आपत्ति नहीं थी, लेकिन फिर अचानक श्रीविद्या को पता चला कि कमल हासन उनके साथ-साथ एक्ट्रेस और क्लासिकल डांसर वाणी गणपति को भी डेट कर रहे हैं। कमल वाणी के साथ कुछ फिल्मों में काम कर चुके थे। अफेयर की खबर आने पर श्रीविद्या ने परिवार के दबाव पर कमल से दूरी बना ली। श्रीविद्या से अलग होने के बाद कमल ने 24 की उम्र में 1978 में 4 साल बड़ीं वाणी से शादी की। एक्ट्रेस सारिका से लिव-इन में रहे, श्रुति हासन के जन्म के बाद की शादीः-कमल और वाणी की शादी 10 साल बाद टूट गई। इसी बीच कमल, एक्ट्रेस सारिका के साथ लिव-इन में रहने लगे। इस रिश्ते से उन्हें 1986 में एक बेटी हुईं, श्रुति हासन, जो अब जानी-मानी एक्ट्रेस हैं। श्रुति के जन्म के बाद कमल ने 1988 में सारिका से शादी की। 1991 में सारिका ने दूसरी बेटी अक्षरा को जन्म दिया। 2002 में कमल-सारिका अलग हुए और 2004 में उनका आधिकारिक तौर पर तलाक हुआ। 2005 में कमल की जिंदगी में एक्ट्रेस गौतमी आईं, जिनके साथ वो 13 सालों तक लिव-इन में रहे। 2018 में गौतमी ने कमल पर पेमेंट न देने का आरोप लगाया।

हिमेश को सलमान से ज्यादा मिली थीं तालियां,आहत हुआ था भाईजान का ईगो, 'नाक से गाता है' कहकर उड़ाया था मजाक, सालों बाद सुधरे रिश्ते

मुंबई। कभी उनके गाने चार्टबस्टर होते थे, तो कभी उनकी आवाज का मजाक उड़ता था। किसी ने उन्हें नाक से गाने वाला सिंगर कहा, तो किसी ने एक्टिंग पर



सवाल उठाए। फिल्मों में असफलताओं के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। हिमेश रेशमिया ने बॉलीवुड में अपनी अलग पहचान बनाने की जिद नहीं छोड़ी। सलमान खान की फिल्मों से संगीतकार के तौर पर शुरुआत करने वाले हिमेश ने 'तेरे नाम', 'आशिक बनाया आपने' और 'झलक दिखला जा' जैसे गानों से देशभर में धूम मचाई। इसके बाद वह सिंगर बने, स्टेज शोज में लोकप्रिय हुए और फिल्मों में हीरो भी बने। इस दौरान सलमान खान से अनबन की खबरें आईं, लेकिन बाद में रिश्ते सुधरे और दोनों ने फिर साथ काम किया। आलोचनाओं और उतार-चढ़ाव के बीच उनका संगीत का सफर जारी है। 16 साल की उम्र में काम शुरू कियाः- हिमेश रेशमिया रातोरात स्टार नहीं बने। उनका जन्म 23 जुलाई 1973 को मुंबई में हुआ। उनके पिता विपिन रेशमिया भी संगीतकार थे। घर में संगीत का माहौल था, लेकिन हिमेश ने कम उम्र से ही काम शुरू कर दिया था। रेडिफ को दिए इंटरव्यू में उन्होंने बताया था कि 16 साल की उम्र में अपना पहला टेलीविजन सीरियल प्रोड्यूस किया था। उनका लक्ष्य शुरू से संगीतकार बनना था। टेलीविजन के लिए काम करते हुए उन्होंने संगीत की बारीकियां सीखीं। सीरियल 'अंदाज' के टाइटल ट्रैक से संगीतकार के तौर पर पहचान बनानी शुरू की। बॉलीवुड में जगह बनाना आसान नहीं था। उस दौर में अनु मलिक, जतिन-ललित और शंकर-एहसान-लॉय जैसे संगीतकारों का दबदबा था। हिमेश छोटे प्रोजेक्ट्स करते रहे और बड़े मौके का इंतजार करते रहे। सलमान खान की फिल्म से बॉलीवुड में एंट्री, 'तेरे नाम' ने दिलाई पहचानः- हिमेश के करियर में सलमान खान की अहम भूमिका रही। 1998 में फिल्म 'प्यार किया तो डरना क्या' से उन्हें बॉलीवुड में संगीतकार के तौर पर बड़ा मौका मिला। इसके बाद उन्होंने 'बंधन', 'हैलो ब्रदर' और 'दुल्हन हम ले जाएंगे' जैसी फिल्मों में काम किया। असली पहचान 2003 में आई सलमान खान की फिल्म 'तेरे नाम' से मिली। फिल्म के गाने युवाओं के बीच लोकप्रिय हुए। खासकर 'क्यों किसी को', 'तुमसे मिलना' और 'लगन लगी' ने उन्हें इंडस्ट्री के चर्चित संगीतकारों में शामिल कर दिया। इसके बाद उन्होंने 'हमराज', 'ऐतराज', 'मैंने प्यार क्यों किया', 'दिल मांगे मोर', 'आशिक बनाया आपने' और 'शादी से पहले' में संगीत दिया। रेडिफ



को 2006 में दिए इंटरव्यू में हिमेश ने बताया था कि छह महीने में उनके 27 गाने चार्टबस्टर हुए थे। वहीं, 2009 के इंटरव्यू में उनके लगातार 36 हिट गानों का जिक्र किया गया था। इससे उनकी लोकप्रियता का अंदाजा मिलता है। संगीतकार ने खुद गायक बनने का फैसला किया:-संगीतकार के तौर पर सफलता के बाद हिमेश ने अपनी धुनों को आवाज देने का फैसला किया। 2005 में फिल्म 'आशिक बनाया आपने' के टाइटल ट्रैक से गायक के तौर पर पहचान बनाई। रिलीज होते ही यह गाना युवाओं के बीच लोकप्रिय हो गया। इमरान हाशमी और तनुश्री दत्ता पर फिल्माए गए इस गाने ने हिमेश को लोकप्रिय सिंगर बना दिया। इसके बाद 'झलक दिखला जा', 'आशिकी में तेरी', 'तेरा सुरूर', 'जरा झूम झूम', 'शकलाका बूम बूम', 'हुक्का बार', 'तंदूरी नाइट्स' और 'नाम है तेरा' जैसे गानों से उनकी लोकप्रियता और बढ़ी। एक इंटरव्यू में हिमेश ने कहा था कि वह खुद को सबसे पहले संगीतकार मानते हैं। उनके मुताबिक, जब वह अपनी बनाई छह धुनों में से एक गाना खुद गाते हैं, तो इसमें परेशानी की क्या बात है? 'नाक से गाता है' कहकर उड़ाया मजाक, आरडी बर्मन से तुलना भी पड़ी भारीः-सिंगर बनने के बाद हिमेश को लोकप्रियता के साथ आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा। उनकी आवाज पर सबसे ज्यादा टिप्पणियां हुईं। आलोचक कहते थे कि वह नाक से गाते हैं। सोशल मीडिया के दौर से पहले ही उनकी आवाज का खूब मजाक उड़ाया जाता था। 2020 में हिंदुस्तान टाइम्स को दिए इंटरव्यू में हिमेश ने स्वीकार किया था कि शुरुआती दौर में इस आलोचना से उन्हें गुस्सा आता था। उन्होंने बताया कि 2006 में उन्हें नाक से गाने वाला कहा गया, तब वह काफी प्रभावित हुए थे। उस समय उनके लगभग हर गाने को सफलता मिल रही थी, फिर भी उनकी आवाज पर सवाल उठाए जा रहे थे। आवाज का बचाव करते हुए उन्होंने दिग्गज संगीतकार और गायक आरडी बर्मन का उदाहरण दिया था। इस पर गायिका आशा भोसले ने उनकी टिप्पणी पर नाराजगी जताई थी। बाद में हिमेश ने गलती स्वीकार कर माफी भी मांगी। आलोचनाओं का असर उनके गानों की लोकप्रियता पर नहीं पड़ा। 'आशिक बनाया आपने' के लिए उन्हें 2006 में फिल्मफेयर का बेस्ट मेल प्लेबैक सिंगर अवॉर्ड मिला। वह संगीतकार से फिल्मों में संगीत तैयार करने का अवसर दिया। एक वक्त ऐसा भी आया, जब दोनों के रिश्तों में खटास आ गई। इसकी वजह नागपुर का एक कॉन्सर्ट बताया जाता है। 2009 में मुंबई मिरर की रिपोर्ट के मुताबिक, इस कार्यक्रम में सलमान और हिमेश दोनों ने परफॉर्म किया था। दर्शकों ने सलमान के मुकाबले हिमेश का ज्यादा उत्साह से स्वागत किया। उनके लिए ज्यादा तालियां बजीं और दर्शक अधिक उत्साहित नजर आए। रिपोर्ट में दावा किया गया कि इस घटना से सलमान का ईगो आहत हुआ। इसके बाद दोनों के बीच दूरियां बढ़ीं और बातचीत बंद हो गई। रिपोर्ट के मुताबिक, सलमान कई मौकों पर हिमेश की नाक से गाने वाली आवाज का मजाक उड़ाते थे। जुलाई 2007 में टाइम्स ऑफ इंडिया को दिए इंटरव्यू में हिमेश ने नागपुर कॉन्सर्ट को लेकर दोनों के बीच मतभेद की बात स्वीकार की थी। उन्होंने विवाद की असली वजह विस्तार से नहीं बताई। यह भी कहा था कि मामला सुलझ चुका है और दोनों अपने-अपने काम में व्यस्त हैं। 'आशिक बनाया आपने' के बाद हिमेश सिंगर के तौर पर भी स्टार बन चुके थे। वह फिल्मों में अभिनेता के रूप में नई पारी शुरू करने की तैयारी कर रहे थे। इस दौरान सलमान और हिमेश के रिश्तों को लेकर कई तरह की खबरें सामने आती रहीं। 2007 में रेडिफ को दिए इंटरव्यू में सलमान ने हिमेश से नाराजगी की खबरों को खारिज किया था। वहीं, करण जौहर के शो 'कॉफी विद करण' में हिमेश ने सलमान को अपना मेंटर बताया था और उनके प्रति सम्मान और प्यार जाहिर किया था। 2009 में 'दस का दम' के सेट पर गले मिले दोनोंः-दोनों के रिश्तों में सुधार की खबर सितंबर 2009 में आई। टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित मुंबई मिरर की रिपोर्ट के मुताबिक, सलमान और हिमेश की मुलाकात आरके स्टूडियो में 'दस का दम' के सेट पर हुई थी। दोनों ने एक-दूसरे को गले लगाया और पुराने दोस्तों की तरह मिले। रिपोर्ट के मुताबिक, इस मुलाकात से दोनों के बीच की दूरियां खत्म होती नजर आईं। 'बॉडीगार्ड' से फिर साथ आए सलमान और हिमेशः- इसके बाद दोनों ने साथ काम करना शुरू किया। 2011 में रिलीज सलमान खान की फिल्म 'बॉडीगार्ड' का संगीत हिमेश ने तैयार किया। फिल्म का गाना 'तेरी मेरी' खास तौर पर लोकप्रिय हुआ। हिमेश ने एक इंटरव्यू में बताया था कि सलमान ने धुन बेहतर बनाने के लिए रचनात्मक सुझाव भी दिए थे। 2014 में 'किक' और 2015 में 'प्रेम रतन धन पायो' के संगीत से भी हिमेश सलमान के साथ जुड़े। फरवरी 2025 में पिंकविला को दिए इंटरव्यू में उन्होंने सलमान के योगदान को याद किया। बताया कि सलमान ने उन्हें करियर का पहला बड़ा मौका दिया था। उनकी वजह से वह टेलीविजन सीरियल प्रोड्यूस करने से आगे बढ़कर



बॉलीवुड में संगीतकार के तौर पर पहचान बना सके। स्टेज शोज में दिखा स्टारडम, विदेशों तक पहुंची लोकप्रियताः-हिमेश की लोकप्रियता फिल्मों तक सीमित नहीं रही। उनके गाने डांस पारिटयों, क्लबों और लाइव कॉन्सर्ट में खूब बजने लगे। खासकर 'आशिक बनाया आपने' और 'झलक दिखला जा' ने युवाओं के बीच उन्हें खास पहचान दिलाई। 2006 में वह अमेरिका और कनाडा के एक महीने लंबे कॉन्सर्ट टूर पर गए थे। रेडिफ को दिए इंटरव्यू में उन्होंने बताया था कि भारत और खाड़ी देशों के कई शहरों में पहले भी लाइव परफॉर्म कर चुके थे, लेकिन विदेशों में इतने बड़े स्तर पर परफॉर्म करना उनके लिए नई चुनौती थी। हिमेश ने कहा था कि लाइव ऑडियंस के सामने सिर्फ गाना काफी नहीं होता, अच्छा परफॉर्मर बनना भी जरूरी है। इसलिए उन्होंने स्टेज परफॉर्मेंस को गंभीरता से लिया। संगीतकार और सिंगर के बाद हीरो बनने की कोशिश, 2007 में किया डेब्यूः- संगीत और गायकी में सफलता के बाद हिमेश ने 2007 में एक और जोखिम लिया। उन्होंने फिल्म 'आपका सुरूरः द रियल लव स्टोरी' से अभिनेता के तौर पर शुरुआत की। फिल्म में उन्होंने अपना काल्पनिक रूप परदे पर पेश किया। फिल्म का निर्देशन उनके बचपन के दोस्त प्रशांत चड्ढा ने किया था। इसे बॉक्स ऑफिस पर अच्छी प्रतिक्रिया मिली। इसके बाद हिमेश को लगा कि दर्शक उन्हें अभिनेता के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। उनकी अगली फिल्म 'कर्ज्ज' बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही। यह ऋषि कपूर की 1980 में आई सुपरहिट फिल्म 'कर्ज' का रीमेक थी। 'रेडियो', 'कजरारे' और 'दमादम' से भी उन्हें उम्मीद के मुताबिक सफलता नहीं मिली। एक इंटरव्यू में हिमेश ने स्वीकार किया था कि फिल्मों में अभिनय के दौरान वह उतनी मेहनत और समरपण नहीं दे पाए, जितना संगीत के लिए देते थे। उन्होंने माना कि शुरुआत में एक साथ कई फिल्में कीं और कुछ प्रोजेक्ट्स में पैसे के लिए काम किया। बाद में उन्हें गलती का अहसास हुआ। 'द एक्सपोज' से मिली पहचान, लेकिन एक्टर के तौर पर मजबूत मुकाम नहीं बना पाएः-अभिनेता के तौर पर हिमेश की चर्चित फिल्मों में 'खिलाड़ी 786', 'द एक्सपोज' और 'तेरा सुरूर' शामिल हैं। 2014 में रिलीज हुई 'द एक्सपोज' में उनके अभिनय की चर्चा हुई और उन्हें पहचान मिली, लेकिन फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही। 2012 में आई 'खिलाड़ी 786' में उन्होंने अक्षय कुमार के साथ काम किया था। हिमेश ने फिल्म में अभिनय के साथ संगीत भी दिया। बॉक्स ऑफिस इंडिया के मुताबिक, फिल्म का बॉक्स ऑफिस प्रदर्शन औसत रहा। 'आपका सुरूर' उनके अभिनय करियर की सबसे सफल फिल्मों में गिनी जाती है। बॉलीवुड हंगामा के बॉक्स ऑफिस आंकड़ों के मुताबिक, यह सेमी-हिट रही। इसके बाद उनकी ज्यादातर सोलो फिल्में सफल नहीं हुईं। 2020 की फिल्म 'हैप्पी हार्डी एंड हीर' में वह पहली बार डबल रोल में नजर आए। उन्होंने हार्डी और हैरी, दोनों किरदार निभाए थे। प्रमोशन के दौरान उन्होंने कहा था कि अभिनय में उन्हें ऐसी बड़ी सफलता की तलाश है, जो दर्शकों के बीच उनकी अलग पहचान बना सके। हिमेश का अभिनय करियर संगीत और गायकी जितना सफल नहीं रहा। उन्होंने अभिनय छोड़ने के बजाय खुद को नए अंदाज में पेश करने की कोशिश जारी रखी। संगीत की दुनिया में वापसी, अब बड़े प्रोजेक्ट्स पर दांवः-एक दौर में हिमेश का ज्यादा ध्यान अभिनय पर चला गया। 2009 में रेडिफ को दिए इंटरव्यू के मुताबिक, वह तब तक करीब 100 फिल्मों में संगीत दे चुके थे और उनके 500 गाने रिकॉर्ड हो चुके थे। उनके प्रशंसक चाहते थे कि वह दोबारा संगीतकार के तौर पर सक्रिय हों। बाद के वर्षों में उन्होंने संगीत को प्राथमिकता दी। 'प्रेम रतन धन पायो' के संगीत से अपनी धुनों की ताकत दिखाई। फिल्म के गाने 'प्रेम रतन धन पायो', 'जलते दिए' और 'आज उनसे मिलना है' पसंद किए गए। 2025 में रिलीज हुई 'बैडएस रविकुमार' में उन्होंने अभिनय, संगीत और गायकी की जिम्मेदारी संभाली। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही, लेकिन इसके गानों और हिमेश के पुराने अंदाज की चर्चा हुई। 2026 में हिमेश रेशमिया के पास कई बड़े संगीत प्रोजेक्ट हैं। इनमें तीन फिल्में चर्चा में हैं, जिनसे फिल्मी संगीत में उनकी वापसी के संकेत मिल रहे हैं। सूरज बड़जात्या की फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' में आयुष्मान खुराना और शरवरी वाघ मुख्य भूमिकाओं में हैं। हिमेश ने इसका संगीत तैयार किया है। फिल्म 27 नवंबर 2026 को रिलीज होगी।इमरान हाशमी, जेनेलिया देशमुख और अपारशक्ति खुराना अभिनीत 'गनमास्टर जी9' का संगीत भी हिमेश ने दिया है। यह फिल्म भी 27 नवंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। विक्रम भट्ट की हॉरर फिल्म '1920: कोल्ड विंटर' के लिए भी हिमेश संगीत तैयार कर रहे हैं। इस प्रोजेक्ट से वह करीब 13 साल बाद विक्रम भट्ट के साथ काम करेंगे। अनिल शर्मा की फिल्म 'अर्जुन नागा' का भी संगीत हिमेश दे रहे हैं। इन प्रोजेक्ट्स से साफ है कि हिमेश रेशमिया फिल्मी संगीत में अपनी मौजूदगी मजबूत करने की तैयारी में हैं।

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए कालोनी नैनी प्रयागराज 211008 (उ.प्र.)
से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।